कीचक-वध

अनुवादक

श्री भवानीप्रसाद तिवारी

कीचक-वध

लेखक

श्री कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर

अनुवादक

श्री भवानीप्रसाद तिवारी

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय द्वारा मध्यप्रदेश
शासन साहित्य परिषद् के लिए प्रकाशित
१९५६

मुद्रक
नूतन प्रिंटिंग प्रेस
ग्वालियर (म. प्र.)

प्रस्तावना

प्रस्तुत प्रकाशन श्री कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर कृत मराठी भाषा के प्रसिद्ध नाटक 'कीचक-वध' का हिन्दी के सुविज्ञ साहित्यकार श्री भवानीप्रसाद तिवारी द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद है, जिसे मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् ने अपनी साहित्यानुवाद योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत किया है। इस परिषद् की स्थापना सन् १९५४ में तत्कालीन मध्यप्रदेश शासन द्वारा इस उद्देश्य से की गई थी कि प्रदेश की भाषाओं के विकास के लिए उनमें उच्च कोटि के साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के हेतु प्रति वर्ष परिषद् की ओर से निर्दिष्ट विषयों पर उत्कृष्ट मौलिक रचनाओं तथा अनूदित ग्रन्थों के लिए पुरस्कार दिए जाते हैं, निबंध-प्रतियोगिताएँ की जाती हैं तथा विभिन्न विषयों पर श्रेष्ठ विद्वानों की भाषण-मालाएँ आयोजित की जाती हैं।

नवम्बर, १९५६ से उक्त परिषद् दो भागों— महाकोशल शासन साहित्य परिषद् तथा विदर्भ शासन साहित्य परिषद्— में विभक्त हुई और अपने-अपने क्षेत्र में क्रमशः हिन्दी तथा मराठी भाषा के विकास में योगदान देने का दायित्व उन पर आया है। महाकोशल शासन साहित्य परिषद् ने अब समस्त नवीन मध्यप्रदेश को अपना कार्य-क्षेत्र मान्य कर लिया है और वह मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् के रूप में साहित्य की सेवा करने में अग्रसर हो रही है।

परिषद् का विश्वास है कि मराठी के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा बहुचर्चित नाटक के, अधिकारी विद्वान द्वारा किए गए इस हिन्दी रूपान्तर का साहित्य-प्रेमी स्वागत करेंगे।

मध्यप्रदेश के सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय को शासन साहित्य परिषद् ने जिन पुस्तकों का प्रकाशन-कार्य सौंपा है, 'कीचक-वध' उन्हीं में से एक है।

भोपाल
२६ फरवरी, १९५९

एल० सी० गुप्ता,
सचिव
मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्

प्रथम अंक

दृश्य पहला

स्थान—राजभवन का प्रमुख द्वार

[सौदामिनी और सैरन्ध्री का प्रवेश]

सौदामिनी

सखी सैरन्ध्री, हस्तिनापुर या इन्द्रप्रस्थ में तूने कभी आज जैसी धूम-धाम देखी थी ? और मेरी यह मत्स्यपुरी तो बस मत्स्यपुरी ही है। अच्छा, भला बता तो, तेरा हस्तिनापुर मेरी मत्स्यपुरी के चतुर्थांश की न सही, अष्टमांश की भी बराबरी कर सकता है ? कर चुका बराबरी ! मैंने भी बहुत से नगर देखे हैं। यहां की एक गली को तो पा लें। और तू कहती है कि हस्तिनापुर मत्स्यपुरी जितना ही है !

सैरन्ध्री

अरी सौदामिनी, तू किसी दूसरे को भी बोलने देगी कि लगातार अपनी ही चकरी चलाती जावेगी ?

सौदामिनी

मैं कहती हूं, अच्छा, होगा तेरा इन्द्रप्रस्थ मत्स्यपुरी के बराबर। अच्छा, दुगना होगा। चौगुना, अठगुना, सोलहगुना होगा ! अब तो तुझे कोई आपत्ति नहीं है ? पर मैं पूछती हूं कि मेरी इस नगरी में रहनेवाले पुरुषों के मुखों पर जो मोहिनी है, ऐसे सुन्दर पुरुष क्या तेरे हस्तिनापुर में दिखाई भी पड़ सकते हैं ?

सैरन्ध्री

सौदामिनी, तू जो तनिक धीरे बोले, तो क्या तेरा कुछ बिगड़ जायेगा ? अरी,

तनिक धीरे। कोई सुन लेगा तो ? नारियों को पुरुषों के रूप की चर्चा नहीं करना चाहिये। वैसे उनके गुणों का बखान ठीक है।

सौदामिनी

हम दासियों को पुरुषों के गुणों से क्या मतलब ? तू मेरे सामने डोकरी-पुराण मत बघार ! अच्छा बता, जो तू रोज वल्लभ पंडित से अकेले में बातें करती है, तो क्या इसलिए करती है कि वह भोजन अच्छा बनाता है ? या इसलिए करती है कि प्रतिदिन कसरत करने और भोजन-गृह का माल चरने से उसके शरीर पर मछलियाँ उछल आई हैं ? क्यों सैरन्ध्री ? अब चुप क्यों हो रही है ? अरी, नाराज न हो। सुन तो। क्या पुरुष नारियों के रूप का बखान नहीं करते ? दो चार रँगीले यदि गपशप को बैठ गये, तो समझो कि बस, उन्हींकी स्त्रियाँ तो पतिव्रता हैं, और जो बचीं, उनमें कौन क्या पहिनती है, कौन कैसे चलती है, कौन कैसे बोलती है, कौन कैसे हँसती है, क्या यही चर्चा नहीं होती ?

सैरन्ध्री

अरी, तू क्या कहती है ? सभ्य स्त्रियों को क्या इन रँगीलों का अनुकरण करना चाहिये ?

सौदामिनी

नहीं तो क्या हम दासियों को रानी के समान वर्तन करना चाहिये। गम्भीरता-पूर्वक उठना चाहिये, बैठना चाहिये, बोलना चाहिये ? वैसे मैं ऐसा करने भी लगूँ, पर सच बताऊँ, जब तक स्वयं महारानी न हो जाऊँ, तब तक मुझसे कोरी शान बघारते नहीं बनती, जैसा कि तू कर लेती है। और आज, जैसा यह सुन्दर पुरुषों का मेला भरा है न, उसे देखकर तो मेरी जीभ बोलने को मचल-मचल उठती है। जब मत्स्य नगरी के सभी सुन्दर पुरुष, सुन्दरियों को मोहने के लिए बने-ठने घूम-फिर रहे हैं और गलियों में अपने रूप की मोहिनी बिखेरते चल रहे हैं, तब बताओ मैं चुप रहूँ ? आज तो गली-कूचों में ये रँगीले जहाँ-तहाँ सहज दिखाई देंगे ही, क्योंकि आज परम सुन्दर महाराजा कीचक ठाटबाट के साथ राजभवन में प्रवेश करेंगे। अरी सैरन्ध्री, क्या तूने अभी तक महाराजा कीचक के दर्शन नहीं किये ?

सैरन्ध्री

महारानी ने जब मुझे नौकरी दी, उसके पहले ही वे यहाँ से चले गये थे।

सौदामिनी

नौकरी करते तुझे अभी दस ही महीने हुए हैं न ? और महाराजा कीचक उसके पहले ही हस्तिनापुर चले गये थे। ठीक है। वहाँ कौरवेश्वर ने आग्रहपूर्वक उन्हें अतिथि बनाकर रखा और महारानी कह रही थीं कि हस्तिनापुर में महाराजा कीचक की अपार जय-जयकार हुई। कौरवेश्वर सुयोधन से गाढ़ी मित्रता करके महाराजा कीचक आज लौट रहे हैं। इसीलिए, आज जैसे यह मत्स्यपुरी उल्लास से हँस रही है। जैसे सजधजकर नाच रही है। सैरन्ध्री, मैं इतनी देर से देख रही हूँ कि तेरे चेहरे का रंग फीका क्यों पड़ गया है ?

सैरन्ध्री

किसी की आरती करना या नजर उतारना मुझे अच्छा नहीं लगता। मैंने तो महारानी से विनय की थी कि आज के उत्सव में प्रमुख द्वार पर मुझे कोई काम न दिया जाय। महारानी ने मेरी विनय स्वीकार भी कर ली थी, पर सखी, उनका आदेश फिर क्यों बदल गया कौन जाने ?

सौदामिनी

अरी वाह ! मैंने ही तो जानबूझकर महारानी से यह बात कही कि सैरन्ध्री को मेरे साथ रखिये। क्या तुझे मालूम नहीं है कि महाराजा कीचक तेरे उस वल्लभ पंडित या कंकभट्ट से सौगुने क्या, सहस्र गुने अधिक सुन्दर हैं ? मदन का ऐसा अवतार तो संसार में ढूंढ़े न मिलेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है। यदि आज उनकी आरती करने हम आगे न जावें, उनकी नजर उतारने सामने न आवें, तो उस सौन्दर्य-राशि के इतने समीप जाने का अवसर और कब मिलेगा ? इसलिये मैंने तुझ पर उपकार ही किया है। वे सब की सब, मन्दहासिनी और शशिमुखी, कमला और चपला, मुझे कोस रही हैं।

सैरन्ध्री

क्यों सखि ?

सौदामिनी

इसलिए, कि मैंने उन्हें पीछे कर दिया और तुझे आगे कर दिया।

सैरन्ध्री

सच कहूँ तो सखि, मुझ पर तूने यह उपकार न किया होता, तो अच्छा होता।

सौदामिनी

महाराजा कीचक को तूने जब तक देखा नहीं है, तब तक ही ऐसी बकवास कर रही है। एक बार उस मोहिनी मूर्ति के दर्शन हो गए, तो मेरा यह उपकार जीवन भर न भूलेगी। अरी पगली, समीप से महाराजा कीचक को जो भर-आँखों देख लिया, तो ऐसा लगता है कि जीवन सार्थक हो गया।

[मन्दहासिनी का प्रवेश]

मन्दहासिनी

सखी सौदामिनी, महारानी आ रही हैं। साथ में रानी रत्नप्रभा भी हैं। आरती की सब तैयारी ठीक है न ?

सौदामिनी

बड़ी आई मेरे काम की देखरेख करने वाली ! मेरे पास आने को तुझसे किसने कहा था ? महारानी आ जावें, तब तू उनके साथ-साथ चली आना। लोगों को अभी से अपना मुखड़ा दिखाने की आवश्यकता नहीं है। जा, उस ओर जाकर बैठ जा। महाराजा कीचक के आगमन के समय वहाँ महारानी परदे में बैठेंगी। अपनी मनहूस सवारी वहीं ले जा।

मन्दहासिनी

मुझसे तो महारानी ने स्वयं कहा था कि आगे जाकर तैयारी देख लो। तो मैं आई। नहीं तो तुझसे मेरी क्या अड़ी है ? कौन मूसल बदलना है।

सौदामिनी

अच्छा तो देख ले, सब तैयारी देख ले। अच्छी तरह से देख ले। ये कलश देख, कलश पर की चित्रकारी देख, आम के घौर उठाकर देख कि कलश में मुँह तक पानी भरा है कि नहीं ? प्रमुख द्वार पर लटकते तोरणों की देखभाल कर ले। और ये बन्दनवार भी न भूलना। फिर महाराजा कीचक की आरती उतारने के लिए नियत स्थान पर हम दोनों जीती-जागती खड़ी हैं। अच्छी तरह से आँखें फाड़कर देख। हो गया संतोष ? है न सब तैयारी ? अच्छा, अब जा-जा। एँ !

[मन्दहासिनी जाने लगती है]

सैरन्ध्री

सुन मन्दहासिनी। यदि तेरा आरती करने का मन है, तो आ जा, यहाँ खड़ी हो जा। मैं महारानी के पास जाती हूँ।

सौदामिनी

बड़ी आई, चल अपना काम देख। तेरी तो लार टपकी पड़ रही है। पर, बात जब मुझे पटे तब न ?

[मन्दहासिनी चली जाती है]

सौदामिनी

सखी सैरन्ध्री, यह मन्दहासिनी है तो इतनी कुरूपा, तो भी लोगों के आगे आगे होने का इसका मन कैसे होता है ? सूरत चुड़ैल की और ठाट इन्दर-सभा के !

सैरन्ध्री

पर, मेरे स्थान पर वही हो जाती, तो तेरा क्या बिगड़ जाता ?

सौदामिनी

मैं कभी उसको अपने साथ नहीं लूँगी। दो-तीन बार वह मेरे साथ मंदिर गई थी। और मैं तुझसे क्या बताऊँ ? इतनी भीड़ में किसी एक भी मुए मर्द ने मेरी ओर

घूमकर तो देखा होता, पर उसका खपरी-सा चेहरा देखकर, तेरी सौगन्ध, किसी एक रंगीले ने मेरी ओर आँख तक नहीं उठाई। पर, जब तू साथ होती है, और चाहे मैं अकेली ही रहूँ, तब निर्लज्जों की तो बात छोड़......अरी, उस ओर तो देख, वह जो महान् विद्वान् है, वह जो अत्यन्त प्रतिष्ठावान है, और वह जो धर्म का आचार्य कहलाता है, कैसे मुड़-मुड़कर इधर देख रहा है! गीध की दृष्टि जैसे माँस के लोथड़े पर होती है, वैसे ही ये मुए.. ...अरी सखी, महारानी की सवारी आ गई है। नीरांजन जला ले।

[सुदेष्णा, रत्नप्रभा, मन्दहासिनी का प्रवेश]

सुदेष्णा

क्यों सौदामिनी? ओ सैरन्ध्री? नीरांजन प्रज्ज्वलित कर ली है न? आरती की सब तैयारी ठीक है न?

सौदामिनी

हाँ महारानी जी। सब तैयारियाँ करके हम महाराज कीचक की राह देख रहे हैं।

सुदेष्णा

दादा बस अभी पहुँचते ही हैं। वह सुन, भृङ्गी वाद्य बज रहा है। सवारी समीप आ पहुँची है।

मन्दहासिनी

हाँ महारानीजी, वह देखिए, महाराजाधिराज विराट और महाराजा कीचक अम्बारी से उतरकर गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। अभी यहीं से होकर निकलेंगे और राजभवन की ओर जायेंगे।

सौदामिनी

[सैरन्ध्री से एकान्त में]

यह कंजड़िया ठीक समय पर कैसी आगे हो गई है। महाराजा कीचक को सबसे पहले उसीने देखा। क्या तुझे दिखाई दिए?

सुदेष्णा

अरी मन्दहासिनी, रानी रत्नप्रभा कहां हैं ?

मन्दहासिनी

यहीं तो हैं महारानी जी।

सुदेष्णा

अरी भाभी, यों पीछे क्यों खड़ी हो ? दादा के दर्शन के लिए कितने दिनों से उत्सुक थीं और जब वे महाराजा की उपाधि लेकर समीप ही आ रहे हैं, तब तुम्हारे पैर नहीं उठ रहे। भाभी, यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि महाराजा कीचक पर फूल बरसाने और जय-जयकार करने में उनकी ही पत्नी को लज्जा आये !

रत्नप्रभा

क्या बताऊँ ननदी जी, ऐसे आनन्द के अवसर पर मेरा हृदय न जाने क्यों धड़क रहा है। जय-जयकार करके मैं उन पर फूल तो उछालूं, परन्तु उन्होंने यदि मेरी ओर न देखा तो ?

सुदेष्णा

चुप भाभी, चुप। मन में निरर्थक शंका क्यों उठा रही हो ?

[पास खींच कर]

यह सच है कि दादा आठ नौ माह हस्तिनापुर रहे, पर पगली, उनका प्रेम अपनी पटरानी के प्रति क्या कभी कम होनेवाला है ?

रत्नप्रभा

सुना है कि हस्तिनापुर की नारियाँ अत्यन्त रूपवती हैं ?

सुदेष्णा

मेरे दादा के समान रूपवान पुरुष संसार में मिलना असम्भव है और भाभी, तुम्हारे जैसी सुन्दर नारी भी मिल पाना सम्भव नहीं।

रत्नप्रभा

ननदी जी, व्यर्थ ही तुम हमारी हँसी क्यों उड़ा रही हो ?

सौदामिनी

ठीक तो है महारानी जी । कहते हैं उत्तर प्रदेश की नारियाँ, सुन्दरियाँ होती हैं । मेरी माँ भी वहीं की थी ।

मन्दहासिनी

ओ हो ! तभी तो तू चन्द्रकला-सी रूपमती उत्पन्न हुई है न ?

सौदामिनी

तू चुप रह छिछोरी । मै, महारानीजी, आपसे सच कहूं, उत्तर प्रदेश के सारे पुरुष रूपहीन होते हैं । आकर्षण का तो उनमें नाम ही नहीं । दक्षिण प्रदेश को कुरूप कहकर चाहे जितनी नाक भौं सिकोड़ी जाय, पर यहाँ के पुरुषों में कैसी मोहिनी होती है ? महाराज कीचक ने जो सभी के हौसले पस्त कर दिये हैं, तो उसका कुछ अर्थ तो है ही । हाथ कंगन को आरसी क्या ? देख लीजिये न । महारानी द्रौपदी की दासी, यह सैरन्ध्री, कैसी तारिका के समान झिलमिल करती है ! दूसरी ओर वह वल्लभ पण्डित या कंकभट्ट ! मुओं के तेजहीन मुखों की ओर देखा तक नहीं जाता ।

सैरन्ध्री

सखी सौदामिनी, बिजली यदि कभी-कभी चमके, तो अच्छी लगती है, परन्तु वही यदि लगातार चौंधियाती रहे, तो उसीसे लोग भयभीत होकर मुँह फेर लेते हैं ।

रत्नप्रभा

सचमुच ननदी जी, आपकी यह नई दासी अत्यन्त रूपवती तो है ही, पर उसकी बोली भी मीठी और छू देनेवाली है । यदि हस्तिनापुर की सभी नारियाँ ऐसी ही हुईं, तो मत्स्यदेश की स्त्रियों को चाहिए कि वे अपने पतियों को, उनकी ओर झाँकने तक न दें ।

[नेपथ्य में शृङ्गी वाद्य सुनाई पड़ता है। महाराजा कीचक की जयध्वनि होती है। छत्रधारी विराट और कीचक, कंकभट्ट, मैत्रेय आदि प्रवेश करते हैं। कीचक की दोनों ओर दो तरुणियां चंवर डुला रही हैं। जन-समुदाय कीचक पर गुलाल और फूल उछालता है, जय-जयकार करता है]

विराट

देखिए महाराजा कीचक, आपके आगमन से मत्स्यपुरी पुलक उठी है। आपकी स्नेहमयी बहिन आंखों में आपके दर्शनों की लालसा लिए खड़ी है। समीप ही मेरी बहिन रत्नप्रभा अर्थात् आपकी रानी भी हैं। उनसे कुशलता के दो-चार शब्द कहकर राजभवन में प्रवेश करना चाहिए।

कीचक

बहिन मेरी, तुम लोगों का स्वागत का उत्साह देखकर मेरा मन आनन्द से गद्गद है। वैसे हस्तिनापुर में मेरा स्वागत बड़े ठाट-बाट से हुआ। और यह सच है कि कौरवेश्वर सुयोधन ने मेरा अतिशय सम्मान किया। पर, आज के समान आनन्द की अनुभूति मुझे उस समय नहीं हुई, क्योंकि स्नेहीजनों की बात ही कुछ और है। सब लोग कुशल से तो हैं न?

सुदेष्णा

यह तो स्वाभाविक ही है दादा कि आप हस्तिनापुर की सत्ता से सम्मानित होकर आये, तो मत्स्यपुरी प्रसन्नता से नाच उठी। हम लोग तो उत्सुक हैं कि कौरवेश्वर द्वारा किये गये आपके स्वागत-सत्कार का सारा ठाट तुरन्त ही सुन डालें। भाभी रत्नप्रभा भी आपके श्रीमुख से सारा हाल सुनने के लिए बेचैन हैं। इसलिए कहती हूँ—अब चलिए। राजभवन में प्रवेश करने में विलम्ब न हो।

कीचक

हाँ, हाँ बहिन! महाराजाधिराज विराट के दरबार में तनिक कौरवेश्वर का संदेश कह आऊँ। फिर तो सब हाल-चाल मुझे स्वयं कहना ही है। वैसे मेरी यह वेश-भूषा देखकर अभी ही सबकी समझ में आ जावेगा कि सार्वभौम कौरवेश्वर ने मुझे कितना महान् सम्मान दिया। तुम सभी को ज्ञात तो है कि भारतेश्वर सुयोधन ने मुझे मत्स्यदेश के महाराजा की उपाधि प्रदान की है और राजा विराट को

महाराजाधिराज की नई पदवी दी है। महाराजाधिराज के आधीनस्थ ही, महाराजा के पद से मैं अपने पूर्व उत्तरदायित्व का निर्वाह करूँगा। परन्तु बहिन, सुनो, और आप भी सुनिये मत्स्येश्वर—महाराजाधिराज विराट, मैं आपसे कहता हूँ कि अपनी महाराजा की उपाधि द्वारा मैं अपने आपको इतना सम्मानित नहीं समझता, जितना कि इस विशिष्ट वेश-भूषा से। मैं तो यह समझता हूँ कि कौरवेश्वर ने जो मुझे ये विशेष अलंकार प्रदान किये हैं, उन्हींसे मेरा सच्चा सम्मान हुआ। और यह छत्र तो देखो। सार्वभौम सुयोधन ने इसे उपाधि-दान के समय भेंट किया है। ज्ञात है, यह छत्र पहले किसके पास था ? और इस पर किसका यशोवर्णन अंकित है ? अरे मैत्रेय ! तनिक इस छत्र पर लिखे अक्षरों को पढ़कर तो बताओ कि यह किसका है ?

मैत्रेय

छत्र पर और किसके अंक लिखे होंगे ? जिस दर्जी ने उसकी सिलाई की होगी, उसी किमी अमुक या तमुक का नाम दो-चार अक्षरों में टँका होगा ! या जिस चित्रकार ने चित्र बनाये हैं, वह बेचारा किसी चित्र में बनी श्रीमती के पद-तलों में छुपा बैठा लातें खाता होगा !

कीचक

अरे भाई मैत्रेय ! तू राजनीति बिलकुल नहीं समझता।

मैत्रेय

वह नीरस विषय मैंने कंकभट्ट को सौंप दिया है। वैसे पहले सारी राजनीति का भार मुझ पर ही था।

कीचक

फिर अब क्या हो गया ?

मैत्रय

यह कंकभट्ट युधिष्ठिर महाराज के दरबार से आया है न ! इसलिए जुए का और राजनीति का खेल मैंने इसे सौंप दिया है। राजाधिराज युधिष्ठिर के समान ही यह राजनीति में भी चतुर है और जुए में भी।

कीचक

तब तो यह युधिष्ठिर के समान ही अपनी स्त्री और सम्पत्ति जुए में हार जायेगा और अपने भाइयों को साथ लेकर दुःख की खाई में डूब जायेगा।

मैत्रेय

उसका भाई-वाई कोई नहीं है जी। पद के नाते यहां मैं ही उसका भाई हूँ। सो भी सँभला हुआ रहता हूँ। दूर ही दूर—और सम्पत्ति के नाम पर उसके पास एक फूटा लोटा था। अब अवश्य जुए में जीत-जातकर दो-चार पैसे गठिया लिए हैं। वैसे बड़ा चतुर है पट्ठा ! रही स्त्री ? तो ब्याही-वरी तो कोई दिखाई नहीं देती। पर, जो पैसे जुए में जीतता है, वे कौन जाने कहाँ चले जाते हैं।

कीचक

जब तुम युधिष्ठिर के पास थे, तब यह छत्र किसका था ?

कंकभट्ट

मुझे लगता तो है कि यह छत्र मैंने इन्द्रप्रस्थ में कहीं देखा है।

कीचक

अरे, जरा ठीक से देखकर पहचानो।

कंकभट्ट

युधिष्ठिर महाराज का था।

कीचक

क्या पिनपिनी आवाज से बोल रहे हो ! जानते नहीं हो, यह छत्र मुझे मिला है ? और इसलिए मत्स्यपुरी के प्रत्येक व्यक्ति को आनन्द होना ही चाहिये।

मैत्रेय

बात यों है कि यह कंकभट्ट, युधिष्ठिर महाराज का जुए का तो हिस्सेदार था, पर छत्र का हिस्सेदार नहीं हुआ, इसलिए दुखी है, बेचारा !

कीचक

सुनिये मत्स्येश्वर महाराजाधिराज विराट, ये आभूषण प्रदान करने के पूर्व सार्वभौम भारतेश्वर ने मेरी धनुर्विद्या के अलौकिक कौशल के दर्शन किये और अत्यन्त प्रसन्न हुए। यदि मैं बचपन से ही हस्तिनापुर में रहा होता, तो शकुनि मामा को जुए के खेल में अपना चातुर्य प्रदर्शित करने का कष्ट न करना पड़ता। मेरे गदा-प्रहार से भीम की जंघा कब की टूट गई होती। मैं यदि द्रौपदी स्वयंवर के अवसर पर उपस्थित होता, तो मेरा ही बाण मत्स्य-भेद करता और द्रौपदी मेरी ही पटरानी होती। सार्वभौम सुयोधन ने इस बात पर बड़ा खेद प्रगट किया कि उक्त प्रसंगों पर मैं उपस्थित न था। उन्होंने दुःख भरे अश्रु टपकाते हुए कहा कि अब जो हो गया सो हो गया।

विराट

आपका पराक्रम सचमुच में ऐसा ही है, महाराजा कीचक।

सुदेष्णा

हाँ दादा। यदि आप हस्तिनापुर में होते, तो द्रौपदी के जीवन में पाँच पति वरण करने का अवसर ही न आता।

रत्नप्रभा

पाँचों पाण्डवों के गुण इन्हीं में सिमटकर तो एक हो रहे हैं। इसे मेरा सौभाग्य ही कहना चाहिए कि ये द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित न थे।

कीचक

मैं जो उपस्थित होता, तो द्रौपदी को तुम्हारी दासी बनाकर तुम्हारे महल में रखता। और अभी भी मैं प्रतिज्ञापूर्वक घोषित करता हूँ कि कुछ दिनों में ज्यों ही कौरवों और पाण्डवों के युद्ध का अवसर आया, तो रण-क्षेत्र में भीष्म, द्रोण अथवा कर्ण की अपेक्षा, मैं ही अधिक पराक्रम प्रदर्शित करूँगा। मेरी गदा से जब भीम के सौ टुकड़े हो जाएँगे, मेरे बाण से जब अर्जुन निष्प्राण हो जाएगा, तब मैं युधिष्ठिर की चोटी पकड़कर, उसके मस्तक को अपने चरणों में झुकवाऊँगा। फिर, कृपा कर उसे जीवन-दान दूँगा और दरिद्र भिखारी के कपड़े पहनाकर उसे तप करने

के लिए वन की ओर भेज दूंगा। नकुल और सहदेव को, इन दोनों छोकरों को स्त्रियों के कपड़े पहनवाऊँगा और यदि उन्होंने इन तरुणियों के समान चँवर डुलाना स्वीकार कर लिया, तो उन्हें अभय-दान दे दूंगा। इस प्रकार की अद्भुत वीरता प्रदर्शित करने के लिए मैं भारतेश्वर से वचनबद्ध हूँ। और राजाधिराज सुयोधन ने भी यह आश्वासन दिया है कि तब वे पाण्डव-वधू द्रौपदी को और युद्ध में विजित दासियों को मुझे भेंट कर देंगे। इसलिए हे बहिन, अपनी भाभी से कह दो कि वह प्रसंग शीघ्र आ रहा है, जबकि द्रौपदी उसकी दासी बनेगी ही।

मैत्रेय

यह तो सर्वथा अनुचित है, क्योंकि रानी रत्नप्रभा से द्रौपदी अधिक सुन्दरी है।

रत्नप्रभा

पर, ऐसा अवसर ही क्यों आवे कि रानी दासी बने, और दासी रानी बने ?

कीचक

जो पटरानी है, वह तो पटरानी ही रहेगी। परन्तु, शेष घटनाएँ अवश्य घटें, मेरे सारे प्रयत्न इसी ओर होंगे। गदा-युद्ध में जब भीम मृतप्राय होकर धराशायी होगा। तब अपने वाम-चरण के अंगूठे से उसका गला दबाकर मैं उसके प्राण ले लूंगा। यह प्रतिज्ञा मुझे याद रहे, इसलिए कौरवेश्वर ने मेरे इस जूते पर 'भीम' लिख दिया है। मेरे बाणों के प्रहार से जब अर्जुन रथ के नीचे आ पड़ेगा, तब उसके मस्तक पर मुझे अपने दक्षिण चरण रखना है, इसलिए दाहिने पैर के जूते के तले 'अर्जुन' डटे हैं। सुदेष्णा, तू अपनी भाभी से कह दे कि मन में ईर्ष्या न करे। द्रौपदी स्वयंवर के समय विवाह-प्रसंग में जब पांडव रूठे थे, तब राजा द्रुपद ने हीरे के नग पर 'द्रौपदी-पति' अङ्कित कर, पांच अंगूठियाँ उन्हें उपहार में दी थीं। जुए के खेल में वे अंगूठियाँ शक्तिशाली सुयोधन की हो गईं। भावी युद्ध में विजय प्राप्त कर मैं अकेला ही द्रौपदी पति होनेवाला हूं। इसलिये कौरवेश्वर ने वे पंचाक्षर अंकित अंगूठियाँ इस वीर और सौभाग्यशाली के पराक्रमी हाथों की पाँचों अंगुलियों में पहना दीं। तद्नन्तर भरे दरबार में 'द्रौपदी-पति,' 'द्रौपदी-पति' कहकर मेरा जय-जयकार किया।

[चँवरधारिणी दासी, 'द्रौपदी-पति महाराजा कीचक की जय' बोलती है]

सुनिये महाराजाधिराज विराट, और तू भी सुन सुदेष्णा, यह जो चँवरधारिणी दासी है, वह कौरवेश्वर द्वारा मुझे भेंट की गई है। और उसे आदेश है कि वह

'द्रौपदी-पति' कहकर ही मेरा जय-जयकार करे, जिससे कि मुझे पांडवों पर विजय प्राप्त करने का स्मरण बना रहे।

[दासियाँ जय-जयकार करती हैं। सैरन्ध्री को छोड़कर अन्य सभी पुष्प-वर्षा करती हैं]

सुदेष्णा

अरी सैरन्ध्री, ओ सौदामिनी, अब आरती करो और नजर उतारो। यहाँ हम लोग कब तक खड़े रहें ?

[सौदामिनी आरती करती है और नजर उतारती है। सैरन्ध्री अपने काँपते हुए हाथों में सामग्री लिए जैसी की तैसी खड़ी रहती है]

कीचक

अच्छा सुदेष्णा ! अर्थ यह कि अपने सौन्दर्य से हस्तिनापुर की दासियों को लज्जित करनेवाली दासियाँ तुम्हारे यहाँ भी हैं। वैसे तो राजाधिराज सुयोधन के राज्य-मन्दिर में जब मैं पहली बार प्रवेश कर रहा था, एक सहस्र तरुण सुन्दरियाँ आरती लिए दोनों ओर खड़ी थीं। कौरवेश्वर ने मुझसे निवेदन किया कि उनमें से जो दासियाँ मेरे मन भावें, उन्हें मैं मत्स्यदेश लेता जाऊँ। भारतेश्वर की बात रखने के लिए गांधार देश से अभी आये हुए ये दो रत्न अपने रंगमहल की शोभा बढ़ाने के लिए अपने साथ ही लेता आया हूँ। कुछ दिनों में राजेश्वर सुयोधन पांडवों की खोज में मत्स्यदेश आनेवाले हैं। इन रत्नों के बदले राजेश्वर को मैं क्या दूँगा ? अपने यहाँ तो वैसी एक भी दासी नहीं है। अभी तक मैं इसी उलझन में था। परन्तु, बहिन मेरी, अपने रूप से ज्योतिशिखाओं को लज्जित करनेवाली तुम्हारी इस सैरन्ध्री को देखकर मेरी सारी उलझन सुलझ गई। यदि इसे, मुझे सौंप देने में तुझे कोई आपत्ति न हो—और हाँ—महाराजाधिराज विराट, आपके रंगमहल के आमोद-प्रमोद में कोई बाधा न होती हो—

विराट

मेरे रंगमहल में इसे कुछ काम नहीं है।

कीचक

तो फिर, सुदेष्णा, तुम्हारी टहल के लिए तो और दासियां रह सकती हैं। जब तक राजाधिराज सुयोधन मत्स्यदेश में आ न जावें, तब तक इसे मैं अपने रंगमहल में

रख छोडूंगा। मेरे साथ रहकर यह जब वीर-पुरुषों के मनोरंजन करने की कला सीख लेगी, तभी मैं उसे भारतेश्वर को भेंट करूंगा।

मैत्रेय

कौरवेश्वर के सुख की चिन्ता यदि संसार में किसी को है, तो वह महाराजा कीचक को ही है।

रत्नप्रभा

[स्वगत]

ठीक ही कहा गया है कि पुरुष अधिक दिनों तक परदेश में रह गये, तो चंचल होकर लौटते हैं।

सौदामिनी

अरी सैरन्ध्री, मैं कब की नजर उतार चुकी और तू अभी खड़ी ही है। महाराजा ने जो तुझे अपने रंगमहल में रख छोड़ने की बात कही, उससे हुलफुला मत जा।

[एकांत में सैरन्ध्री से]

आज का मेरा उपकार भूल मत जाना, भला !

[प्रकट]

महाराजा ने मेरी सहेली का जो अनायास सम्मान किया, उससे उसकी सुध-बुध खो गई है। दरिद्र को यदि लक्ष्मी मिल जाये, तो कुछ देर वह ऐसी ही अकबका जाती है। अपनी सहेली के बदले, मैं आरती करती हूँ। क्षमा कीजिये।

कीचक

सुदेष्णा, मुझे तो यह आश्चर्य है कि इस अप्सरा जैसी सुन्दरी को सेवा-टहल के लिए तूने नियुक्त किया तो किया कैसे ? सुन्दर फूलों को मृदुल हथेली पर झेलकर उनकी सुवास लो, या हलके-हलके उन्हें उठाकर माथे पर धरो। कहीं कोई फूलों को पैरों तले रौंदता है !

[सौदामिनी आरती करती है, महाराजा कीचक की जय-ध्वनि होती है, चँवर-धारिणी 'द्रौपदी-पति महाराजा कीचक की जय' बोलती है। फूल उछाले जाते हैं]

विराट

महाराजा कीचक, आइये, अब राजमन्दिर में प्रवेश किया जाय।

[फूल और गुलाल उछालते हुए तथा 'महाराजा कीचक की जय' बोलते हुए सर्वजन जाते हैं। केवल कंकभट्ट और मैत्रेय रह जाते हैं]

मैत्रेय

क्यों भाई कंकभट्ट, आप क्यों हक्का-बक्का हो गए ? यह चेहरा क्यों उतर गया ? क्या इसलिए रो रहे हो कि सैरन्ध्री रूपी शिकार अपने हाथों से छूटकर महाराजा कीचक के रंगमहल में प्रवेश कर गया ? अरे ये दासियां इसी तरह हरामजादियाँ होती हैं। जुए की जीत के चाहे जितने पैसे दिये जावें उन्हें संतोष थोड़े ही होता है।

कंकभट्ट

यह निरर्थक उपहास क्यों करते हो भाई ?

मैत्रेय

पर कंकभट्ट, तू तो एक निर्धन ब्राह्मण है न ? यदि सैरन्ध्री महाराजा कीचक के रंगमहल की सीढ़ियाँ चढ़ गई, तो तू अपना मन क्यों बिगाड़ता है ?

कंकभट्ट

इसलिये कि महाराजा युधिष्ठिर का छत्र देखते ही मैं यह सोचने लगा कि पांडवों के दरबार में तेरे सरीखे राज-मित्रों को जुए का कितना द्रव्य न मिलता होगा।

मैत्रेय

यदि केवल इतनी सी बात है, तब तो कोई बात ही नहीं। अब तू ऐसा समझ ले कि महाराजा विराट के यहाँ यदि जुए में कम पैसे मिलें तो भी तेरा खर्च तो कम हो ही गया, क्योंकि सैरन्ध्री तो महाराजा कीचक के यहाँ गई ! और देख भाई, हिसाब-किताब में हमेशा तिलक मिला लेना चाहिये। पहले जमा करो, और फिर खर्च करो। यह घिस-घिस किस काम की ?

कंकभट्ट

अरे, तू यह क्या कह रहा है ? मैं और सैरन्ध्री एक ही गाँव के हैं। इस नाते वह मुझसे कभी-कभी मिल लेती थी। और बस ! किसी आसी-दासी से आँखें लड़ाने का महान् पाप मुझसे कभी न होगा।

मैत्रेय

जाल फेंक कर तू मछली को किनारे पर लाया तो अवश्य था, किन्तु कीचक उसे उठा ले गया। इसमें अब तू पाप-पुण्य बघार रहा है—अरे, लोग कितने आगे बढ़ गये हैं। चलो चलकर मिला लें।

कंकभट्ट

तू आगे बढ़ जा। मैं वल्लभ पंडित को राजाज्ञा से सूचित करके आता हूँ। जब तक सब लोग दरबार में पहुँचते हैं। मैं भी पहुँचता हूँ।

मैत्रेय

सौदामिनी कहती थी कि कभी-कभी सैरन्ध्री वल्लभ पंडित के कान फूंकती थी और कभी-कभी तेरे कानों में भी फुसफुस करती थी। इसलिये, तुम दोनों की आपस में कभी पटती न थी। अब सैरन्ध्री को मिल गया है तीसरा। इसलिये, अब तुम दोनों में पटने ही वाली है !

कंकभट्ट

अरे देखो मैत्रेय, महाराजा कीचक के सम्बन्ध में तुझसे एक बात पूछना है।

मैत्रेय

जब तू अकेले में सैरन्ध्री से फुसफुस करता था, तब तो तूने मुझे कभी नहीं पूछा। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, तो क्या हो गया। अब तो तुम दोनों ही एक-दूसरे के कान भरते रहो। उलझ गये, तो हमारी याद आई। तुम्हारे जाल में नहीं फसूँगा।

[जाता है]

कंकभट्ट

[स्वगत]

धर्मराज के इस जीवन को धिक्कार है । बारह वर्ष पहले विश्वासी जनों के मना करने पर भी यह जुआ-खोर भरी सभा में पत्नी की लुटती हुई लाज अपनी आँखों देखकर ही माना, और आज उसके भाग्य में यह है कि वह खड़ा-खड़ा देखे कि एक दुराग्रही, निरंकुश; उसके चंवर-छत्र को किस तरह पद-दलित करता है और उसके बान्धवों के यश को किस प्रकार अपमानित करता है । मत्स्य देश के सेनापति को शक्ति का अभिमान हो गया है और उसे कोई ऐसा मिला नहीं, जो उसका नशा उतार दे । वह मेरी और द्रौपदी की उपस्थिति में ही "द्रौपदी-पति" कह कर पुकारा जाय, इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पाण्डवों के लिए और कौन सी हो सकती है ? अरे सुयोधन ! राजसूय यज्ञ के अवसर पर अपने स्त्री-स्वभाव के कारण द्रौपदी ने जो तुझ पर हँस पड़ने की भूल की, सो उसके बदले तूने उसी भरी सभा में उसे विवस्त्र करने का प्रयत्न किया; और हम पांडवों को वनवास दे दिया । उस हँसी का क्या यह प्रायश्चित पर्याप्त नहीं है ? दुःशासन ने जब द्रौपदी का आँचल खींचना चाहा, उस समय, हे ईश्वर ! तूने ऐसा चमत्कार किया कि अन्धे धृतराष्ट्र के मन में सद्बुद्धि उत्पन्न करदी और पाण्डवों की लाज बचा ली । हे अशरण-शरण आज भी उसी प्रकार महाराजाधिराज विराट तथा महारानी सुदेष्णा को सन्मति दे और हमारी तरिणी को मझधार से उबार पार लगा दे ।

दृश्य दूसरा

स्थान—राजमहल के भीतर का एक मार्ग

[मैत्रेय का प्रवेश]

मैत्रेय

यह कंकभट्ट गया, तो गया कहाँ ? कल से सपूत का मन ठिकाने नहीं है। सैरन्ध्री की धुन लगी है न ? उसीके पीछे पड़ा होगा। यह सौदामिनी तो इधर ही आ रही है। इसे छेड़ूँ, पूछूँ तो कंकभट्ट का पता अवश्य लगेगा।

[सौदामिनी आती है]

सौदामिनी ! ओ सौदामिनी ! अरे, यह तो अपनी ही अकड़ में है। आजकल की ये तरुण छोकरियाँ बूढ़ों की तरफ देखती भी नहीं हैं। अपनी युवावस्था में ऐसा हाल न था। जब मैं जवान था न, तब चाहे जैसी बुढ़िया मिल जावे, एक बार तो उस पर नजर फेंकता ही था। पर, अब दुनिया ही बदल गई है ! ए बिजली रानी ! अरी ए बिजली रानी !

सौदामिनी

मैं नमन करती हूँ, मैत्रेय जी ! आपका क्या आदेश है !

मैत्रेय

तुझे आठ पुत्रों की माता बनने का आशीर्वाद दूँ। या आठ पुत्रियों को ? बोल, क्या कितने चाहिए ?

सौदामिनी

मुझे नहीं चाहिए एक भी—न पुत्र और न पुत्री। स्त्री सन्तानवती क्या हुई कि पुरुष उससे छड़कने लगते हैं।

मैत्रेय

परन्तु, बड़े लोग नहीं छड़कते !

सौदामिनी

आप यह ऊड़े-बूड़े क्या लगाए हैं ?

मैत्रेय

जाने भी दो—दो क्या आठ पुत्रों की प्राप्ति के आशीर्वाद के बदले आठ पतियों की प्राप्ति का आशीर्वाद दूँ ?

सौदामिनी

यह आप क्या कह रहे हैं पंडितजी ? भले ही हम दासी हैं, परन्तु क्या हमारी ऐसी हँसी उड़ाई जावेगी ? कुछ अपने बुढ़ापे का तो विचार किया होता ।

मैत्रेय

आशीर्वाद देने में क्या बूढ़ा और क्या जवान—दोनों ही समान होते हैं । फिर बात यह है कि आशीर्वाद देने वाले व्यक्ति के केश जितने ही अधिक शुभ्र हों, उसे उतना ही निरुपद्रवी समझो । यही कारण है कि स्त्रियाँ सफेद बालों का आदर करती हैं । तू ही है, जो मेरी इतनी अवहेलना करती है । और दासियाँ तो मुझसे बोलती-चालती हैं ।

सौदामिनी

अच्छा, तो आप समझते हैं कि आपके शुभ्र केशों पर रीझ कर महिलाएँ आपको निहारा करती हैं ।

मैत्रेय

निस्सन्देह मैं तो यही सोचता हूँ ।

सौदामिनी

सफेद बालों की ओर जो स्त्रियाँ दुर्लक्ष्य नहीं करतीं, सो उसका कारण यह है कि वृद्ध पुरुष महिलाओं की सुन्दरता की कसौटी है । जब ये बूढ़े भी चोरी-चोरी अपनी

नजरें हम पर फेंकते हैं, तो हम समझ लेती हैं कि तरुण तो हमारी आँखों का निशाना बनेंगे ही। समझे बूढ़े बाबा ! मैं बड़ी नम्रता से आप से पूछती हूँ कि मुझे पुकारने की कृपा आपने क्यों कर की ?

मैत्रेय

सैरन्ध्री कहाँ है ? अरे, मैं तो भूल ही गया ! वह तो महाराजा कीचक के रंगमहल में चली गई होगी न ?

सौदामिनी

नहीं, अभी नहीं गई।

मैत्रेय

यह कैसी बात है ? इस मत्स्य-देश में महाराजा कीचक के बोल रीते नहीं जा सकते और सैरन्ध्री—

सौदामिनी

वह सब ठीक है, पर सैरन्ध्री ने 'हाँ' नहीं भरी। कल तो महारानी जी का भी इतना आग्रह न था, पर आज—

मैत्रेय

आज क्या हुआ ?

सौदामिनी

इन बरखुरदारों ने महाराज के कान भर दिये हैं कि रानी सुदेष्णा को उनका महत्त्व सहन नहीं है, इसलिए महारानी ने कीचक और उनके अनुगामियों का अपमान करने के लिए जान-बूझकर सैरन्ध्री को नहीं भेजा। मन्त्रीजी ने सुना, तो वे भी महारानी से विनय कर रहे थे कि यदि आप सैरन्ध्री को स्वयं होकर नहीं भेज देतीं, तो महाराजा कीचक ने निश्चय कर लिया है कि पहले तो वे तू-तड़ाक पर आ जावेंगे और महाराजाधिराज को अपमानित करेंगे। फिर, सबके सामने सैरन्ध्री को जबर्दस्ती ले जावेंगे।

मैत्रेय

तब महारानी सुदेष्णा घबड़ा गई होंगी ?

सौदामिनी

यह भी कोई पूछने की बात है। महारानी स्वयं महाराजा कीचक के महल में समझाने-बुझाने गईं हैं।

मैत्रेय

अब इस दन्त निपोरन का क्या अर्थ ? सैरन्ध्री को भेज दिया, तो काम हो गया। वह ऐसी सुन्दरी है भी तो !

सौदामिनी

आपके समान बूढ़े ब्राह्मण जब उसकी इतनी प्रशंसा करते हैं, तो यदि महाराजा कीचक उस पर रीझ गए, तो इसमें क्या आश्चर्य।

मैत्रेय

कौन मैं ? मैं तो सैरन्ध्री की प्रशंसा नहीं करता, यह जीव कंकभट्ट सरीखा थोड़े ही है, जो किसी दासी-वासी के चक्कर में पड़े।

सौदामिनी

तो फिर सैरन्ध्री की इतनी पूँछ-ताँछ क्यों हो रही है।

मैत्रेय

मैं तो कंकभट्ट को खोज रहा हूँ, इसीलिए मैंने तुझसे सैरन्ध्री का पता पूछा।

सौदामिनी

कंकभट्ट को खोजने निकले और सैरन्ध्री का पता पूछने लगे ! इसका क्या अर्थ ?

मैत्रेय

अर्थ यह कि जहां सैरन्ध्री है, वहां कंकभट्ट को होना ही चाहिए और यदि मैं सीधा उसे ही पूछने लगूं, तो वह अपना पता ही न लगने दे।

सौदामिनी

क्यों ?

मैत्रेय

क्योंकि चोरी का काम तो ठहरा। कोई साथी देख-सुन ले, तो आदमी को लज्जित होना पड़ता है। इसी प्रकार औरतें भी जब कोई गुप्त काम करती हैं, तो अड़ोसिनों-पड़ोसिनों से बच-बच कर ही रहती हैं। इसलिए, कहता हूँ कि कंकभट्ट मुझसे मुँह छिपाएगा और सैरन्ध्री तुझसे बचना चाहेगी। इसलिए ऐसा करें कि मैं सैरध्री को खोजता हूँ और तू कंकभट्ट का पता लगा। इस प्रकार अपने आप दोनों का पता लग जावेगा। चलो चलें।

[जाते है]

दृश्य तीसरा

स्थान—महालक्ष्मी का मन्दिर

[कंकभट्ट वल्लभ और सैरन्ध्री बातचीत करते हैं]

कंकभट्ट

द्रौपदी, हम पाण्डवों की शक्ति कितनी ही अधिक क्यों न हो, पर आज उसका क्या उपयोग है। वैभव के बीते दिनों का स्मरण करें और आँखों से पानी बहावें, इसके सिवा इस स्थिति में और हम कर भी क्या सकते हैं। जिसने जरासन्ध को खेल-खेल में मार डाला, वह भीम ही इतना बलशाली है कि समस्त कौरवों के लिए अकेला ही भारी पड़ सकता है। पर, अब "है" नहीं "था" कहना चाहिए। पाञ्चाली! तेरे स्वयंवर के अवसर पर, जिस अर्जुन ने कौरवों सहित समस्त क्षत्रिय राजाओं का गर्व खर्व किया, राजसूय यज्ञ के समय जिस धनुर्धारी ने सारी पृथ्वी को पदाक्रान्त किया, वन में जिसने गन्धर्वों का मान-मर्दन किया, सुयोधन को बन्धन मुक्त किया, और तेरे समक्ष सभी कौरवों को नीचा दिखाया—वही महारथी आज हाथों में चूड़ियाँ पहने बैठा है। ईश्वर वे दिन लायगा, जब हम अपने सामर्थ्य का प्रकट प्रदर्शन कर सकेंगे, पर तब तक तो चुप-चाप मानापमान निगलते जाना ही समझदारी है।

सैरन्ध्री

महाराज, आप ठहरे शान्ति के महासागर! इसलिए, यदि आपको लगे कि सब-लोग शान्ति पूर्वक बैठे-बैठे अत्याचारी की लातें खाते रहें, तो इसमें अचरज ही क्या है! कल ही तो वनवास बीता है और आज यह अज्ञातवास आन पड़ा, इस स्थिति में दूसरों का दुःख आँकने की आपकी क्षमता नष्ट हो चुकी है। आपको राजदरबार में बैठने मिल जाता है और धर्माधर्म के प्रश्नों पर आपका परामर्श मात्र लेकर राजा चार पैसे आपके मुह पर मार देता है और केवल इसीसे सन्तुष्ट होकर इन्द्रप्रस्थ का सम्राट् अपनी धर्मपत्नी को दूसरे की दासी होने के लिए लाचार करता है। पाण्डवों

के लिए इससे अधिक डूब मरने की बात और कौन-सी हो सकती है। कुछ दिन दास रहे, तो दासत्व ही अच्छा लगने लगता है। परन्तु, महाराज इस दीन अबला की आपके चरणों में इतनी विनती है कि इस विराट नगरी में हम ऐसे काम न करें, जिससे उन पर हमारी सन्तान उँगली दिखावे।

कंकभट्ट

द्रौपदी ! क्या मैंने तुझसे एक भी ऐसा शब्द कहा है कि जिसका अर्थ यह निकले कि तू कीचक के रंगमहल में चली जा ?

सैरन्ध्री

महाराज, यदि कल कौरव उपस्थित होते और पाण्डवों के सामने ही की जाने वाली पाण्डवों की धर्मपत्नी को रखैल बनाने की कीचक की घोषणा सुन पाते, तो वे मन में फूले न समाते कि उनका पाण्डवों को वनवास भेजना सफल हो गया। महा-राज, मैंने यह माना कि कौरवों की सभा में नीच दुःशासन ने जब मेरा चीर खींचा, तब आप यह समझ रहे थे कि मैं द्यूतक्रीड़ा में जीती गई एक दासी हूँ और इसी-लिए आप अपना माथा पीटते चुप बैठे रहे—परन्तु कल न तो मैं दासी थी और न आप दास थे।

कंकभट्ट

द्रौपदी, तू यह क्यों भूलती है कि हम अज्ञातवास में हैं।

सैरन्ध्री

इसीलिए तो कहती हूँ कि हमारी आज की स्थिति देखकर कौरव आनन्द मनाये बिना नहीं रहेंगे। महाराज, बारह वर्ष की तो क्या, यदि जन्म भर के लिए वनवास आन पड़े, तो वह स्वीकार है, परन्तु यह अज्ञातवास..........

कंकभट्ट

द्रौपदी, अपने पापों के कारण यदि हम एक बार भी स्थानभ्रष्ट हुए, तो हमारे भाग में वनवास की यातना तो अंकित हो ही जाती है। यदि वनवास चतुरतापूर्वक

बिताया, तो अज्ञातवास का सुख प्राप्त होता है। और इस अज्ञातवास के दिन बुद्धि और धर्मपूर्वक काटे, तो फिर पूर्व स्थिति प्राप्त हो जाती है। संसार का यह चक्र ऐसा ही है।

सैरन्ध्री

महाराज, वन में यह भूलने की आवश्यकता तो न थी कि हम कौन हैं और क्या हैं ? वनवास करते हुए भी पाण्डव अपनी तेजस्विता से जगत को चकित तो करते थे। परन्तु, आज हमारी स्थिति क्या है ? इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन के स्वामी तो हैं हम, परन्तु इसे प्रकट रूप से कह सकने की स्वतन्त्रता क्या हमें है ? मेरी ओर जयद्रथ ने एक बार बाँकी नजर से क्या देखा था, आपने उसका काला मुँह कर नगर भर में उसका तमाशा कर दिया था और उसकी बहिन पर दया करके उसे जीवन-दान दिया था। इस पराक्रम का प्रदर्शन करने आप तब आगे क्यों नहीं आए, जब यह नर-पशु कीचक "द्रौपदी पति" कहलाये जाने का स्वाँग रच रहा था ? महाराज, वनवास जीवन पर्यन्त स्वीकार है, परन्तु पाण्डवों के सकल गुणों को विलुप्त करनेवाला यह अज्ञातवास क्षण भर को भी नहीं चाहिए। वनवास के समय केवल शरीर को कष्ट होता है और महाराज, शरीर क्या है जैसा रखो वैसा रह लेता है। परन्तु, इस अज्ञातवास में मन को पीड़ा होती है। इस अज्ञातवास का यह अर्थ है कि पाण्डव अपना पूर्व गौरव भुला दें और दूसरों की सत्ता के समक्ष आत्म-समर्पण कर दें। महाराज, स्वतन्त्रता का उपभोग करनेवाला कोई व्यक्ति दो दिन के लिए अपनी इच्छा से यदि दासत्व स्वीकार कर ले, तो उसका मन दुर्बल हो जाता है और मान और अपमान की पहिचान नहीं रह जाती। उल्टे यह होता है कि वह अपने पूर्व गौरव को भूल जाने और अपमान सहन करने को सद्गुण मानने लगता है ! यदि पांडव वनवास से सीधे हस्तिनापुर चले गये होते, तो चाहे वे शरीर से दुबले रहते, परन्तु मन से निर्भय होने के कारण शत्रु उनके समक्ष थर-थर काँपता। परन्तु महाराज, आज राजमंदिर में दास और दासियों को मिलनेवाले सुख के लिए ललच उठनेवाले पाण्डवों को जो कि शरीर से पुष्ट और मन से नपुंसक हो गए हैं, देखकर प्रसन्नतापूर्वक तालियां पीटेंगे।

कंकभट्ट

द्रौपदी, तू कीचक के रंगमहल में जा······

वल्लभ

दादा, जब कीचक ने द्रौपदी को रंगमहल ले जाने का प्रस्ताव किया, तब आप चुप कैसे बैठे रहे ? यदि यह भीम कल उपस्थित होता, तो वह कीचक के उसी प्रकार दो टुकड़े कर डालता, जिस प्रकार कि एक जरासन्ध को बीच में से चीरकर दो जरा-सन्ध बना डाले थे। पाञ्चाली ने जब कल की घटना मुझसे कही, तब मुझे कीचक की अपेक्षा आप पर अधिक क्रोध आया, क्योंकि कीचक तो जाना-बूझा अधम सूतपुत्र है और महापशु है, परन्तु उसका उद्धत और नीचतापूर्ण व्यवहार आपने कैसे सहन कर लिया ! अपना राजछत्र उस पशु के सिर पर देखकर यदि आपका रक्त नहीं उबल पाया, तो इसका स्पष्ट रूप से यही अर्थ है कि हम पाण्डव इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन के योग्य नहीं रहे। हमारे जीवित रहते वह सूतपुत्र कीचक अपने को द्रौपदी-पति कहलवाके शान बघारे, तो दादा धिक्कार है, आपके इस धर्म को और इस शान्ति-प्रियता को !

कंकभट्ट

चुप रह भीम इस समय क्रोध के आवेश में आकर अधर्म और अविचार कर बैठने का अवसर नहीं है। इसे सौभाग्य समझना चाहिए कि कल के समारोह के समय तू उपस्थित न था। वैसे भी वह नर-पशु कीचक भीम के नाम के अक्षर अपने उपानह तले अङ्कित कराके उन्हें रौंदता रहता है, परन्तु मेरा विश्वास है कि अनुकूल समय आने पर भीम की लातों से ही उस पतित की कपाल-क्रिया होनेवाली है। द्रौपदी, आज का समय ऐसा नहीं है कि हम क्रोध के वशीभूत हो जावें। भीम, मैं यह नहीं चाहता कि भावावेश में अपना रूप प्रकट हो जाय और सुकुमार द्रौपदी पर फिर वनवास भोगने की आपत्ति आ जावे। मेरे सामने जैसा वर्तमान का चित्र स्पष्ट है, वैसा ही मुझे भविष्य भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है।

वल्लभ

तो फिर आप यह कह रहे है कि द्रौपदी कीचक के रंगमहल में जावे और वहां अपना शरीर अपवित्र होने देवे ! यह अपमान और अत्याचार सहकर यदि आगे चलकर हम कौरवों से इन्द्रप्रस्थ का राज्य ले भी लेवें, तो उसका क्या अर्थ निकला। दादा, मुझे इसकी बड़ी लज्जा है कि मैं आपका छोटा भाई हुआ। इस तरह जीवित रहने की अपेक्षा तो चिता पर चढ़कर मर जाना श्रेयस्कर है। कीचक द्रौपदी को

भ्रष्ट कर डालेगा और महाराजा युधिष्ठिर लोगों के थूत्कार के बीच इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन पर बैठने की प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। दादा, अनेक पण्डित आपको अजातशत्रु कहकर आपको गौरवाभिषिक्त करते हैं, परन्तु अपनी पत्नी पर अत्याचार होने पर भी जिसे क्रोध न आवे, ऐसी अजातशत्रुता को धिक्कार है!

कंकभट्ट

अरे भीम, मेरी बात पूरी सुनेगा भी कि नहीं? आज हमें असन्तुलित न हो जाना चाहिए। दूसरों की सत्ता के अन्तर्गत चुपचाप दिन बिताने का पाण्डवों को कोई ज्ञान नहीं था। अज्ञातवास स्वीकार करने का अर्थ ही यह होता है कि पाण्डवों ने अपनी इच्छा से दूसरों की सत्ता स्वीकार की। ऐसी स्थिति में हम पर अत्याचार भी होता है, तो हमें अपनी उद्दण्डता प्रकट नहीं करनी है। भविष्य की उन्नति को दृष्टि में रखकर हमें यह दुर्दिन किसी प्रकार काट ही देना है। द्रौपदी, तू उद्विग्न न हो। यह घमण्डी कीचक चाहे जितने गाल बजावे, पर मुझे नहीं लगता कि उसके विलास-भवन जाने का प्रसंग तुझ पर आ पड़े। महाराजा विराट बुद्धि के उदार और हृदय के कोमल हैं तथा महारानी सुदेष्णा भी अपने सद्गुणों के कारण लोकप्रिय हुई है। द्रौपदी, आज की स्थिति में शाब्दिक अपमान तो हमें पीना ही पड़ेगा। परन्तु, यदि दुष्ट कीचक अपने कहे अनुसार व्यवहार करने लगे, तो तू सुदेष्णा से प्रार्थना कर। महारानी की सत्यनिष्ठा और उदारता पर अवलम्बित रहकर यदि तू उनके चरणों पड़ी रही, तो कीचक से भयभीत होने का तेरे समक्ष कोई कारण उपस्थित न होगा।

प्रथमांक समाप्त

*

द्वितीय अंक

दृश्य पहला

स्थान—राजमन्दिर के भीतर का आँगन

[रानी रत्नप्रभा, मैत्रेय और मन्दहासिनी का प्रवेश]

रत्नप्रभा

अरे सुनिये तो मैत्रेय महोदय !

मैत्रय

आज्ञा महारानी ।

रत्नप्रभा

मैंने कहा, सवारी किस ओर है ?

मैत्रेय

महाराजा कीचक की या विराट की ?

रत्नप्रभा

मैंने तो उन्हींकी पूछी ।

मैत्रेय

उनकी सवारी यहीं तो है ।

रत्नप्रभा

'यहीं' का क्या अर्थ ?

मैत्रेय

यहीं का अर्थ वहीं ।

रत्नप्रभा

महारानी सुदेष्णा से कहना पड़ेगा कि उनके सेवकों को सीधा बोलना नहीं आता ।

मन्दहासिनी

अरे मैत्रेयजी ! रानी पूछ रही हैं कि महाराजा कीचक किस ओर गये हैं ?

मैत्रेय

इसका पता तो तेरी सरीखी दासियों को रहता है । राज भवन के भीतर प्रवेश करने के पश्चात् महाराजा कीचक सैरन्ध्री को खोजते फिरते हैं, कि सौदामिनी से ठिठोली करते हैं, कि मन्दहासिनी के साथ हँसी करते हैं, यह मैं क्या जानूँ । बात ये है रानीजी कि महाराजा कीचक जब राजमहल में आते हैं, तब ये दासियाँ इस प्रकार छिप जाती हैं, जैसे सूर्य को देखकर उल्लू । और फिर इसका भी तो निश्चय नहीं रहता कि महाराज का धावा इस ठिकाने पर होगा और उस ठिकाने पर नहीं होगा ।

रत्नप्रभा

अरी मन्दहासिनी, तू ही तनिक आगे बढ़कर देख कि उनकी सवारी ननद के महल की ओर चल पड़ी कि नहीं ।

मैत्रेय

और सुन, ज्यों ही महाराजा कीचक महारानी सुदेष्णा के महल में पैर रखें, त्यों ही मुझे खबर दे देना । महारानी महाराज कीचक के सम्मान में भोज दे रही हैं न !

वहां मुझे भी उपस्थित होना है। इसलिये मैं क्या कहता हूँ, तू सुनती है दँतनिपोरी, कि ज्यों ही थालियां लग जावें, मुझे समाचार मिल जावे।

[मन्दहासिनी चली जाती है]

रत्नप्रभा

मैत्रेयजी ! मैं आपसे एक प्रश्न पूछती हूँ। आप सरल बाल-बोध भाषा में उत्तर देंगे न ?

मैत्रेय

बिलकुल बाल-बोध और सरल उत्तर दूंगा। महिलाओं के साथ कैसी सीधी-सादी और बालिका-बोधिनी भाषा का उपयोग करना चाहिये, यह मेरे बांये हाथ का खेल है। रानीजी जानती हैं कि नहीं, कि रनिवास में मेरी नियुक्ति महाराजाधिराज ने लिखाई-पढ़ाई का काम सिखाने के लिये की थी ? इसलिये रानीजी प्रश्न पूछें, यदि उन्हें बालिका-बोधिनी, हस्त-संकेतिनी भाषा में उत्तर चाहिये, तो मैं वैसा ही दूंगा—यदि तरुण-बोधिनी, नयन-संकेतिनी भाषा में उत्तर चाहिये, तो मैं वैसा ही दूंगा—और यदि वृद्ध-बोधिनी, दन्त-पातिनी भाषा में उत्तर चाहिये, तो वह भी मुझे अस्वीकार नहीं है। क्योंकि ये भाषाएँ भी वेश्याओं के समान ही मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी हैं।

रत्नप्रभा

आप बड़े मर्मज्ञ हैं, इसीलिये आपसे पूछ रही हूं। आप अपना ठीक-ठीक मत दीजिये। क्या वह दासी सैरन्ध्री मुझसे अधिक सुन्दरी है ?

मैत्रेय

रानीजी, यदि अपने हीरे-मोती के आभूषण उतारकर मुझे सौंप दें, तभी मैं इसका उत्तर दूंगा।

रत्नप्रभा

यह क्यों ?

मैत्रेय

हम ठहरे गरीब लोग, जब हम श्रीमानों की स्त्रियों को देखते हैं, तो हमारी आँखें उनकी वेशभूषा और अलंकारों पर ही रुक जाती हैं। रूप तक तो पहुँचने ही नहीं पातीं—तो हमारी आँखों में तो रानीजी के आभूषण और सैरन्ध्री का रूप ही समाया है।

रत्नप्रभा

अच्छा, तो यह बताइये कि यदि ये आभरण सैरन्ध्री के शरीर पर पहना दिये जाएँ, तो वह मुझसे अधिक भली लगेगी? उनका मन सैरन्ध्री में क्यों अटका है? मुझे सच-सच बताइये।

मैत्रेय

मैं क्या बताऊँ रानीजी। हम पुरुषों की जाति कुछ ऐसी गँवार होती है कि किसी हिडिंबा पर भी आसक्त हो सकता है। आपके कानों तक तो यह बात आई होगी कि त्रिभुवन सुन्दरी द्रौपदी-सी पत्नी पाकर भी राजपुत्र भीम हिडिंबा के मोह को नहीं टाल पाया। आप स्वयं सोच सकती हैं कि पुरुषों को यदि रूप की सच्ची परख ही होती, तो फिर स्त्रियों को अपना मुंह रँगने और शरीर सजाने का हठ ही क्यों होता।

[सौदामिनी का प्रवेश]

सौदामिनी

अरे मैत्रेय जी! आपने सैरन्ध्री को कहीं देखा है?

रत्नप्रभा

ओ सौदामिनी! ननद रानी क्या कर रही हैं?

सौदामिनी

आपकी बाट जोह रही हैं, रानी जी! महाराजा कीचक कबके आ चुके हैं।

[मन्दहासिनी का प्रवेश]

मन्दहासिनी

रानी जी ! महाराजा आपके लिये ठहरे हैं।

रत्नप्रभा

चलिये मैत्रेय जी, मैं ही आपको आमंत्रण देती हूँ।

[मन्दहासिनी और रत्नप्रभा जाती हैं। मैत्रेय भी जाने लगता है]

सौदामिनी

ओ मैत्रेय महोदय ! आप तनिक रुकेंगे कि नहीं ? भोजन की बात क्या निकली कि बुढ़ापा भूलकर जवानों की तरह छलांग भरने लगे।

मैत्रेय

मैं ठहर कर क्या करूँगा ?

सौदामिनी

अच्छा, पहले यह बताइये कि सैरन्ध्री कहाँ है। महाराजा कीचक के थाली पर बैठने का समय हो गया और यह न जाने कहाँ मुंह छिपाये बैठी है।

मैत्रेय

परोसनेवाली और पंखा झलनेवाली दासियों की क्या कमी है। वह मुंह छिपा रही है, तो छिपावे।

सौदामिनी

पर महारानी ने उसे ढूंढ़ लाने की आज्ञा जो दी है ! यह सैरन्ध्री भी बड़ी मूर्ख है। यही तो अवसर है कि अब वह कीचक की प्रेयसी बन सकती है। पर कौन जाने, इसका भाग्य कहाँ अटका है ! कोई चलनी में दूध दुहे तो पावे कैसे ! मैं कहती हूँ कि

यदि यह एक बार कीचक के रंगमहल में चली जाती, तो औरों का रास्ता भी खुलता।

मैत्रेय

तो फिर पगली, तू सैरन्ध्री को ढूँढ़ती ही क्यों है? आज के भोज में उसका काम तू ही कर और कीचक के सामने बार-बार आ जा। समझी कि नहीं? तेरे ही भाग्य से वह नहीं मिल रही है। चलो अच्छा ही हुआ। तेरा काम सधा। और देख, मुझे जरा अच्छे-अच्छे व्यंजन परोसना। तनिक आग्रह करके खिलाना। तो मैं महाराजा कीचक के सामने तेरा ऐसा बखान करूँगा कि वे तुझ पर रीझ जावें।

सौदामिनी

आज माल भी ऐसा स्वादिष्ट बना है कि क्या बताऊँ। आपको अवश्य भरपेट खिलाऊँगी। पर, यह तो बताइये कि महाराजा कीचक के सामने मेरी सुन्दरता का आप बखान कैसे करेंगे?

मैत्रेय

और लोगों को चाहे तेरा यह शरीर मोटे और खुरदुरे चमड़े से मढ़ा हड्डियों का एक ढांचा दिखाई पड़े और यह भी कि उसमें सड़ा-गला रक्त बह रहा है, परन्तु महाराजा कीचक सरीखे दिव्य पुरुष को ऐसा अनुभव होना चाहिये कि तू सचमुच बाहर और भीतर से केवल सौन्दर्य से गढ़ी हुई अप्सरा की एक प्रतिमूर्ति है।

सौदामिनी

मैं कहती हूँ, ऐसी बातें करनेवाले को भरपेट व्यंजन नहीं मिलते।

मैत्रेय

तेरा पीला और निस्तेज चेहरा चाहे इस लोक में क्षयरोग से ग्रस्त मालूम पड़े, परन्तु उस लोक में चन्द्रमा के समान चमकेगा। मैं महाराजा कीचक के सामने सिद्ध कर दूंगा कि धूर्त लोग तेरे मुख से गन्दी लार टपकने की बात भले ही किया करें, परन्तु प्रेमी-जनों के अधर-स्पर्श से वह अमृत बने बिना नहीं रह सकती।

सौदामिनी

कुछ ज्ञात है ब्राह्मण देवता, आज के फल और मेवे कितनी दूर-दूर के बगीचों से आये हैं ! इस प्रकार के वर्णन से वह खाने को नहीं मिल सकते, समझे ।

मैत्रेय

लफंगे भले कहा करें कि तेरी आँखें इतनी चिपड़ी हैं कि जैसे बिल्कुल मुंद गई हैं, परन्तु समझदार लोगों को वे ऐसी मालूम होती हैं कि जैसे कामदेव के तीरों से भरे हुए दो विशाल तरकस हों ।

सौदामिनी

बन्द कीजिए यह ठट्ठा । चलिए, अब भोज के लिये चलें ।

[हाथ पकड़कर खींचते हुए]

आज तुम्हें इतना परोसूंगी कि थाली छोड़कर उठना पड़ जायेगा ।

मैत्रेय

युवकों को आकर्षित करने की कला तुझे भले ही न आती हो, मगर बूढ़ों को हाथ पकड़कर ले जाने में तू चतुर से चतुर बुढ़ियों के कान काटती है । अभी-अभी जो यह अनुभव मुझे हुआ है, उसके आधार पर महाराजा कीचक से तेरी प्रशंसा अवश्य करूँगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य दूसरा

[विराट और कीचक भोजन के लिये बैठे हैं। एक-एक दासी पंखा झल रही है। कंकभट्ट और मैत्रेय भी हैं। सुदेष्णा, रत्नप्रभा, मन्दहासिनी और सौदामिनी खड़ी हैं]

सुदेष्णा

अरे वल्लभ ! क्या परोस पूरी हो चुकी ?

[वल्लभ का प्रवेश]

वल्लभ

जी महारानी।

सुदेष्णा

आज के व्यंजन तो सब ठीक बनाये हैं न ? समझो कि तुम्हारी परीक्षा का अवसर है। महाराजा कीचक अभी हाल ही में हस्तिनापुर से लौटे हैं। वे दोष न निकाल सकें।

वल्लभ

इन्द्रप्रस्थ में कभी-कभी महाराजा युधिष्ठिर से मिलने के लिये महाराजा दुर्योधन आया करते थे। उन्हें मैं ऐसी चीजें बनाकर खिलाता था कि उनकी याद उन्हें जीवन भर रहती। महाराजा कीचक के लिये भी मैंने वैसा ही प्रबन्ध किया है।

सुदेष्णा

थाल परोसे जा चुके हैं, अब दादा से कहा न जाय कि प्रारम्भ करें ?

विराट

महाराजा कीचक, प्रारम्भ कीजिये।

सुदेष्णा

मैत्रेय महोदय ! आरंभ हो।

मैत्रेय

अरे कंकभट्ट, देखता क्या है ?

सुदेष्णा

आप किसके लिये रुके हैं ? दादा, प्रारम्भ कीजिये न।

विराट

हाँ, हाँ, महाराजा कीचक आरम्भ कीजिये।

कीचक

परन्तु, वह कहाँ है ? बहन, मैंने तुझसे कब से कहकर रखा है कि उसके बिना हम किसी चीज को छुएंगे तक नहीं। वह आ जावे, तो भोजन शुरू हो। तब तक कुछ न होगा।

सुदेष्णा

रानी रत्नप्रभा यहीं तो खड़ी हैं। मुझे क्या ज्ञात था कि भाई-भाभी के बीच इतना अधिक स्नेह है। अरी रानीजी, जरा आप दादा के पास आ जाइये। आपके बिना दादा के कंठ से एक कौर भी नीचे नहीं उतरता।

विराट

पति-पत्नी का प्रेम हो तो ऐसा हो। धन्य है महाराजा कीचक, धन्य हैं रानी रत्नप्रभा।

मैत्रेय

महाराजा ! आप जब हस्तिनापुर में थे, तब आपके गले में कुछ कौर तो नहीं अटक गये ?

कीचक

महाराजाधिराज विराट और महारानी सुदेष्णा ! आप लोग क्या यह सोचते हैं कि मैं रत्नप्रभा के लिये रुका हुआ हूँ ? चार दिन पहले मैंने तुझसे तेरी सैरन्ध्री माँगी थी, पर मैं देखता हूँ कि इन चार दिनों में मेरी बात का किसीको स्मरण भी नहीं रह गया। जब मैंने त्रिगर्तों को हराया था और जब तक उसकी याद ताजी थी, तब तक मेरी इच्छाओं की अनुमान लगाकर ही पूर्ति कर दी जाती थी। मेरे शब्द मुँह से निकलने न पाते थे और झेल लिये जाते थे। पर, मैं आठ-दस महीने मत्स्य देश में जो नहीं रहा, तो उस बीच मेरे आदेशों की कीमत इतनी गिर गई ! महारानीजी, कल जब आप मुझे भोज का निमन्त्रण देने आई थीं, उस समय फिर मैंने सैरन्ध्री की मांग आपके सामने की थी। मैंने यह भी स्पष्ट कह दिया था कि भोजन के लिये बैठने के पहले, जब सैरन्ध्री मेरी दासी के रूप में उपस्थित हो जायगी, तभी मैं आऊँगा, नहीं तो न आऊँगा। उस समय आपने क्या कहा था, उसे क्या आप भूल गईं ? भोजन के लिये बैठते ही सैरन्ध्री मेरी हो जावेगी। भोज के समय मेरी दासी के रूप में वह मेरी सेवा में तत्पर रहेगी और जब मैं यहाँ से लौटूंगा, तब उसे अपने साथ लेता जाऊँगा। क्या ऐसा स्पष्ट आश्वासन आपने नहीं दिया था ?

सुदेष्णा

दिया था और भोजनोपरान्त मैं सैरन्ध्री को आपके हाथों सौंप दूंगी।

कीचक

भोजन के उपरान्त ? थाली पर बैठते ही सैरन्ध्री मेरी होनी चाहिये थी। कहाँ है वह ? जब तक वह हमारे सामने नहीं आती, हम थाली को छुएँगे तक नहीं। यह ढीठ वल्लभ परोसने के लिये डटा है। इस ढीठ की परोस को मैं हाथ नहीं लगाने वाला।

[थाली दूर सरका देता है]

विराट

महाराजा कीचक यह क्या है ! उससे कोई अपराध हुआ हो, तो भोजन के बाद उस पर विचार हो जावेगा।

मैत्रेय

परोसी हुई थाली इस तरह नहीं फेंकी जाती।

कंकभट्ट

अन्नं ब्रह्मेति व्यजनात्। अन्न का बहुत बुरा शाप पड़ता है।

कीचक

चुप रहो भिखमंगो। तुम इन श्रीमन्तों की बातों को क्या समझो। जो दूसरों के सामने पूँछ हिलाकर और भीख माँगकर पेट के लिये दो कौर जुटाते हैं, वे चाहें तो अन्न को सिर पर धरकर नाचें! तुम्हारा जन्म ही अन्न के लिये है। मेरे लिये अन्न क्या, इस संसार में सुखभोग करने के जितने भी उपकरण हैं, वे सभी हैं। मेरे सामने अन्न की क्या प्रतिष्ठा! जिसकी शक्ति से राजा और महाराजा बनते हैं, जिसके मुख से शब्द निकलने पर अभिषिक्त राजाओं और महाराजाओं को अपने सिंहासन बिना बोले रिक्त करने पड़ते हैं, नये राज्यों का निर्माण और पुराने विख्यात राज्यों का विनाश जिसकी प्रतिदिन की क्रीड़ा है, ऐसे मुझ समान पराक्रमी व्यक्ति के सम्मुख संसार की हर सुखभोग की वस्तु हाथ जोड़े सेवा में तत्पर रहनी चाहिये। महारानी सुदेष्णा, आप जानती हैं मेरी योग्यता क्या है कि मैं इन्द्र को स्वर्ग से निर्वासित कर सकता हूँ, इन्द्राणी को अपने बाहुपाश में आबद्ध कर सिंहासनासीन हो सकता हूँ, परन्तु त्रिगर्तों को हराकर मैंने मत्स्य देश का पुनरुत्थान इसलिये किया कि पूर्व परम्परा को प्रतिष्ठित करूं और तुम्हें जो बहन कहकर पुकारने की भूल की है, उसका जीवन भर निर्वाह करूँ। महाराजा और महारानी के मस्तकों पर जो फिर से अभिषेक वारि का सिंचन हुआ, उसका कारण मैं हूँ। और मैं ही हूँ, जो राजा विराट के लिये भारतेश्वर से महाराजाधिराज की उपाधि ले आया। मैं तो आप लोगों के संबंध में भूल से निकले हुए शब्द को भी रूप देने का प्रयत्न प्राणपण से करता हूँ और आप हैं कि मेरी एक साधारण दासी की नियुक्ति की छोटी-सी माँग को पूरी करने में आनाकानी करते हैं। यह कृतज्ञता भी खूब हो रही! सुन बहन! मेरी यह इच्छा है, मैं कहता हूं मेरी य; आज्ञा है कि सैरन्ध्री यह थाली उठाकर ले जावे, अपने कोमल करों से दूसरी थाली लगाकर लावे और जब तक मैं भोजन करूँ, तब तक हमारे पास खड़ी होकर पंखा झलती रहे। कहां है सैरन्ध्री? सैरन्ध्री! नहीं आती? तो मैं ये चला।

सुदेष्णा

तनिक ठहरिये, मैं उसे बुलाने के लिये किसी दूसरे को भेजती हूँ। सैरन्ध्री आती ही होगी। अरी सौदामिनी, यह सैरन्ध्री गई तो कहाँ गई ? उससे जल्दी आने को कह।

सौदामिनी

वल्लभ ने सैरन्ध्री को अपनी सहायता के लिये रसोई घर में रख छोड़ा है। परोसे हुए व्यंजनों में से अधिकांश सैरन्ध्री ने ही बनाये हैं।

कंकभट्ट

सैरन्ध्री के बनाये व्यंजन चखने के लिये बड़े-बड़े महर्षि इन्द्रप्रस्थ आया करते थे।

मैत्रेय

ये व्यंजन ऐसे स्वादिष्ट मालूम होते हैं कि मेरे मुँह में तो पानी आ गया। अपने पेट भर में जाना चाहिये, फिर चाहे वे सैरन्ध्री के हाथ के हों, चाहे वल्लभ के।

रत्नप्रभा

मै ये थाली उठाये ले जाती हूँ और दूसरी लिये आती हूँ।

कीचक

अपने सुन्दर हाथों का महत्व अपने महल में ही रहने दीजिये। जब मैं तुम्हारे महल के बाहर रहता हूँ, तब तुम्हारा गुलाम नहीं रहता, समझीं !

रत्नप्रभा

धर्म-पत्नी का सभी जगह एक-सा अधिकार रहता है।

[थाली उठाने लगती है]

कीचक

ठहर जा ! जिसे जो काम सौंपा जावे, वह वही करे। ज्ञात होता है कि पटरानी का सम्मान छोड़कर रंगमहल की दासी बनने की इच्छा हो रही है !

विराट

अरे क्या नाम है उसका.........सैरन्ध्री कि कौन.........। महाराजा कीचक जिस दासी को चाहते हैं, उसे शीघ्र प्रस्तुत करो। इतनी-सी बात पर यहाँ रणक्षेत्र निर्माण करने की क्या आवश्यकता ?

वल्लभ

वह रसोईघर के काम में फंसी है।

सुदेष्णा

सौदामिनी, उसकी जगह पर तू जा और उसे यहाँ भेज दे।

सौदामिनी

मैं तो वहीं जा रही थी, पर यह वल्लभ नहीं जाने देता।

मैत्रेय

क्यों बेटा वल्लभ, इसमें तेरा क्या है ? तेरी सहायता के लिये क्या सैरन्ध्री और क्या सौदामिनी ?

कंकभट्ट

सहायक चतुर हो, तो भोजन स्वादिष्ट बनता है।

सुदेष्णा

सहायता के लिये इतने नौकर-चाकर तो हैं। वल्लभ, सैरन्ध्री को भेज दे।

मैत्रेय

हठ तो राजाओं का आभूषण है। रसोइयों को वह शोभा नहीं देता। सौदामिनी ! जा तू रसोईघर में।

[सौदामिनी जाने लगती है]

वल्लभ

चल दूर हो, घिनी कहीं की। महाराज, यदि ऐसी दासियाँ रसोईघर में हाथ डालें, तो सब व्यंजन बिगड़ जायेंगे। मैं इसे वहाँ पैर नहीं रखने दूँगा।

सौदामिनी

महारानी, अब मैं क्या करूँ। आदेश हो तो महाराजा कीचक को पंखा झलने लगूँ।

[पंखा झलती है]

कीचक

हट, दूर हो गन्दी कहीं की। स्वर्ण-मुद्रिका में कहीं कोई कंकड़-पत्थर जड़ता है ?

सौदामिनी

[एक ओर]

पुरुषों की जाति और रासभों की जाति एक ही होती है। उनके सामने ज्यों ही विनम्रता प्रदर्शित की, त्यों ही उन्होंने दुलत्ती झाड़ी।

मैत्रय

महारानीजी ! सैरन्ध्री आती है कि हमें परोसी थाली पर से भूखे पेट उठ जाना है ?

सुदेष्णा

मैं जाती हूँ, उसे लिये आती हूँ। चल री मन्दहासिनी, मेरे साथ चल।

[सुदेष्णा तथा मन्दहासिनी का प्रस्थान]

कीचक

महाराजाधिराज विराट ! आपके दरबार में स्त्रियाँ खूब सिर पर चढ़ रही हैं। एक क्षुद्र दासी और उसे बुलाने के लिये महारानी सुदेष्णा को जाना पड़े। मैं आपसे

स्पष्ट कहे देता हूं कि महारानी के इस षडयंत्र से मुझे निस्तेज नहीं किया जा सकता। जब तक आपकी वंश परम्परा में त्रिगर्तों को पराजित करने की शक्ति नहीं है, तब तक कीचक का अपमान करने का साहस आप कर ही कैसे सकते हैं?

विराट

आप यह कह क्या रहे हैं? क्या हम कभी भी आपका अपमान कर सकते हैं? सैरन्ध्री तो बड़े अच्छे स्वभाव की समझदार स्त्री है।

कंकभट्ट

इसीलिये महारानी का उस पर अधिक प्रेम है।

[नेपथ्य में—महारानीजी! मैं आपके पैरों पड़ती हूं, आंचल पसारकर भीख मांगती हूं। इस गरीब गाय को उस दुष्ट भेड़िये के पंजों से बचाइये]

कीचक

[उठकर]

महाराजाधिराज विराट! इस मत्स्यपुरी में, आपके महल में मेरे नौकरों के सामने कोई दासी मुझे भेड़िया कहे और आप सब उसे अच्छे स्वभाववाली कहकर उसका बखान करें! बड़ा आश्चर्य है! और आश्चर्य भी काहे का महारानीजी, आपका षडयंत्र पूरी तौर से समझ लिया। सैरन्ध्री को मेरी सेवा में नियुक्त न करके और फिर उसीके मुंह से मुझे भेड़िया कहलवाकर मुझे नौकरों के सम्मुख अपमानित करने के लिये भोज का यह नाटक रचा गया है। मैं यह चला। ऐसा मूर्ख नहीं हूं कि यह बाट जोहते बैठा रहूँ कि वह दासी यहीं आवे और सबके सामने मुझे अपमानित करे। अरे विराट! पहले स्मरण तो करो कि इस मत्स्य देश पर कीचक के कितने उपकार है। फिर अपनी पत्नी को इतना अधिक प्रोत्साहन देना। मेरे बाहुबल से तुम्हारा यह डगमगाता सिंहासन यदि स्थिर न हो गया होता, तो तुम्हारी रानी त्रिगर्तों की सेना के किसी क्षुद्र सारथी की रखेल बनकर नाचती फिरती।

विराट

महाराजा कीचक! आपने यह कैसा सन्देह पाल लिया! अभी थोड़ी देर में मैं आपको भरोसा........

कीचक

मेरी शक्ति कितनी प्रचण्ड है, इसे ठीक-ठीक समझ लो। यदि मैं चाहूँ, तो यह मत्स्यपुरी तो क्या, संसार की किसी भी सुन्दरी को अपनी रंगशाला में अपने बाहुबल से खींचकर ला सकता हूँ। सुनो राजा विराट, जिस वीर का यह प्रण है कि पांडवों की पटरानी द्रौपदी को अपनी रखेल बनावे उसे तेरे महल की क्षुद्र दासी नकारात्मक उत्तर दे! सोचो, इसका क्या भयंकर परिणाम हो सकता है। बस, अब मैं यहां से जाता हूं। यदि चार दिनों के भीतर सैरन्ध्री मेरे रंगमहल में नहीं आती, तो फिर आज मेरा जो अपमान किया गया है........अच्छा, अब मैं कुछ नहीं कहता। जो करना हो, सो सोचकर करो।

[जाता है]

विराट

यह क्या है, साधारण-सी बात पर इतना क्रोध! अरे मैत्रेय, तनिक साथ तो चल, हम महाराजा कीचक को समझावें-बुझावें।

[प्रस्थान]

मैत्रेय

[जाते हुए]

मेरे सारे ग्रह आज उल्टे पड़े मालूम होते हैं। नहीं तो छप्पन प्रकार के भोजन अनखाये छोड़कर केवल आँखों देखी तृप्ति ही मेरे भाग्य में क्यों होती!

[प्रस्थान]

[सुदेष्णा सैरन्ध्री का हाथ पकड़कर उसे खींचती हुई लाती है]

सैरन्ध्री

महारानीजी! मैं आपके पैरों पड़ती हूं, आँचल पसारकर भीख माँगती हूँ, इस गरीब गाय को उस निर्दय भेड़िये के हाथों न सौंपिये।

सुदेष्णा

ज्ञात होता है, महाराजा कीचक की सवारी चली गई। वे क्रोधित होकर गये हैं। अरे सैरन्ध्री, तुझ दासी के कारण महाराजा कीचक अपमानित और क्रोधित होकर चले जावें, यह क्या तुझे शोभा देता है? भाभीजी, आप तो उनसे कुछ कहतीं। पर ये सड़ी-गली दासियां ही ऐसी मदमस्त हो गई हैं कि इनका मिजाज ही नहीं मिलता। सैरन्ध्री, जा, तू सीधी महाराजा कीचक के महल में जा। उनके पैरों पड़, उनके सामने नाक रगड़ और उनसे हाथ जोड़कर कह कि मैं आपकी दासी बनने के लिये स्वयं आ गई हूँ।

सैरन्ध्री

महारानीजी! आप मुझ पर क्रुद्ध क्या हुईं, जैसे परमेश्वर ही मुझसे अप्रसन्न हो गया। दुर्भाग्यवश मुझ पर बुरे दिन आये और मुझे अपना समय आप सरीखी साध्वी रानी की सेवा में बिताना पड़ रहा है, तो भी मुझे धर्म का, नीति का और मर्यादा का ध्यान है। अपने पातिव्रत धर्म को भंग करने का यह पतित कार्य करने को मुझसे क्यों कह रही हैं? आप स्वयं पतिव्रता हैं, तब मुझे गर्त में गिराने का यह कलंक अपने सिर पर क्यों लेती हैं? आपकी सद्‌गुणों के प्रति अभिरुचि है, धर्म पर अटूट श्रद्धा है और निस्सहायों पर असीम सहानुभूति है। यह सुनकर ही तो अपनी विपत्ति में आपका आश्रय लेने आई। जब मैं नौकरी पर आई, तभी मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि मैं कोई ऐसा काम नहीं करूंगी, जो मुझे अपने पति के प्रेम से वंचित करे और पर पुरुष की दासी बनने को बाध्य करे। उस समय आपने मुझे अपनी छोटी बहन कहकर मेरी मर्यादा की रक्षा करने का वचन दिया था।

सुदेष्णा

यह मैं कुछ नहीं जानती। तुझे इसी क्षण महाराजा कीचक के रंगमहल में जाना होगा।

सैरन्ध्री

महारानीजी! आप अपने वचन भूल गईं, इसका दोष मैं आपको क्या दूं! कदाचित यह मेरे पूर्व जन्म के किसी महान् पातक का परिणाम है। नहीं तो, आपके समान महासाध्वी नारी के धर्मभीरु अन्तःकरण में ऐसे विचार क्यों आते, जो किसी कुलटा को ही शोभा देते हैं?

कंकभट्ट

महारानीजी ! इस समय सैरन्ध्री अपने आपे में नहीं है । उसे सन्ताप ने घेर लिया है । इसलिए, यदि महाराजा कीचक के या आपके सम्बन्ध में उसके मुख से कोई अविचारपूर्ण शब्द निकल पड़े हों, तो आपको क्षमा करना चाहिये । उसकी प्रार्थना का केवल यह आशय है कि यदि महाराजा कीचक के समान प्रतापशाली पुरुष कभी विकारग्रस्त हो सकते हैं, उस समय उन्हें परम्परित सद्गुणों की ओर परावृत्त करने का कार्य आपके समान पुण्यमयी पतिव्रतायें ही कर सकती हैं । महाराजा कीचक को धर्माधर्म समझाकर उनका विवेक जाग्रत करना आपका ही कर्त्तव्य है ।

सुदेष्णा

भाभी, मैं तो बड़े असमंजस में पड़ गई हूँ । महाराजा कीचक को किसी दासी की प्रशंसा कहाँ तक रुचेगी, कौन जाने ! और सैरन्ध्री से भी उसकी इच्छा के विरुद्ध विलास भवन में जाने को भी कैसे कहूँ, तू बता न भाभी ?

सैरन्ध्री

रानीजी ! आप और महारानी जी इस मत्स्य देश में पतिव्रता मानी जाती है । इस समय यद्यपि मैं कालचक्र में फँसी एक अभागिन हूँ, तो भी आपके समान साध्वी नारियों के आचरण का मन से अनुकरण करना चाहती हूँ ।

[पैरों पड़कर]

मुझे अपनी एक अनाथ सन्तान समझिये । मेरी बात से आपके पति का दिल टूटेगा, यह सोचने के पहले आप कल्पना करें कि जैसी विपत्ति मुझ पर आई है, वैसी विपत्ति यदि महारानी सुदेष्णा पर आ पड़े, तो उनके पति को, जो आपके धर्मबन्धु हैं, कितना दुःख होगा ! और महारानीजी, आप सोचें कि जैसी आज्ञा आप इस असहाय दासी को दे रही है, यदि वैसा ही आदेश रानी रत्नप्रभा पर आन पड़े, तो एक पतिव्रता नारी होने के नाते उनका हृदय दुःख से कितना अधिक प्रज्ज्वलित हो उठेगा ! आप दोनों ही साध्वी और चरित्रवती हैं । संसार में आपसे अधिक यह कौन समझ सकता है कि कुलवती स्त्रियों को पातिव्रत भंग की अपेक्षा मरण कितना अधिक प्यारा होता है । इसलिये, मैं आँचल पसारकर भीख माँगती हूँ कि आप ऐसा न समझें कि किसी दासी

को आप आदेश मात्र दे रही हैं वरन् यह समझें कि अपने ही समान किसी दूसरी पतिव्रता को रखेल बनाने को बाध्य कर रही हैं। प्रार्थना है कि आप मेरी ओर ऐसी स्नेहमयी दृष्टि रखें, जैसी एक पतिव्रता दूसरी की ओर रखती है। विनती है कि क्षण भर के लिये आप ऐसी उदार बनें कि भूल जावें कि आप स्वामिनी हैं और मैं दासी हूँ। कुलीन स्त्रियाँ जिस प्रकार दूसरी कुलवती नारियों की सहायता करती हैं, उसी प्रकार आप मेरी सहायता करें। नारी के सहज धर्म का आप पालन करें और धर्म की इस बहन के पातिव्रत की रक्षा करें।

सुदेष्णा

अच्छा सैरन्ध्री, उठ, व्यर्थ दुःखी मत हो। मैं जानती हूँ, तू गुणवती है और समझदार है। इसलिये, मैंने पहले दिन ही महाराजा कीचक के प्रस्ताव पर टाल-मटोल कर दी थी, परन्तु इसे वे अपना अपमान समझ बैठे। जब मुझे यह मालूम हुआ, तो कल मैंने उनसे वैसा वचन दे दिया था। अब तो इन सारी बातों में राजनीति आती दिखाई देती है। और जब प्रश्न राजनीति का हो जाता है, तब किसी के सद्गुणों का मूल्य नहीं आँका जाता, यह तो तू जानती ही है।

कंकभट्ट

उचित तो यह है कि राजनीति और धर्मशीलता साथ ही साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर चलें। यह अनुचित है कि राजनीति, धर्म भावना का गला घोंटे। राजकाज करनेवाले इसे न भूलें, इसीलिये तो आप सरीखी साध्वी देवियों को महारानी पद पर अभिषिक्त किया जाता है। यदि स्त्रियाँ पुरुषों की निरंकुश वृत्ति को नियंत्रित न करें, तो ब्रह्मा की चतुरता ही व्यर्थ हो जावे, क्योंकि उसने तो स्त्री जाति को पुरुष जाति पर लगाम लगाने के लिये ही जन्म दिया है।

सुदेष्णा

मै इन सब बातों को समझती हूँ, परन्तु इस समय जो समझ में नहीं आता, वह यह कि मैं करूँ तो क्या करूँ।

रत्नप्रभा

महारानीजी! मुझे इस सैरन्ध्री की ओर देखकर बड़ा दुःख होता है। उनके

कहे अनुसार यदि यह तैयार हो जाती, तो मैं भी उनकी इच्छा के आड़े नहीं आती। मैं केवल यह कहकर चुप रह जाती कि ऐसा सुन्दर रूप इस दासी के बदले ईश्वर ने किसी पतिव्रता को दिया होता, तो अच्छा होता। परन्तु, इसकी धार्मिक भावना को देखकर, सच पूछिये तो मुझे ऐसा लगता है कि यह मेरी बहन ही है। सैरन्ध्री ! अच्छा, अब तू चिन्ता न कर। उन्होंने चार दिन का अवकाश दिया है, इस बीच में मैं उनका यदि मन बदल डालूं, तब तो ठीक हो गया न ?

सुदेष्णा

रानीजी ! आप मन में ठान लें, तो क्या नहीं हो सकता !

[पटाक्षेप]

दृश्य तीसरा

[एक मार्ग । विद्याधर बगल में पोथी दबाये हुए तथा सिद्धपाक रसोइया हाथ में करछुल-बटुआ लिये हुए और मुँह में तमाखू भरे हुए प्रवेश करते हैं]

सिद्धपाक

अरे, इधर आ न बेटा विद्याधर । चकमा देकर भागने की सोच रहा है ! इधर आ । आखिर इतनी फुर्ती से कहाँ जा रहा है ?

विद्याधर

आ गया । जल्दी काम बता । मुझे गुरुजी के घर जल्दी पहुँचना है ।

सिद्धपाक

रहने दे । मुझे सब मालूम है । इतनी जल्दी मचाने की आवश्यकता नहीं है ।

विद्याधर

अरे भइया, जरा दूर से ही बातें करो । देखो, मेरी पोथी पर तुम्हारे थूक के छींटे आन पड़े ।

सिद्धपाक

[तमाखू थूककर]

हो जाता है, भूल से ऐसा हो जाता है । अब नहीं होगा ।

विद्याधर

छिः, बड़ा घिनौनापन है ! रसोई पकाते समय क्या ऐसे करते हो ?

सिद्धपाक

अरे, कल बड़ा आनन्द आ गया। एक अनुकीचक के घर पर महाराजा कीचक का निमन्त्रण था। मांस की कढ़ी पक रही थी। उसमें हमारा यह मुखरस ठीक ऐसा ही जा पड़ा। पश्चात्, कीचक तथा अनुकीचक इतनी रुचि से कढ़ी फुरक रहे थे कि क्या बतायें!

विद्याधर

छिः-छिः, कैसा गन्दापन है। गुरुजी कह रहे थे कि कलयुग आरम्भ होनेवाला है, सो सच होते दिखता है।

सिद्धपाक

मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। कल ही तो, बल्कि आज ही सबेरे, नहीं-नहीं दो-तीन मास पहले, यह कलयुग आरम्भ हुआ है। उस समय पाताल कुरु देश का एक मांत्रिक हम रसोइयों और पंडों के अड्डे पर आया था, उसीने हमें यह ताम्रमुखी पत्ती दी। उसे हमने पान के साथ खाई।

[तमाखू खाता है]

और एक-दूसरे पर थूक के ऐसे छींटे उड़े कि बस! उस पाताली मन्त्री ने खूब तालियाँ पीटीं और कहा कि कलयुग आरम्भ हो गया। फिर क्या था तुरन्त ही कलयुग आरम्भ हो गया। जब से यह कलयुग शुरू हो गया है, तब से हम रसोइयों और पडों को यह ताम्रमुखी पत्ती खाये बिना चैन ही नहीं पड़ती।

विद्याधर

कैसी है ये ताम्रमुखी? मैं भी देखूँ, पर दूर से, दूर से। वह मुझे कहीं छू न जाय, नहीं तो मेरे शरीर में कलि का प्रवेश हो जायगा!

सिद्धपाक

बड़ा आया कहीं का छुआछूतवाला! जैसे मेरा थूक तुझ पर उड़ ही नहीं रहा है?

विद्याधर

इसे ताम्रमुखी क्यों कहते हैं ?

सिद्धपाक

यह नाम उसी मांत्रिक ने बतलाया है। पातालवासी ताम्रों के मुख में यह सदा जमी रहती है, इसीलिये इसे ताम्रमुखी या तमाखू कहते हैं। ले न, थोड़ी तू भी ले।

विद्याधर

छिः, मैं उसे छुऊँगा भी नहीं !

सिद्धपाक

अरे जा ! जब कलयुग जोर बाँधेगा, तब तेरे गुरुजी भी पढ़ाते समय इसी पत्ती का रस चूसते डटे रहेंगे। अच्छा हाँ, मैं तुझसे यह कहनेवाला था कि तू अपनी बगल में यह पोथी दबाये कब तक फिरेगा ? कलयुग प्रारम्भ हुए दो-तीन माह हो गये। अब तो हम रसोइयों या उन मदिरा-विक्रेताओं की जितनी प्रतिष्ठा है उतनी तुम विद्वान और पंडितों की नहीं।

विद्याधर

हाँ भैया, अब हमें कोई नहीं पूछता। हमारे गुरुजी और अन्य बड़े-बड़े पंडित कल महाराजा कीचक को आशीर्वाद देने गये थे। द्वार पर ही उन्हें दो घंटे तक ठहरना पड़ा। अन्त में उनके नाम यह सन्देश आया कि इन्द्रप्रस्थ में धर्मराज के महल में इन पंडितों ने भोजन पा-पाकर उन्हें वनवास दिलाया। कीचक इन पंडितों के बहकावे में आकर अपने आपको डुबाना नहीं चाहता।

सिद्धपाक

तुम यदि बहुत पढ़ भी गये, तो भी क्या होनेवाला है ? महाराजा कीचक की हजार खुशामद करने पर उसके किसी चपरगट्टू के मातहत कोई छोटी-मोटी नौकरी मिले, तो मिले। इसीलिये, भाई मेरे, तुझसे कहता हूँ कि फेंक दे यह पोथी और या तो यह करछुल हाथ में संभाल या कोई शराब की भट्टी खोल दे।

विद्याधर

हम ठहरे जाति के ब्राह्मण। शराब की दूकान का काम अपने ताबे का नहीं। कहते हैं कि ग्राहक के साथ दूकानदार को भी थोड़ी पीना पड़ती है!

सिद्धपाक

ठीक ही कहते हैं कि तुम पंडितों में हम रसोइयों के बराबर बुद्धि नहीं। अरे, तू ब्राह्मण है, तो सीलबन्द बोतलें बेचा कर। दूकान भर तो खोल ले! फिर तो स्वयं महाराजा कीचक अथवा उनके चपरगट्टुओं की कृपा अपने आप बरसेगी। यदि तुझसे यह न बन सके, तो फिर यह करछुल ही हाथ में ले ले। तब भी तुझे किसी पंडित से ज्यादा वेतन मिलेगा। अरे, बड़ी देर हो गई। अच्छा, मैं जाता हूँ।

विद्याधर

अच्छा, केवल एक बात! तुझे वल्लभ पंडित के मातहत जो नौकरी मिलने-वाली थी, उसका क्या हुआ?

सिद्धपाक

तू है तो महापंडित, पर प्रश्न ऐसा करता है, जैसे सो रहा हो! अरे, जिस दिन महाराजा कीचक आये, उसी दिन से मैं नौकरी पर हूँ।

विद्याधर

हमारे गुरुजी की पहुँच अब कीचक या उसके चपरगट्टुओं के पास नहीं रह गई। तुम्हारी पुरानी पहचान है, इसीलिये वल्लभ पंडित के मारफत तू ही मुझे कहीं चिपका दे।

सिद्धपाक

फिर कभी फुरसत से मिलना मुझसे, तब सोचूँगा। पर देख, पहले यह पोथी फाड़कर फेंक दे।

[प्रस्थान]

विद्याधर

यह सच ही कहता है। यथा राजा तथा प्रजा। महाराजाधिराज विराट तो अब नाममात्र के महाराजा हैं। सिंहासन पर बैठते हैं और उठते हैं। सच पूछो, तो मत्स्य देश में कीचक और उसके चपरगट्टुओं की ही सत्ता है। अब हमारे सरीखे पेटार्थी लोगों को तो पढ़ाई छोड़ ही देना चाहिये। गुरुजी के सामने ही अब यह पोथी रख दूंगा और उन्हींसे पूछूंगा कि कृपा कर बताइये कि मैं मधुशाला खोलूँ या रसोइये की करछुल हाथ में लूं अथवा सिद्धपाक की चापलूसी कर कोई नौकरी प्राप्त करूं ?

[प्रस्थान]

दृश्य चौथा

[रानी रत्नप्रभा का महल । रत्नप्रभा पलंग पर बैठी है]

रत्नप्रभा

मन्दहासिनी, ओ मन्दहासिनी ! तनिक इधर तो आ ।

मन्दहासिनी

आज्ञा रानीजी ।

रत्नप्रभा

सखी, तू जानती तो है कि ये आभूषण मैं इस समय नहीं पहनती । यह फूल की माला रात को तो मैं छूती तक नहीं हूँ । यह बात क्या तुझसे प्रतिदिन कहना चाहिये ! इतनी-सी बात तुझे याद कैसे नहीं रहती ?

मन्दहासिनी

रानीजी, जिस दिन से महाराजा हस्तिनापुर से लौटे, उसी दिन से मैं ये आभरण और ये हार रात्रि के समय यहाँ रखने लगी हूँ ।

रत्नप्रभा

जब तक यह निश्चय न हो जाये कि उनकी सवारी मेरे महल में पधारेगी, तब तक ये पुष्पहार और ये आभरण मेरी शय्या के पास मत रखा कर । उन्हें लौटे आज छः दिन हो चुके । राजनीति में ऐसे फँसे हैं कि मुझसे एक बोल तक बोलने का समय नहीं मिला । तब यह शृङ्गार किस काम का ? इसे दूर ले जा ।

[मन्दहासिनी हारों और आभूषणों की थाली लेकर जाती है । दूसरी ओर से कीचक दूसरी थाली लेकर रत्नप्रभा के पीछे आकर खड़ा हो जाता है]

जिनके लिये शृङ्गार किया जाता है, यदि वे ही समीप न हों, तो ये निगोड़े आभूषण किस काम के ?

कीचक

मैं समीप ही तो हूँ। और ये आभूषण भी दूर नहीं गये।

रत्नप्रभा

यदि स्त्री का प्रमुख आभूषण समीप हो, तो उसे दूसरे गहनों की क्या आवश्यकता ? हस्तिनापुर से लौटे आपको कितने दिन बीत चुके ! और इस क्षुद्र दासी की याद आपको आज आई ?

कीचक

यह कैसे हो सकता है कि याद न आये ! हम तो हस्तिनापुर में भी इसी देवी का स्मरण हर क्षण किया करते थे। उसका स्मरण हो आना तो स्वाभाविक ही है।

रत्नप्रभा

परन्तु, मेरे महल तक चार कदम तक चलने में आपको छः-सात दिन लग गये ?

कीचक

हाँ, लग तो गये। कारण यह है कि देवी के दर्शन को आते समय एक-एक कदम उठाने में एक-एक सोच-विचार करना पड़ता है। रत्नप्रभा किस आभूषण के लिये रूठी होगी, यह सोचकर जब तक वह बनवाया जाय, तब तक किसी दूसरे अलंकार का स्मरण हो आता है। देवी, क्रुद्ध न हों, पूरा प्रबन्ध करने में कई दिन लग जाते हैं।

रत्नप्रभा

मुझे भय था कि इसी प्रकार सोच-विचार में वर्ष पर वर्ष बीतते गये, तो कहीं पूरा जीवन ही न समाप्त हो जाये !

कीचक

प्रिये ! इतने दिनों जो मैं तेरे महल में नहीं आ पाया, सो इसलिये कि शास्त्र की आज्ञा है कि राजा या आराध्य के सम्मुख रीते हाथों नहीं जाना चाहिये। तू तो जानती है कि मैं केवल भारतेश्वर सुयोधन को ही राजा मानता हूँ और केवल तुझे ही अपनी आराध्य देवी। सच मान, मैं असत्य नहीं कह रहा हूँ, न तेरे मुख पर तेरी प्रशंसा कर रहा हूं।

रत्नप्रभा

नादान नारियाँ भले ही किसी मनुष्य की बातों पर रीझ जायें, पर मैं तो उसे उसके कृतित्व की कसौटी पर कसकर परखना जानती हूँ।

कीचक

अच्छी बात है। तू मेरे बोलों पर भरोसा मत कर।

[आभूषण दिखाकर]

मेरी कृति पर तो भरोसा कर। यह थाली वह नहीं है; जो तेरी दासी ले गई है। यह हार भी वह नहीं है, जो तेरी दासी ने बनाया था। आ, यहाँ पास में आ जा। मेरे काम को अपनी कसौटी पर कस डाल। देख, ये आभूषण द्रौपदी के हैं। कुछ दिनों में द्रौपदी मेरे रंगमहल में आ रही है। अरे क्यों, मुंह क्यों फेर लिया ?

रत्नप्रभा

हम नारियों की बुद्धि ही कितनी ! मुझे अवश्य ऐसा लगता है कि संसार का सारा बड़प्पन आप में समाहित हो जाये; परन्तु, किसी अन्य की स्त्री को दासी बनाकर आपकी शोभा न बढ़े।

कीचक

पगली, बिलकुल पगली, रत्नप्रभा ! तू क्या जाने कि द्रौपदी तो क्या, कोई बड़ी से बड़ी अप्सरा मेरे विलास-गृह में आ जावे, तो भी मेरी सच्ची आराध्य देवी तो तू ही है।

रत्नप्रभा

केवल मुंह देखी बातें सुन लीजिये ! रंगमहल में तो प्रतिदिन नई दासी आवे और आराध्य देवी से बात करने के लिये पाँच-पाँच, सात-सात दिन तक समय ही न मिले !

कीचक

इतने दिनों मैं नहीं आ सका, यह ठीक है, पर उसका कारण भी तो सुन । द्रौपदी के ये आभूषण कुरुदेश की शैली में गढ़े गये थे । उन्हें इस योग्य बनाने में कि वे इस मत्स्य देश के रत्न का शृङ्गार हो सकें, इतने दिन बीत गये । इस देर के लिए तू मुझे यह दण्ड दे कि मैं ये आभरण और हार तुझे अपने हाथ से पहनाऊँ ।

[घुटने टेककर]

इन उपकरणों से आराध्य देवी की पूजा करने का अधिकार तो इसी भक्त को है ।

रत्नप्रभा

[उठकर दूर खड़ी हो जाती है]

मुझे नहीं चाहिये ये गहने, मुझे कुछ नहीं चाहिये । ये मुंह देखी बातें मैं भली-भाँति समझती हूँ । परसों इतनी भीड़ में मेरे सामने लज्जा त्यागकर आपने उस सैरन्ध्री के लिये इतना हठ किया । और अब मेरी यह प्रशंसा ! कोई अनजान इसे सुन ले, तो यह समझे कि एक पत्नीव्रत की शिक्षा अयोध्या के राजा राम ने आपसे ही ग्रहण की होगी !

कीचक

मैं तो जानता था कि तू रूठेगी । इसीलिये, इन आभूषणों का प्रबन्ध करके ही तेरे पास आया, भले ही इसमें देर हो गई हो । यह देख, एक नये प्रकार की पायल है । यहाँ की स्त्रियों ने इसे देखा तक न होगा । राजसूय यज्ञ के समय जब अर्जुन काल-यवनों को जीतने के लिए म्लेच्छ देश गया था, तब यवन राज द्वारा दिये गये उपहार में यह रत्न-जटित पायल थी । धर्मराज ने विदेशों से आये हुए अलंकार और

आभरण तो उस समय ब्राह्मणों को लुटा दिये थे, परन्तु इस आभूषण को अत्यन्त सुन्दर और मोहक होने के कारण द्रौपदी ने रख छोड़ा था। तनिक देख तो।

रत्नप्रभा

[आभूषण हाथ में लेकर]

छिः, यह क्या है! इस पायल में तो घुंघरू लगे हैं! ये तो विलास-मन्दिरों की नर्तकियाँ पहनती हैं। कहीं कुलवती स्त्रियाँ इसे पहन सकती हैं?

कीचक

कालयवनों की रानियाँ इसे अपने पैरों में पहनती हैं। द्रौपदी का तो यह बड़ा प्यारा आभूषण है। आजकल तो हस्तिनापुर की सभी सुन्दर स्त्रियाँ इसी प्रकार की पायलें पहनती हैं।

रत्नप्रभा

पहनती होंगी। छोटी-छोटी लड़कियाँ इसे पहनें तो पहनें, बड़ों को ये पायलें शोभा नहीं देतीं।

कीचक

मन्दिर जाते समय प्रौढ़ता का प्रदर्शन आवश्यक है, उस समय इन्हें मत पहनो। परन्तु, विलास-मन्दिर की रात तो अलबेलेपन की रात है।

रत्नप्रभा

होगी अलबेलेपन की रात। मेरी आपसे एक विनती है। उसे आप स्वीकार करें, तो मैं ये पायलें पहनूं, नहीं तो, नहीं।

कीचक

[स्वगत]

स्त्री को गहना मिला कि उसकी ऐंठ गई।

रत्नप्रभा

आप किस सोच-विचार में पड़े हैं ? मेरी विनय सुनेंगे कि नहीं ?

कीचक

एक नहीं, सौ सुनने को तैयार हूँ, पर ज्ञात है कब ?

रत्नप्रभा

कब ?

कीचक

जब मैं यह पायल अपने हाथों से तुम्हारे पैरों में पहना दूँ, तब ! जब इन आभूषणों से आराध्य देवी की पूजा कर लूँ, तब !

रत्नप्रभा

फिर आपको मेरी प्रार्थना सुननी पड़ेगी ।

कीचक

स्वीकार है ।

[उसके पैरों में पायल पहनाने लगता है]

अब तनिक सिंहासन पर चलकर बैठिये, महारानीजी ।

[हाथ पकड़कर पलंग तक ले जाते हुए]

जी हाँ, तो आप ये पायल पहनकर मुझे चलकर दिखाना चाहती थीं ? इसीलिये न, दूर रूठी हुई खड़ी थीं ? तनिक धीरे-धीरे चलो, मेरी महारानी । मुझे लगता है कि

सौन्दर्य के अभिमान से भारी महारानी का हर कदम मेरे अभिमान को रौंदता चल रहा है।

रत्नप्रभा

अब बस करिये न, बहुत हो गया यह विनोद।

[पलंग पर बैठते हैं]

कीचक

अब मैं पहले यह हीरक कंगन करों में पहना दूँ, या यह मोतियों का हार ग्रीवा में डाल दूँ, या यह बेसर नाक में झुला दूँ ?

रत्नप्रभा

आप रहने दीजिये सारा परिश्रम। मैं अपने हाथों से यदि इन्हें पहन लूँ, तो कैसा रहे ?

कीचक

देवी यदि प्रसन्न होकर बोलने लगी हैं, तो पूजा का अधिकार तो भक्त को ही है। और यदि तेरे कोमल करों को कष्ट करना पड़ा, तो मैं भक्त कैसा !

रत्नप्रभा

मेरा निवेदन सुनने का वचन तो आपको स्मरण है न ?

कीचक

हाँ, हाँ, है तो। जिस प्रकार मदमाती हस्तिनी कंटकों के पाश में घिरकर सारी उन्मत्तता भूल जाती है, उसी प्रकार नूपुरों और पायलों की शृङ्खला में फँसकर मदभरी युवती की ऐंठ समाप्त हो जाती है। मेरी बात को काटने की आवश्यकता

नहीं है। मैं तेरा निवेदन अवश्य सुनूँगा। मुझे बेसर तो पहनाने दे।

[पहनाता है]

बैल को यदि नाथ दिया जाय, तो वह नियंत्रण में आ जाता है। इसी प्रकार पति के हाथ से नथनी प ्ननेवाली युवती उसकी इच्छा के विपरीत नहीं जा सकती।

रत्नप्रभा

इन बातों में आप मुझे बहला नहीं पावेंगे। मेरी प्रार्थना तो आपको सुननी ही पड़ेगी।

कीचक

अवश्य। तेरे पैरों में पायलों की बेड़ियाँ हैं, नाक में नथनी है। इसीलिये, इस समय तेरे मुँह से कोई ऐसी बात तो निकल ही नहीं सकती, जो मुझे अच्छी न लगे। कोई न माने, तो शर्त लगाऊँ? मैं कहता हूँ कि अब मुझे किसी बात का भय नहीं। महारानी कृपा कर आदेश दें, सेवक उपस्थित है।

रत्नप्रभा

मैं यही विनती करती हूँ कि आप जो सैरन्ध्री की धुन बाँधे हैं, कृपा कर उसे छोड़ दीजिये।

कीचक

क्यों? यदि मैंने सैरन्ध्री की नियुक्ति रंगमहल में कर दी, तो इसमें तेरी क्या हानि है? कितनी अन्य दासियाँ वहाँ हैं, उन्हींमें यह भी पड़ी रहेगी।

रत्नप्रभा

मैं तो आपसे यह वचन लेकर छोड़ूँगी कि आप सैरन्ध्री का पीछा छोड़ दें, और आपको यह वचन देना होगा।

कीचक

रत्नप्रभा ! तू इतने दिनों से मेरा स्वभाव जानती है। तब यह बड़े आश्चर्य की बात है कि तुझ सरीखी निरुपमा अप्सरा सैरन्ध्री से ईर्ष्या करे !

रत्नप्रभा

ईर्ष्या के कारण मैं यह निवेदन नहीं कर रही। परन्तु, आपके विलास-सदन की दासी बनने के लिये सैरन्ध्री राजी जो नहीं है ! आप जैसे वीर तब उसके साथ मनमानी करें, इसमें कौन-सा पुरुषार्थ है ? सुना है कि चार-पाँच दिनों से उसका करुण क्रन्दन ही नहीं रुक रहा है। पुरुष के अत्याचार से पतिव्रता स्त्री का हृदय कैसा कम्पित हो जाता है, इसे पुरुष कैसे समझेंगे ! नारी का जीवन धारण किये बिना, उन्हें इस दुःख का अनुमान नहीं हो सकता। आपको मुझ पर बड़ा भरोसा है और आप जानते हैं कि मेरी आपके प्रति जो भावनायें हैं, उनमें परिवर्तन नहीं हो सकता। आप सोचें कि सैरन्ध्री की स्थिति में यदि मैं आज रहूँ, तो इस अपमान से आपको और मुझे कितना क्षोभ होगा ? यह बात आप समझें। मैं तो केवल यही कह रही हूँ कि परायी नारी पर अत्याचार करने से आपकी अर्जित कीर्ति पर कलंक लग सकता है।

कीचक

रत्नप्रभा ! तू सच कहती है, पर एक बात भूल रही है। हम राजा हैं, सत्ताधारी हैं और सैरन्ध्री हमारे टुकड़ों पर पलनेवाली दासी है। इसलिये, तेरी और उसकी तुलना नहीं हो सकती। सत्ताधारी, सत्ताधारी ही रहेंगे और सेवक, सेवक ही। यह विषमता तुझे हमेशा ध्यान में रखना चाहिये।

रत्नप्रभा

पर, आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि जो नारी राजवंशिनी नहीं है, वह पतिव्रता भी न रहे !

कीचक

क्यों न सोचूँ ? नहीं तो, कीचक और अनुकीचकों के विलास-सदन इतने ऊँचे उठ ही कैसे सकते थे ?

रत्नप्रभा

जो भी हो, मुझे आपका यह काम बिलकुल अच्छा नहीं लगता। आपने सदा मेरे बोलों को मान्यता दी है। इसी आशा से आपसे मैंने यह निवेदन किया। सोचिये, रावण का क्या हुआ? चौदह भुवन के राजा रावण ने सीता को वन में भटकनेवाले किसी साधारण मनुष्य की स्त्री समझकर हाथ लगाना चाहा। उसका जो परिणाम हुआ, उसे सोचकर सैरन्ध्री का हठ त्याग दीजिये।

कीचक

व्यर्थ! व्यर्थ रत्नप्रभा! तूने इतने वर्ष मेरे साथ व्यर्थ बिताये। मैं स्पष्ट कह चुका हूँ कि यदि सैरन्ध्री को मैं अपने रंगमहल में ले आऊँ, तो तुझे ईर्ष्या नहीं होनी चाहिये। तेरे प्रति जो मेरा प्रेम है, उसे कोई युवती नहीं कि तनिक भी डाँवाडोल कर सके। हाँ, सैरन्ध्री मुझे सुन्दर दिख पड़ी, तो मैंने सहज ही उसे रंगमहल में भिजवाने के लिए कह दिया। परन्तु, जब मैंने यह जाना कि उसकी नियुक्ति जान-बूझकर मेरे यहाँ नहीं की गई, तब यह कीचक चुपचाप बैठनेवाला प्राणी नहीं है। मेरी बात यदि सुदेष्णा ने सुन ली होती, मेरा आदेश यदि सैरन्ध्री ने मान लिया होता, तो मैं तेरी प्रार्थना के अनुसार उसे बिना हाथ लगाये सम्मान सहित उसके पति के घर भिजवा देता; परन्तु... . ...

रत्नप्रभा

यह परन्तु क्यों? इसमें अपमान की बात ही क्या है? ऐसा करने से आपकी कीर्ति दसों दिशाओं में फैल जावेगी और स्वर्गलोक में आपके गीत गाये जावेंगे।

कीचक

धत् तेरे की! यह कैसी मूर्खता है। हम सत्ताधारियों को स्वर्ग की कीर्ति की अपेक्षा इसी दुनिया का ठाठ-बाट अधिक प्यारा है। हमारे बोल कभी रीते नहीं जाते। तीन टके की दासी यदि आदेश टालने लगे, तो राहगीर तुझ पर उँगली उठाकर यह कहेंगे कि यह उस प्रभावहीन पुरुष की स्त्री है। मुझे इसका भी तो सोच-विचार है। इसलिये, हमने जो आदेश दिया, सो अटल हो गया। अब उसका क्या हो सकता है! यदि रत्नप्रभा को हर क्षण अपनी आज्ञाओं को बदलनेवाले वीर

पुरुष की पत्नी कहे जाने का अनुभव होता है, तो मेरे सिंहासन के अर्ध भाग पर बैठने की अधिकारिणी नहीं है। यह सैरन्ध्री किसी दास की स्त्री है। और मान लो, कि नहीं है, किसी प्रसिद्ध रथी या महारथी की पत्नी है, इतना ही क्यों, यदि वह किसी महत्वशाली अनुकीचक की भी अर्द्धांगिनी है, तो भी उसे, जो अवधि मैंने निश्चित की है, उसके भीतर रंगमहल में आना ही होगा—फेर ले, तू भले ही मुँह फेर ले, मेरे आदेश को मान्यता मिलनी ही चाहिये। इसके लिये यदि मुझे रत्नप्रभा का प्रेम सदा के लिये खोना भी पड़े, तो मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं !

[पटाक्षेप]

द्वितीयांक समाप्त

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—राजमहल का एक आँगन

[मैत्रेय और सौदामिनी का प्रवेश । कीचक की दो दासियाँ भी आती हैं]

मैत्रेय

ऐ छोकरियो ! तुम लोग कहाँ थीं ? तुम्हारे स्वामी कहाँ हैं ? चंवर हाथ में लिये इस आँगन में इधर से उधर क्या हो रही हो ?

एक दासी

महाराजा कीचक की सवारी यहाँ आनेवाली है, इसलिये हम पहले से यहाँ आ गई हैं ।

दूसरी दासी

स्वामी ने हमें इसलिये यहाँ बुला भेजा है कि देखें, महारानी को बृहन्नला संगीत कैसे सिखाती है ।

मैत्रेय

अच्छा, तो आओ । तुम्हें भी कुछ गीत गाना आता है ?

सौदामिनी

गाने के लिये ठीक गले की आवश्यकता होती है । क्या तुम्हारा कण्ठ सुरीला है ?

मैत्रेय

गाने के लिये गला क्यों ठीक होना चाहिए ? महाराजाधिराज ने अपना मैत्रेय तो मुझे बाद में बनाया। पहले तो संगीत शिक्षक मैं ही नियुक्त किया गया था। जब मैं शिक्षा देता था, तब भी किसी संगीत सीखनेवाली के लिये यह नियम मैं लागू न करता था कि उसकी कोकिल के समान मीठी आवाज होनी ही चाहिये। गानेवाली गर्दभ सुर में भी गाये, तो संगीत का उससे क्या बिगड़ता है !

एक दासी

आपकी कक्षा में मैं होती, तो बहुत अच्छा होता।

दूसरी दासी

अभी भी यदि आप शिक्षा देने को तैयार हों, तो हम गाना सीखने के लिये आवें ?

मैत्रेय

मेरे संगीत में तुम्हारा गला फूटा भी हो, तो उसका भी प्रवेश है। केवल तुम्हारे पैर मजबूत रहना चाहिये; क्योंकि मेरा संगीत पैरों की थिरकती हुई ताल पर गाया जाता है। यह थिरकता हुआ संगीत लँगड़े को नहीं सिखाया जा सकता।

एक दासी

हमारे पैर मजबूत हैं।

दूसरी दासी

एक-दो मील तो हम यों ही दौड़ लेती हैं।

मैत्रेय

तो फिर थिरकते हुए संगीत की तरह जरा बुलबुल चाल में दौड़कर तो दिखाओ।

[दासियाँ दौड़ती हैं]

सौदामिनी, तुझसे अधिक चालाक तो ये नई दासियां हैं ! तुझे इतने दिनों से सिखा रहा हूँ, पर सब औंधे घड़े पर पानी ही रहा।

सौदामिनी

पुरुषों से संगीत सीखने में मुझे लाज लगती है। अब मैं बृहन्नला से संगीत सीखूंगी। वैसे, आप सरीखे बूढ़ों से सीखने में कोई बात नहीं है।

मैत्रेय

अच्छा हुआ, यह बृहन्नला आ गई; नहीं तो, इस बुढ़ापे में मैं ही रगड़ा जाता। किसी लड़की को संगीत सिखाना होता, तो कहा जाता—"बुलाओ संगीत-शाला के उस बूढ़े को।" जैसे बूढ़े पुरुष ही न होते हों !

सौदामिनी

मुझे तो लगता है कि नगर में बृहन्नला के आने से लड़कियों को हानि ही हुई है।

मैत्रेय

कैसे ?

सौदामिनी

क्योंकि वे आपके समान वृद्ध और अनुभवी गुरु की शिक्षा से वंचित हो गईं हैं।

मैत्रेय

तुमने तो मेरी प्रशंसा का आज पिटारा ही खोल दिया है ! लगता है, मुझसे कुछ काम निकालना है।

सौदामिनी

काम तो कुछ नहीं। पर हां, समझिये कि थोड़ा-बहुत काम है भी। आपकी कंकभट्ट से मित्रता है। मुझे यह शंका है कि सैरन्ध्री का कंकभट्ट से सम्बन्ध है।

मैत्रेय

समझ लो कि कंकभट्ट सैरन्ध्री पर रीझा है। तो फिर ?

सौदामिनी

मुझे महारानी ने आज्ञा दी है कि सैरन्ध्री को समझा-बुझाकर, उसे महाराजा कीचक के रंगमहल में ले जाऊँ। इसलिये, मैंने सोचा कि यदि कंकभट्ट की सहायता से सैरन्ध्री को समझाया जाये तो...........।

मैत्रेय

अरी, कंकभट्ट तो है गरीब धार्मिक ब्राह्मण। इतना ही है कि उसे तनिक जुआ खेलने की रुचि है। परन्तु.........अरे, ये तो महाराजाधिराज विराट और महारानी सुदेष्णा आ रहे हैं !

[विराट और सुदेष्णा का प्रवेश]

विराट

मुझे बड़ा आश्चर्य है, कि महाराजा कीचक ने इस छोटी-सी बात को कितना तूल दे दिया। कोई दासी यदि रंगमहल में न जाना चाहे, तो वास्तव में वह प्रशंसा की पात्र है। कीचक तुम्हारे भाई हैं। कीचक और अनुकीचक मेरे राज्य के आधार-स्तम्भ हैं। इसलिये, वे मुझे प्राणों से अधिक प्रिय हैं। पर, ऐसी क्षुद्र बात पर इतनी हठ भी किस काम की !

सुदेष्णा

यह छोटी बात कैसे है ? महाराजा कीचक ने जो चार दिनों की अवधि दी थी, वह भी आज, समाप्त हुई। अब क्या होगा ? सोचकर मुझे भय लगता है। स्त्रियों के कारण संग्राम छिड़ जाते हैं। आपको स्मरण है, मेरे स्वयंवर के समय कितने राजपुत्रों से युद्ध करके आपको विजय प्राप्त करनी पड़ी थी !

विराट

राजकन्या के लिये युद्ध हो सकता है, मैं यह मानता हूँ। परन्तु, दासी के लिये युद्ध ? ऊँहूं, असंभव। हम सत्ताधारी राजा अभी इतने मूर्ख तो नहीं हो गये हैं !

सुदेष्णा

यदि इसी प्रकार कीचक का स्वभाव शान्त होता, उतावला और क्रोधी न होता, तो इतनी-सी बात पर इतना बखेड़ा खड़ा न हो जाता। पर, आप तो यह जानते हैं कि वह हठी है, हठी।

विराट

सच है कि वह हठी है। पर क्यों रे मैत्रेय, यह सैरन्ध्री इतनी हठीली क्यों है ?

मैत्रेय

मै भी तो यही पूछता हूँ। जब महाराजा कीचक स्वयं उस पर इतने प्रसन्न हैं तब इसे हठ क्यों करना चाहिये। हाँ, यदि यह इन्द्रप्रस्थ में, जैसे पहले थी, महारानी द्रौपदी की सेवा में ही रही आती, तो इतना हठ न करती।

विराट

क्यों ?

मैत्रय

जिसकी स्वामिनी के पाँच-पाँच पति हों, तो वह दासी एक-पति-निष्ठा की शान कैसे बघार सकती थी !

सुदेष्णा

अरी सौदामिनी, तूने सैरन्ध्री को समझाया-बुझाया कि नहीं ?

सौदामिनी

सैरन्ध्री वसन्त-उद्यान में फूल तोड़ने गई है। कंकभट्ट भी वहीं गये है। इसलिये,

मैं मैत्रेयजी को साथ लेकर उसी ओर तो जा रही थी, कि महारानी की सवारी यहीं उपस्थित हो गई।

विराट

हम भी वसन्तोद्यान की ओर जा रहे हैं। सैरन्ध्री को हमारे पास भेज दे। हम स्वयं उससे बात करेंगे और हित की दो बातें कहेंगे।

[विराट और सुदेष्णा का प्रस्थान]

मैत्रेय

सच कहूँ सौदामिनी, यदि सैरन्ध्री के स्थान पर तू होती, तो आज तेरा कितना बोलबाला होता ! महाराजाधिराज विराट तुझसे प्रार्थना करते और महारानी सुदेष्णा तेरे लिये कुटनी का काम करतीं !

सौदामिनी

मैत्रेयजी, सच तो बताइये, सैरन्ध्री और मेरे रूप में क्या इतना बड़ा अन्तर है ? मुझे तो लगता है कि आज नहीं तो कल महाराजा कीचक मुझ पर रीझेंगे अवश्य। आप क्यों नहीं बोलते ? क्या मैं सैरन्ध्री से बहुत बुरी हूँ ?

मैत्रेय

तनिक अपना चेहरा ठीक से मेरी ओर कर। तनिक आँखें फाड़कर देखने दे। भाल विशाल नहीं है, केश उद्दण्डतापूर्वक सामने लहरा गये हैं, उन्हें पीछे कर देना चाहिये, नासिका चिपटी और आवश्यकता से अधिक बड़ी है, इसे छील-छालकर पतली करना पड़ेगा, आँखें सूक्ष्म हैं, आसपास का मांस तथा हड्डियाँ खोद-खादकर लोचनों के सरोवर बढ़ाना पड़ेंगे और यदि यह सब मलमा गालों के गड्ढों में भर दिया गया, तो बस, तू ठीक सैरन्ध्री ही हो गई।

[कीचक और दो दासियों का प्रवेश]

कीचक

कहाँ है सैरन्ध्री ? ओ मैत्रेय के बच्चे, सैरन्ध्री कहाँ है ?

मैत्रेय

कल-परसों की सैरन्ध्री तो यहीं खड़ी है। पर आजकल की सैरन्ध्री.........

कीचक

मैत्रेय, कब किसका उपहास करना चाहिये, यह तुझे बुढ़ापे में भी समझ में नहीं आया ?

मैत्रेय

साठी बुद्धि नाठी। जिस प्रकार मैं इस दासी का उपहास कर रहा था, क्या उसी प्रकार उपहास मैंने आपका भी किया ? क्षमा कीजिये।

कीचक

क्यों री छोकरियो, मैंने तुमसे सैरन्ध्री को खोजने को कहा था न ? पर, तुम्हें उसका पता नहीं लगा ?

एक दासी

मैं उसे नृत्यशाला में खोज आई।

दूसरी दासी

मैं उसे चित्रशाला में ढूँढ़ आई।

एक दासी

संगीत-शाला में भी उसकी पूछताछ कर आई।

दूसरी दासी

पाक-शाला में भी मैं खोज-पड़ताल कर आई।

मैत्रेय

वह राजमहल में कहीं नहीं है। बाहर स्थित बृहन्नला की गायन-शाला में क्या तुमने उसे खोजा? महाराजा, इन छोकरियों से सैरन्ध्री का पता नहीं चलेगा। शिकारी कुत्तों को देखते ही भयभीत खरगोश तुरन्त छिप जाता है, वह समझ लेता है कि इनके पीछे शिकारी आता ही होगा।

कीचक

मैत्रेय! यदि तू निश्चयपूर्वक बतला पावे कि सैरन्ध्री इस क्षण अमुक स्थान पर है, तो तुझे बहुत बड़ा उपहार मिले।

सौदामिनी

सैरन्ध्री इस समय वसन्त-उद्यान में फूल तोड़ रही है।

कीचक

तो फिर, यह ले।

[मोतियों का हार देता है]

मैत्रेय

आपने बिना निश्चित समाचार जाने ही इतना बड़ा उपहार भेंट कर डाला! सैरन्ध्री उस वसन्त-वन में पूर्व दिशावाली झुरमुट में है, कि पश्चिम दिशावाली उपत्यका में है, कि दक्षिण दिशा की ओर स्थित सरोवर के हंसों से क्रीड़ा कर रही है, या उत्तर दिशा में स्थित पानी के झरने से कमल तोड़ रही है, या किसी भवन या झोपड़ी में हार गूँथ रही है; कौन जाने! सैरन्ध्री के लिये महाराजा इतने उतावले है, इसका मुझे ज्ञान न था।

कीचक

चलो वसन्तोद्यान की ओर। सैरन्ध्री का ठीक-ठीक पता लगाना ही होगा।

[कीचक और दासियाँ जाती है]

मैत्रेय

तनिक-सा सैरन्ध्री का पता बताने में तूने मोतियों का हार मार दिया। यदि तू सैरन्ध्री को कीचक के रंगमहल में ले जाने में सफल हो जाय, तो महाराजा कीचक तुझ पर इतने प्रसन्न हो जावेंगे कि सैरन्ध्री के बदले तुझे ही वहाँ रख लेंगे।

सौदामिनी

स्त्रियाँ पुरुषों को इसी प्रकार घेरती हैं। एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी।

[रत्नप्रभा और मन्दहासिनी का प्रवेश]

मैत्रेय

महारानी रत्नप्रभा आ गई। यह महाराजा कीचक की खोज में होंगी। उनका पता बताकर अब मै इनाम प्राप्त करूँगा। खबरदार, तू बीच में मुँह मत मारना। ऐसी चुप रहना, जैसे कि मुँह में तोबड़ा लगा हो।

[उसका मुँह हाथ से बन्द करता है]

रत्नप्रभा

मैं नहीं समझती कि सैरन्ध्री का मन दृढ़ रहेगा। यदि उन्होंने प्रेम निवेदन किया, तो उसका निश्चय टिक पाना कठिन है। उनकी आँखों में ऐसा जादू भरा है कि वे जब देखते है, तो जैसे मोहिनी ही डाल देते है।

मन्दहासिनी

रानीजी, सैरन्ध्री निराली ही स्त्री है। यह सबको ज्ञात है कि उसकी प्रकृति किसी तपस्वी-मनस्वी के स्वभाव को भी मात करती है।

रत्नप्रभा

ठीक है, पर वह कौरवों के दरबार में जो रही है, इसीलिये मुझे आशंका होती है। कौरवों के किसी पूर्वज ने देवयानी से बिबाह किया। आगे चलकर सारा कौरव-

कुल देवयानी की दासी उस राक्षस-कन्या शर्मिष्ठा से उत्पन्न हुआ। इस कुल की सैरन्ध्रियाँ यह भलीभाँति जानती हैं कि स्वामी के हृदय पर अधिकार कर लें और स्वामिनी को घर से बाहर निकाल दें।

मन्दहासिनी

परन्तु, सैरन्ध्री के सम्बन्ध में यह बात नहीं सिद्ध होगी।

रत्नप्रभा

रानी द्रौपदी के स्वयंवर में यह उनके साथ रही है। और तब तक पाण्डवों ने द्रौपदी की कभी उपेक्षा नहीं की। अतएव, माना जा सकता है कि द्रौपदी चरित्रवती होगी। अरी सौदामिनी, तू मुँह में ताला लगाये क्यों खड़ी है ?

मन्दहासिनी

सचमुच रानीजी, इसके मुँह में ताला पड़ा है, नहीं तो इसके मुँह की चकरी कैसे बन्द होती।

मैत्रेय

खबरदार, तू पहले बोली, तो याद रख। रानीजी, आप मुझे क्या पारितोषिक देंगी ? पहले बता दीजिये, नहीं तो मेरे मुँह पर भी ताला जड़ जायगा।

रत्नप्रभा

किस बात का पारितोषिक ?

मैत्रेय

किस बात का ! मैं छोटा-मोटा उपहार नहीं लूँगा। सैरन्ध्री का पता बताने में महाराजा कीचक ने इसे मोतियों का हार दे डाला। आपसे मुझे इससे भी बड़े उपहार की आशा है। नारी पुरुष के समान अनुदार नहीं होती; क्योंकि पुरुषों को

परिश्रम करके अर्जन करना पड़ता है और स्त्रियों को सारे गहने-कपड़े बिना मूल्य प्राप्त होते हैं। इसीलिये तो कह रहा हूं न कि जब तक मुझे यह ज्ञात न हो जावे कि मुझे पारितोषिक में कितने हार मिलेंगे, तब तक मैं बिलकुल नहीं बताऊँगा कि महाराजा कीचक वसन्तोद्यान में सैरन्ध्री की खोज में किस प्रकार भटक रहे हैं।

[मुँह बन्द करके खड़ा हो जाता है]

रत्नप्रभा

मन्दहासिनी ! मुझे वसन्तोद्यान की ओर ले चल। महाराजा सैरन्ध्री को तंग कर रहे होंगे। मुझे ठीक अवसर पर वहाँ पहुंचना चाहिये।

मन्दहासिनी

इस ओर से आइये महारानीजी।

[रत्नप्रभा और मन्दहासिनी जाती हैं। मैत्रेय और सौदामिनी मुँह पर हाथ रखे हुए एक-दूसरे को संकेत करते हुए खड़े हैं]

मैत्रेय

जब तक मुझे पारितोषिक नहीं मिलेगा, मैं मुँह बन्द किये रहूँगा।

सौदामिनी

जब तक आप बोलने की आज्ञा नहीं देते, तब तक मैं भी चुप ही रहूँगी।

मैत्रेय

तो हम गूँगे सरीखे कब तक खड़े रहेंगे ?

सौदामिनी

रानी रत्नप्रभा ने आपको धोखा दिया, तो मैं क्या करूँ ?

मैत्रेय

स्त्रियां बड़ी चतुर होती हैं, और हम मर्द सीधे-सादे ! तभी तो तूने मोतियों का हार फटकार दिया न !

सौदामिनी

बड़े आये सीधे-सादे ! सीधे-सादे तो नहीं होते, आवश्यकता से अधिक होशियार होते हैं ।

मैत्रेय

अधिक होशियारी से ही तो हमारी झोली रीती रह गई । अब कोई ऐसा उपाय बता कि जिससे मुझे पारितोषिक प्राप्त हो सके ।

सौदामिनी

कंकभट्ट से कहकर सैरन्ध्री को राजी कर ।

मैत्रेय

अच्छा, तो अब अपने मुँह पर से हाथ हटा ले । चल, हम वसन्तोद्यान में चलें और कंकभट्ट से मिलें । बता मुझे वसन्तोद्यान का मार्ग ।

सौदामिनी

इस ओर से आइये, मैत्रेयजी ।

मैत्रेय

प्रतिहारी के समान आगे-आगे आवाज देती चल ।

सौदामिनी

अरे धीरे-धीरे मैत्रेयजी, ठोकर लग जायगी । सामने पत्थर है, उस पर गिरे, तो दांत टूट जायेंगे ।

मैत्रय

मेरे दाँत पहले ही गिर चुके हैं। ये दाँत तो नकली हैं। अरे, प्रतिहारी के समान आगे-आगे ललकारती हुई चल।

सौदामिनी

इस ओर से आइये—और तनिक धीरे।

[दोनों का प्रस्थान]

दृश्य दूसरा

[बसन्तोद्यान में कंकभट्ट और वल्लभ एक शिला पर आसीन हैं। सैरन्ध्री समीप ही स्थित है

सैरन्ध्र

मेरे भाल के अंक जन्म से कुछ ऐसे ही हैं कि प्रत्येक बात उलझ जाती है। स्वयंवर के समय पिताजी ने बड़ी अद्भुत प्रतिज्ञा कर ली थी। सभी क्षत्रियों के अपमानित होने की बात खड़ी हो गई थी। भाई को लगा कि कहीं द्रौपदी जीवन भर कुमारी तो नहीं रह जावेगी! मुझे आशंका थी कि वह सारथी पुत्र कर्ण मत्स्य-भेद न करे, इसलिए मैंने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि मैं ऐसे व्यक्ति से विवाह न करूँगी, जिसने निम्न कुल में जन्म लिया हो। और तब वह अभिमानी कर्ण जलते-भुनते अपने स्थान पर बैठा ही रहा। उस समय सूत के उस पूत से मैंने इस तरह छुटकारा पाया, परन्तु इस दुष्ट कीचक से, जो कि मत्स्य देश का सारथी-पुत्र ही है, पिण्ड छुड़ाने का कोई मार्ग नहीं दिखाई पड़ता। इसकी पत्नी रत्नप्रभा बड़ी साध्वी है। उसने कीचक से बहुत कुछ कहा-सुना। महारानी सुदेष्णा ने भी उसे समझाया। मैंने उसे भेड़िया, चाण्डाल और राक्षस कहकर बड़ी गालियाँ दीं, परन्तु उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसीलिये तो कहती हूँ कि संसार में या तो यह रहे, या तो मैं; और दूसरा उपाय नहीं है।

कंकभट्ट

दो में से मुझे एक भी उपाय स्वीकृत नहीं। कीचक को नष्ट करने की बात करना सहज है, पर उसे करके दिखाना कठिन है।

वल्लभ

कुछ कठिन नहीं है। आप आज्ञा भर दीजिये भइया। जिस प्रकार मैंने जरासन्ध को मारा, बकासुर को बगली मारकर यमपुर पहुँचाया, काम्यक वन में किर्मीर दानव

को क्षण भर में समाप्त किया, उसी प्रकार, आप कहें भर तो, जहाँ कहें वहाँ और जिस प्रकार कहें, उस प्रकार, कीचक के सहस्र टुकड़े कर, प्रत्येक अनुकीचक के महल में रखकर उनमें हड़कम्प मचा दूँ।

सैरन्ध्री

ऐसा होगा, तभी आज सरीखी घटनायें फिर न हो सकेंगी।

कंकभट्ट

इस प्रकार उत्तेजित होने से कोई लाभ नहीं। यह तो एक संकट से दूसरे संकट में प्रवेश करना हो जायेगा। तुम्हारी शक्ति अमित है, भीम! प्रत्येक अनुकीचक यदि कीचक के समान मदोन्मत्त भी हो जावे, तो तुममें उन सबका दर्पदलन करने की क्षमता है, परन्तु.........

सैरन्ध्री

तब फिर, किन्तु-परन्तु क्यों? ऐसी ही बातें करके आपने यह वनवास और अज्ञातवास हम पर लादा है। शत्रुओं को यदि ठीक समय पर कुचल दिया जाता, तो यह क्षुद्र सारथी-पुत्र मेरी ओर आँखें फाड़कर देखने का साहस कैसे कर पाता! जो खुले रूप से शत्रु है, उससे दया और नैतिकता बरतने से क्या लाभ! यदि सर्प पर दया करें और उसे न मारें, तो आगे चलकर जिन्हें वह डसेगा, उनकी हत्या हमारे ही माथे तो मढ़ी जावेगी। आज आवश्यकता है कि भावी हत्याओं का पाप सिर पर से टालने के लिये कठोरता और निर्दयता की नीति बरती जावे। मेरी धारणा है कि यही सच्चा मार्ग है।

कंकभट्ट

यह ठीक है कि कभी-कभी न्याय को कठोर और निर्मम बाना धारण करना पड़ता है, परन्तु द्रौपदी, यदि यह कठोरता अपने स्वार्थ के लिये हो, तो चाहे जितनी सोच-समझकर की जावे, ईश्वर अपनी मुद्रा लगाकर उसे पाप घोषित कर ही देगा। भावी सुख के लालच से यदि कोई क्रूर कर्म किया जावे, तो उसका अर्थ लोभ के पाश में फँसने के सिवा और कुछ नहीं है। जब तक न्याय के देवता को यह विश्वास

न हो जावे कि दिये जानेवाले दुःख से उस व्यक्ति का हित हो रहा है, तब तक प्रत्येक क्रूर कर्म पापपूर्ण ही कहा जावेगा।

सैरन्ध्री

तब तो शत्रु को कभी दण्डित किया ही नहीं जा सकता। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि आपने क्षत्रिय कुल में कैसे जन्म लिया है!

वल्लभ

दुष्ट दुःशासन ने जब द्रौपदी का अंचल खींचा, तब आप मेरे रक्तरंजित लोचनों को शान्तिपूर्वक समाधि धारण किये हुए देखते रहे। उस समय मैं सोचता रह गया कि क्या हम दोनों एक ही माता कुन्ती की कोख से उत्पन्न हुए हैं! वही शंका आज द्विगुणित होकर फिर उठ गई है। यदि आप किसी के प्रति कठोर हो ही नहीं सकते और उनको सुखी बनाने की चिन्ता में ही लगे रहना चाहते हैं, तो फिर आपने यह अज्ञातवास स्वीकार ही क्यों किया? इससे तो अच्छा यह था कि आप आजीवन वनवास ही स्वीकार कर लेते और तब आपका अजातशत्रुत्व का व्रत भी सध जाता।

सैरन्ध्री

और आपके जो इन भाइयों ने आपकी सत्यप्रियता पर श्रद्धा रख राज्य-सुख को तिलांजलि दे दी, सो आपके आजीवन वनवास स्वीकार करने पर आपके साथ ही अपना सारा जीवन व्यतीत करने के लिये कटिबद्ध हो जाते।

वल्लभ

क्रूरता और कठोरता के बिना कोई युद्ध हो ही नहीं सकता। क्षत्रियों को क्या कभी ऐसी युद्ध-कला भी सिद्ध हो सकती है कि वे तीर छोड़ें, तो शत्रु सुख से मरने के लिये तैयार हो जावे?

सैरन्ध्री

शत्रुओं के कुटुम्बी युद्ध में मृत्यु वरण करनेवाले स्वजन पर तो रोयेंगे ही। मुझे तो लगता है कि अज्ञातवास के दिन बिताने पर यदि दुर्योधन ने हमारा राज्यांश हमें

देना अस्वीकृत किया, तो कदाचित् इस आशंका से कि कहीं कौरवों की पत्नियाँ अनाथ न हो जावें, आप वन की ओर चल देंगे।

कंकभट्ट

सुनो द्रौपदी ! मैं फिर स्पष्ट कहता हूँ कि अज्ञातवास समाप्त होने पर जब तक कौरवों का आचरण पापपूर्ण और उग्र नहीं होता और जब तक मुझे यह विश्वास नहीं होता कि उनके नाश को छोड़कर उनके उद्धार का और कोई मार्ग नहीं रहा, तब तक मैं युद्ध-क्षेत्र में भी दुर्योधन के वध की सम्मति नहीं दे सकता; कीचक की बात ही छोड़ो।

सैरन्ध्री

परन्तु, इस दुरात्मा कीचक का मैंने क्या बिगाड़ा है ? कुछ नहीं बिगाड़ा, तो भी उसकी दृष्टि मेरी ओर पापमयी है। उसको समझाने-बुझाने में उसकी बहिन सुदेष्णा और पत्नी रत्नप्रभा भी असफल हुईं। मैं पूछती हूँ कि इस उग्र पापी का वध करके उसका और उसके अनुकीचकों के उद्धार करने का समय क्या अभी नहीं आया ?

वल्लभ

पाण्डवों ने कीचक और अनुकीचकों से कभी कुछ नहीं चाहा। उनकी यह इच्छा भी नहीं है कि वे उनके औचित्यपूर्ण सुखों और विलासों का विरोध करें। फिर भी, यह नीच कीचक चरित्रवती द्रौपदी को, जो हमारी एकमात्र सुख और सम्पत्ति है, नष्ट-भ्रष्ट करना चाहता है। उसे घमण्ड है कि वह अपनी पापपूर्ण वासना की पूर्ति के लिए मनमानी करेगा और धर्म और ईश्वर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते ! इसी अभिमान में वे निरपराध पाण्डवों को ऐसे गर्त में ढकेल देना चाहते हैं कि उनकी पीढ़ियाँ भी कष्ट भोगती रहें। ऐसी स्थिति में हे धर्मराज ! आप बतावें कि कीचक का वध करने का आदेश आप इस भीम को देते हैं कि नहीं ?

कंकभट्ट

यह नहीं कि मैं कभी वध की आज्ञा न दूँ। परन्तु, अभी सारे उपाय चुक नहीं गये हैं। माना कि सुदेष्णा और रत्नप्रभा के कहने से उसके कान पर जूँ नहीं रेंगी, पर महाराजाधिराज विराट ध्यान दें, तो वे कीचक को इस नीच कृत्य से परावृत्त कर सकते हैं।

[नेपथ्य में घोषणा होती है—"महाराजाधिराज विराट वसन्तोद्यान में विराजमान हैं, समस्त द्यूतकर्मियों को आदेश है कि वे वहाँ इकट्ठे हों"]

द्रौपदी ! सुना ? आज इसी उद्यान में द्यूतक्रीड़ा हो रही है। मुझे वहाँ उपस्थित होना चाहिये। महाराजाधिराज के समक्ष अपनी समस्या भी उपस्थित करूँगा। तब तक तुम लोग कोई अविचारपूर्ण कार्य न कर बैठना।

[कंकभट्ट का प्रस्थान]

सैरन्ध्री

प्राणनाथ ! आपने प्रतिज्ञा की थी न कि आप सौ कौरवों का वध करके दुःशासन के रक्त से रंगे हुए हाथों से मेरी वेणी गूँथेंगे। मुझे तो नहीं लगता कि आपकी यह प्रतिज्ञा पूरी होगी।

वल्लभ

तेरे मन में ऐसी विचित्र शंका क्यों उठी द्रौपदी ? मेरे गदा-प्रहार से यदि कौरव न मरे, तो इस भीम का जन्म ही व्यर्थ है।

सैरन्ध्री

युद्ध आरम्भ होने पर आप अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लेंगे, मुझे इसमें सन्देह नहीं। परन्तु, आपके अग्रज अपनी सत्यप्रियता का ढोंग धारण किये रहे, तो आपको शस्त्रधारण करने का अवसर ही न आयेगा। और यह कीचक मुझ पर अत्याचार करने से चूकेगा नहीं, तो इस अज्ञातवास में ही आपकी द्रौपदी की.........

वल्लभ

और द्रौपदी के साथ पाण्डवों की.........

सैरन्ध्री

कहानी मिट जावेगी।

वल्लभ

यदि ऐसा ही अवसर आया, तो मैं कीचक को राजमार्ग पर रथ में से खींचकर, सबके सामने पैरों तले रौंदकर उसके प्राण हर लूंगा। तू भरोसा रख; भय का कोई कारण नहीं।

सैरन्ध्री

परन्तु, इससे पाण्डव प्रत्यक्ष हो जावेंगे। उन्हें फिर बारह वर्षों का वनवास भोगना पड़ेगा। इससे अच्छा तो यही है कि यदि मैं ही न रहूँ.........

वल्लभ

कौरवों के रक्त से सने हुए अपने हाथों से तेरी वेणी गूंथने की मेरी प्रतिज्ञा पूरी होकर रहेगी। अब धर्मराज के आदेश की आवश्यकता नहीं है। द्रौपदी, तू मुझे आज्ञा दे, मैं इसी क्षण जाकर कीचक को समाप्त कर दूं।

[नेपथ्य में—"अरी छोकरियो, पुष्पवाटिका में चारों ओर ढूंढ़ो और सैरन्ध्री का पता लगाओ। मैं वहाँ अमराई में विश्राम करता हूँ"]

सैरन्ध्री, देख, कीचक इसी ओर चला आ रहा है। अब तू मुझे आदेश दे। मैं उसे बीच में से चीरकर इसी झुरमुट में फेंके देता हूं। यदि धर्मराज ने कह दिया होता, तो कीचक की जीवन-लीला का अन्त कर देने के लिए यह कितना अच्छा अवसर था। अरी, तू तो बोल, दिखा दूं मैं इस नीच को यमपुरी का मार्ग ?

सैरन्ध्री

नहीं प्राणनाथ, नहीं। उनकी सम्मति बिना लिए हमें यह नहीं करना है। फिर कभी अवसर आवेगा।

वल्लभ

तो फिर उसके सामने हम दोनों का एक साथ रहना ठीक नहीं।

सैरन्ध्री

आप इस झाड़ी में छिप जाइये। इतने समीप रहे, तो मुझे कोई भय नहीं। फिर आवश्यकता ही पड़ी, तो मैं इतने तारस्वर में चिल्लाऊँगी कि मेरी चीख वसन्त महल तक सुनाई देगी।

[भीम झाड़ी में छिप जाता है]

वल्लभ

[स्वगत]

इस चाण्डाल को देखकर मुझे अचानक दुःशासन की याद आ जाती है। अब मुझे लगता है कि पहले मेरे हाथ इसी नीच के ही रक्त से रंजित होंगे। जब तक धर्मराज इसके मुँह से निकलनेवाली अपमानपूर्ण भाषा सुनने नहीं पाते, तब तक उनके क्रोध की ज्वाला नहीं भड़क सकती। वह क्रोध ही है, जो मनुष्यों को साहस-पूर्ण कार्यों की ओर प्रवृत्त कर सकता है।

[कीचक का प्रवेश]

कीचक

[स्वगत]

मेरी आँखों ने भूल नहीं की। यह तो सैरन्ध्री ही है। मैं इसे अपने रंगमहल में खींच ले जाऊँगा, अब कहाँ जायेगी। वह मेरी चूक थी कि जो पहले ही दिन इसे खींच नहीं ले गया। ये दास-दासियाँ ताड़ना ही से मानते हैं। मैंने अनुकीचकों को आज्ञा दे रखी है कि वे इनसे सदा डपटकर बोलें। लातों के देवता तो बातों से सिर पर चढ़ने लगते हैं, अपने को बराबरी का मानने लगते हैं, तब इनकी आँखों में हमारे हास-विलास खटकने लगते हैं और हमारे अधिकार चुभने लगते हैं। तो मैं इसे मार्ग पर से खींचते हुए रंगमहल की ओर ले जाऊँ। मुझे यही करना चाहिये।

[बैठता है]

सैरन्ध्री, यहाँ पास आकर खड़ी हो जाओ। क्या कर रही हो तुम ?

सैरन्ध्री

महारानी सुदेष्णा के लिए फूल चुन रही हूँ।

कीचक

सैरन्ध्री! तुझे मेरे रंगमहल में स्थान पाने का जो मान मिल रहा है, वह इसलिए कि मैं तुझ पर रीझ गया हूँ। तेरे लाभ की बात कहता हूँ तू द्रौपदी की दासी थी न? वह द्रौपदी अब मेरी विलास दासी बननेवाली है। अब तू इस बात से न डर कि उसकी दासी बनेगी। मेरे विलास-गृह का यह नियम है कि उसमें ऊँच-नीच का भेद नहीं किया जाता। तू यह सन्देह न कर कि भविष्य में यदि द्रौपदी आई, तो वह तुझे भला-बुरा कह सकेगी या तेरे दासीत्व का स्मरण कराकर तुझे अपमानित कर सकेगी। मेरे विलास-गृह में सभी को एक-सा सम्मान प्राप्त होता है। देख सैरन्ध्री, इस कीचक ने आज तक किसीसे प्रार्थना नहीं की। यह बात और है कि मैं तुझ पर यह जो कृपा कर रहा हूँ, तो तुझे अपने बर्ताव से सिद्ध करना पड़ेगा कि तू इस योग्य है। परन्तु, यदि तू अपने मन से मेरे विलास-गृह में चली चले, तो सच मान, मैं द्रौपदी की नियुक्ति तेरे हाथ के नीचे करूँगा। अच्छी तरह सोच ले। मैं तुझे जो विश्वास दिला रहा हूँ, उसका दायित्व समझकर तुझे चलना पड़ेगा। नहीं तो, मेरे मन में तेरे प्रति जो सहानुभूति है वह.........

सैरन्ध्री

ओ सारथी के पूत, जरा मुँह सँभालकर बोल। यह सैरन्ध्री भले ही तुझे दासी के वेष में दिखाई देती हो, पर निकट भविष्य में तुझे शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा कि वह यक्षों की दिव्य शक्ति द्वारा रक्षित है।

कीचक

सैरन्ध्री! इस मूर्खतापूर्ण बातचीत से तू मेरी सहानुभूति खो रही है। मेरे समान धैर्यवान और प्रतापी पुरुष ऐसी अनर्गल धमकियों की ओर ध्यान नहीं दिया करते। मुझे भयभीत करने का यह प्रयत्न निरर्थक है। समझ ले कि इससे तेरी ही हानि होगी। तू है किसी दरिद्र की बेटी, किसी दास की पत्नी। तेरे मुख से निकली यक्षों की कहानियाँ तेरी ही हँसी उड़ाती हैं। अभी तक तूने किसी ऐसे पशु के साथ रातें बिताई होंगी, जो सपने में भी विलास-क्रीड़ा की कल्पना भी नहीं कर

सकता। कदाचित् मिट्टी के बर्तनों में सड़ा-गला भोजन पकाने-खानेवाले दरिद्र माता-पिता की झोपड़ी में चीथड़े लटकाकर तूने दिन काटे होंगे। लेकिन, प्रिय सैरन्ध्री! विधाता ने तेरा शरीर इतना सुन्दर गढ़ा है कि यद्यपि तूने अभिजात कुल में जन्म नहीं लिया, तो भी मेरे समान प्रतापी और सत्ताधारी व्यक्ति तुझसे विलसने की इच्छा रखता है। इस अर्थ तू परमेश्वर को धन्यवाद दे। सैरन्ध्री! तू ये आभूषण पहन ले, इन्द्राणी को दुर्लभ मेरे रंगमहल में रहना स्वीकार कर, जो कीचक संसार की समस्त राजसत्ताओं का केन्द्र है, उसका मन तू अपनी अंग-भंगिमाओं में उलझा और विलास-गृह की सबसे तेजस्विनी तारिका बनकर रह।

सैरन्ध्री

पापी, अनुकीचकों की सहायता के बल पर तू महाराजाधिराज विराट को भले ही नगण्य समझता हो और चाहे तुझे इस बात का घमण्ड हो कि मत्स्य देश में तुझसे बढ़कर और कोई नहीं है, परन्तु यह न भूल कि न्यायकर्ता ईश्वर सब कुछ देखता-सुनता है। पतिव्रता पर अत्याचार करने के परिणामस्वरूप तेरी शक्ति क्षीण हो जायेगी और सत्ता शीघ्र ही सर्वनाश देखेगी। अरे चाण्डाल! सदाचारियों पर किये जानेवाले अत्याचारों से क्रुद्ध देवदूत तेरे आसपास घूम रहे हैं कि कब तेरे पापों का घड़ा भरे और कब वे तेरी बलि प्रदान कर दें। तेरी मदान्ध दृष्टि भले ही इन दिव्य देवदूतों को न देख पाती हो, परन्तु हे दुष्ट दानव! तू यह निश्चित समझ कि तूने पाप के मार्ग पर एक चरण और रखा कि वे प्रकट हुए। आज जो लोग इस पर विस्मित हैं कि महाराजाधिराज विराट को दबोचकर कीचक ने इतनी बड़ी राजसत्ता हथिया ली, वे ही कल इस बात पर आश्चर्यचकित होंगे कि पाप का एक घूंट और पीते ही वह किस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

कीचक

सैरन्ध्री! इस प्रकार की ब्रह्मज्ञान की बातें करके तू अपनी ही हानि कर रही है। तुझे मेरे रंगमहल में आना ही पड़ेगा। इस निश्चय को कोई नहीं टाल सकता। तो फिर पाप-पुण्य की अनर्गल बात करके तेरे प्रति मेरी जो सहानुभूति है उसे ....

सैरन्ध्री

कैसी सहानुभूति! आग लगे तेरी सहानुभूति में। सहानुभूति दिखा-दिखाकर

हम सभीको अपनी रखैल ही तो बनावेगा। इस रासभ को सहानुभूति की शान बघारने में लज्जा तक नहीं आती ?

कीचक

[उठकर]

बड़ी आई कहीं की पतिव्रता ! सैरन्ध्री, तुझमें इतनी भी समझ नहीं है कि यदि तू ऐसी गुणवती होती, तो दासी ही क्यों होती ! न्याय और अन्याय की बातें दासी के मुख में ! तू समझती क्या है ? कौरवों ने तेरी स्वामिनी द्रौपदी को भरी सभा में अपने हाथों से निर्वस्त्र करने का प्रयत्न किया, परन्तु मेरा नाम कीचक है; मैं तुझे किसी अनुकीचक के दास के हाथों खुली हाट में भरे चौराहे पर नंगी कराऊँगा। तब तू मेरी विलास दासी बनने का सम्मान तो खो ही देगी, उल्टे किसी क्षुद्र दास की रखैल बनकर रहना पड़ेगा। चल, तुझे खींचकर मैं अपने रंगमहल में लिये जाता हूँ।

[हाथ पकड़ता है]

पुकार अपने यक्षों, किन्नरों और देवदूतों को; देखें, कौन आते हैं तेरी सहायता के लिये ? उन सभीके सामने आज तेरी मर्यादा.........

सैरन्ध्री

दौड़ो, दौड़ो, दुष्ट भेड़िये के पंजों से दीन गाय को बचाओ।

कीचक

आओ, कौन देव और महादेव आते हो, सो आओ। मैं देखूं कि मेरे हाथ से सैरन्ध्री को छुड़ाने की शक्ति किसमें है।

[सैरन्ध्री पुनः पूर्ववत् पुकारती है]

मैं सभी को हठपूर्वक आमन्त्रित करता हूँ। लक्षित और अलक्षित सभी शक्तियो,

आओ, अपनी वाम भुजा से मैं तुम्हें थामकर अपनी दक्षिण भुजा से इस सैरन्ध्री का अंचल खींच रहा हूं। एक बार फिर पुकार सैरन्ध्री ! यदि मैंने तेरी मर्यादा मिट्टी में नहीं मिलाई, तो मैं क्षण भर भी इस पृथ्वी तल पर जीवित नहीं रहूंगा।

[सैरन्ध्री की पुकार और कीचक की उसके आँचल से छीन-झपट]

और पुकार, गाय की रक्षा के लिये पुकार, और रँभाकर पुकार; देखूं तो, कौन-सा बैल मरने के लिये सामने आता है ?

[रत्नप्रभा और सुदेष्णा का प्रवेश]

रत्नप्रभा और सुदेष्णा

राजाधिराज, यह कैसा अत्याचार ?

रत्नप्रभा

छोड़ दीजिये उस गरीब गाय को, छोड़ दीजिये।

सुदेष्णा

असहाय अबला पर अत्याचार करने में क्या पौरुष है ?

[कीचक सैरन्ध्री को छोड़ता है]

कीचक

सैरन्ध्री ! मैं तुझे न छोड़ता, चाहे कोई भी शक्तिशाली पुरुष तेरी सहायता के लिये क्यों न आ जाता। यदि कोई विशाल सेना भी मुझसे जूझ पड़ती, तो मैं तुझे न छोड़ता। परन्तु, कुछ अवसर ही ऐसे विचित्र आ जाते हैं कि विवाहिता पत्नी के सामने पुरुष को हार जाना पड़ता है। इस समय मैंने तुझे अवश्य छोड़ दिया, परन्तु जिस सूर्य के समक्ष मैं तुझे लिये जा रहा था, वही सूर्य अस्त होने के पहले अपनी कोटि-कोटि आँखों से तुझे मेरे रंगमहल में प्रवेश करते हुए देखने को बाध्य होगा। और रात बीते जब आकाश में वह फिर उदित होगा, तब उसे कीचक द्वारा उपभुक्त

सैरन्ध्री दिखाई देगी। सुदेष्णा! मैंने यह प्रण सूर्य भगवान एवं मत्स्य देश की अभिषिक्त महारानी के सम्मुख किया है। और इसे पूरा करने के लिये मैं देखूंगा कि मेरी भुजाओं में कितनी शक्ति है। यदि आप नहीं चाहतीं कि महाराजाधिराज विराट और कीचक एक-दूसरे के शत्रु हो जायें, तो इस दासी को, रात्रि की विलास-सामग्री को, अभिसारिका के समान शृङ्गार कर, पुष्पमालाओं से आभूषित कर, करों में स्वर्णिम मदिरा-पात्र देकर सूर्य डूबने के दो प्रहर पूर्व ही मेरे पास भेज दीजिये। दो घड़ी दिन रहते यदि यह आपके राजमहल से बाहर न निकली, तो उसी क्षण मेरे और विराट के सारे सम्बन्ध टूट जायेंगे।

[पटाक्षेप]

तृतीयाङ्क समाप्त

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—राजमहल का प्रांगण

[सौदामिनी और मैत्रेय का प्रवेश]

मैत्रेय

सैरन्ध्री को समझा पाना मेरे वश की बात नहीं।

सौदामिनी

कंकभट्ट क्या कहता है ?

मैत्रेय

वह तो जुआखोर है। जब देखो, तब महाराजाधिराज के साथ जुए के खेल में डटा है। उसे समय कहाँ है मुझसे बात करने के लिए। अभी-अभी महारानी सुदेष्णा और रानी रत्नप्रभा महाराजाधिराज के दर्शनों को आई थीं, परन्तु उन्हें भी सुधि कहाँ थी कि बेचारियों से बात कर सकें। महाराजा युधिष्ठिर ने जैसा अपना सत्यानाश इस द्यूत-कर्म में किया, वैसी ही स्थिति विराट की होनेवाली है। जुए के आगे राजकाज कौन देखे ! इसीलिये तो कीचक और अनुकीचक उद्दण्ड हो गये है।

सौदामिनी

समझिये कि बड़े संकट का समय है। जुआखोर कंकभट्ट जुए में मस्त है। महारानी सुदेष्णा ने सैरन्ध्री को अन्तिम आदेश दे दिया है कि दिन डूबने के दो घण्टे पहले मदिरा-पात्र लेकर उसे कीचक के रंगमहल में जाना ही होगा।

मैत्रेय

तब सैरन्ध्री ने क्या कहा ?

सौदामिनी

कि मैं प्राण दे दूंगी, पर कीचक को हाथ न लगाने दूंगी ।

मैत्रेय

यदि वह प्राण दे दे, तो इसमें तेरा भला ही है । अपने आप तेरी एक सौत कम हो गई । महाराजा कीचक एक-दो दिन शोक मनावेंगे और अन्त में तुझ पर ही.........

सौदामिनी

मन में एक बात सूझी है । सैरन्ध्री को किसी प्रकार राजी कर उसे मदिरा-पात्र लिए यहाँ से बाहर निकालूं और फिर वही पात्र लेकर महाराजा कीचक के रंगमहल में मैं चुपके-चुपके प्रवेश करूँ, तो कैसी रहे ? महाराजा नित्य संध्या समय मदिरा-पान किया करते है और फिर वह मेरे हाथ की मदिरा रहेगी, तो फिर कौन जाने कि क्या हो !

मैत्रेय

युक्ति तो बढ़िया है । अर्थ यह कि महाराजा कीचक की आज तू रात-रानी रहेगी, तो फिर मुझे कितने मुक्ताहार उपहार में दोगी ?

सौदामिनी

मुक्ताहार तो असंख्य मिलेंगे । परन्तु, मैं जो कहूँ, सो तुम करो, तब । कंकभट्ट से कहकर सैरन्ध्री को पहले राजी तो करो ।

मैत्रेय

अच्छी बात है, यह मुझ पर छोड़ो । लो, मैं यह चला ।

[प्रस्थान]

सौदामिनी

[स्वगत]

जुआखोर कंकभट्ट अपना जुआ छोड़कर इन बातों पर क्यों ध्यान देने चला ! इसके भरोसे रहने से काम नहीं बनेगा। वल्लभ को टटोलना पड़ेगा। हाथ में करछुल लिए यह कौन आ रहा है ? जान पड़ता है, सिद्धपाक है। परसों ही तो भोजन-गृह में नियुक्त हुआ है। वल्लभ का पता इससे ही लगेगा।

[सिद्धपाक और विद्याधर का प्रवेश]

सिद्धपाक

अरे, यही हैं वे महादासीजी, जिनके पास हमें वल्लभ महाराज ने भेजा है। तेरा भाग्य कीचक से सवाया मालूम होता है, नहीं तो इनके दर्शन इतनी जल्दी कैसे होते ? पड़, इनके पैर पड़। एकदम साष्टाँग दण्डवत् कर।

[विद्याधर साष्टाँग दण्डवत् कर घुटनों के बल खड़ा हो जाता है]

सौदामिनी

क्यों रे सिद्धपाक, यह क्या झंझट है ?

सिद्धपाक

महादासीजी ! यह महान् पण्डित है। इसने अपना विद्याभ्यास गुरु के यहाँ रहकर.........कितने वर्ष ? कितने वर्ष रे विद्याधर ?

विद्याधर

पन्द्रह वर्ष, कृपावती महादासीजी।

सिद्धपाक

पन्द्रह वर्ष अध्ययन कर बड़े-बड़े ज्ञानी वृद्धों से इसने प्रमाण-पत्र प्राप्त किये हैं। क्या लिखा है रे उनमें ? बोल, बोल।

कि तीन सभाओं में विजयश्री मिली है, महादासीजी।

सिद्धपाक

महापण्डित है यह ! पण्डितों की सभा में यह किसके समान शोभा देता है... . यह किसके समान ...अरे, मैं भूल ही गया कि किसके समान .....प्राचीन ऋषि-मुनियों के नाम तो मेरे मस्तिष्क में ठौर ही नहीं पाते। क्यों रे, किसके समान ?

विद्याधर

बृहस्पति के समान, करुणामयी महादासीजी।

सौदामिनी

तो फिर बात क्या है ?

सिद्धपाक

बात ऐसी है . ...कैसी है......क्या बात है रे भई ?

विद्याधर

कहीं पण्डिताई न मिलने के कारण क्षुधापीड़ित हूँ, दीनदयालु महादासीजी।

सौदामिनी

इस पण्डित की यह दीन दशा देख बड़ी दया आती है। इस गरीब ने पुरुष जन्म न पाकर, यदि स्त्री जन्म पाया होता, तो अनुकीचक के रंगमहल की दासी तो बन ही जाता।

सिद्धपाक

यह अर्थ-शास्त्र का ज्ञाता है......यह ज्योतिष-शास्त्र पढ़ा है......यह व्याकरण जानता है .. जानता है न रे ?

विद्याधर

हाँ, सरकार।

सिद्धपाक

यह गणितज्ञ भी है......है न रे?

विद्याधर

हूँ, गरीब परवर।

सिद्धपाक

इसे इतिहास भी आता है......आता है न रे?

विद्याधर

जी हाँ, मालिक।

सिद्धपाक

यह छन्द-शास्त्र भी जानता है......जानता है न रे?

विद्याधर

जानता तो हूँ, दयावती महादासीजी।

सौदामिनी

चल उठ! अब यह बता कि तू क्या नहीं जानता, जिससे बात यहीं पर समाप्त हो जाय।

विद्याधर

[उठकर]

मैं पाक-शास्त्र नहीं जानता। और उसके लिये सीधा जुटाना भी मुझे नहीं आता। शेष सब कुछ आता है।

सिद्धपाक

और इसलिये इसे भूखों मरना पड़ता है, महादासीजी। यह श्रेष्ठ पंडित अवश्य है महादासीजी, परन्तु किसी अनुकीचक की दासी होकर कैसे पेट-पालन करे, यह स्त्री तो नहीं है......नहीं है न रे ?

विद्याधर

मेरा दुर्भाग्य है कि मैं पुरुष हूँ, हे भाग्यवती महादासीजी।

सिद्धपाक

यह व्यापार भी नहीं कर सकता, क्योंकि इसके पास पूँजी नहीं है......नहीं है न रे ?

विद्याधर

जो कुछ था, सो पोथी-पुस्तकों को समर्पित कर चुका, महालक्ष्मी महादासीजी।

सिद्धपाक

मैंने वल्लभ महाराज से भी कहा था कि यह इस प्रकार भूखों मर रहा है। बात यह है कि वल्लभ महाराज के कहने में सैरन्ध्री महादासीजी हैं और उन महादासीजी पर महाराजा कीचक की असीम अनुकम्पा है। अतएव, उनके द्वारा कुछ.........

सौदामिनी

सैरन्ध्री ने कुछ कहा-सुना नहीं ?

सिद्धपाक

वल्लभ महाराज ने बताया कि सैरन्ध्री महादासीजी क्रोध में है और शेष सभी के बीच सौदामिनी महादासीजी का प्रभाव महाराजा कीचक पर अनन्य है; क्योंकि कभी-कभी महाराजा उन्हें गन्दी, घिनी आदि प्रेम भरे शब्दों से सम्बोधित करने का अनुग्रह भी किया करते है। वल्लभजी श्रीचरणों की ऐसी प्रशंसा

कर रहे थे। मेरे कारण वे स्वयं आकर इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन करने-वाले हैं।

सौदामिनी

अच्छी बात है। मैं महालक्ष्मी के मन्दिर में हूँ। वे आवें, तो उन्हें वहीं भेज देना।

[स्वगत]

विद्याधर पंडित की बात लेकर यह वल्लभ जो मेरे पास आ रहा है, सो अच्छा ही है। उससे कहकर यदि मैं सैरन्ध्री को राजी कर पाई, तो आज संध्या के समय उसके बदले में ही मदिरा-पात्र लेकर महाराजा कीचक के रंगमहल में प्रवेश पा जाऊँगी।

[जाती है]

सिद्धपाक

चल विद्याधर वल्लभ महाराज के पास। समझ कि तेरी विजय ही है। बिन पैसे की सिफारिश के आजकल दो रास्ते हैं। एक तो यह कि किसी कीचक या अनुकीचक के रसोईघर में काम करनेवाले हमारे समान किसी पाक-शासक की चिरौरी करना। दूसरा यह कि किसी कीचक या अनुकीचक की गुप्त या प्रकट किसी निशा-बिलासिनी के चरण चुम्बन करना।

विद्याधर

अब तो मेरे साथ दो-दो जोर हो गये। कोई छोटी-मोटी नौकरी-चाकरी तो मिल ही जावेगी।

[दोनों जाते हैं]

दृश्य दूसरा

[कीचक के महल के सामने का आंगन। सैरन्ध्री मदिरा का पात्र लिये हुए आती है। सौदामिनी तथा वल्लभ भी आते हैं]

सौदामिनी

सखी सैरन्ध्री ! आज मैं जितनी प्रसन्न हूँ, उतनी कभी नहीं हुई। मेरा मन निशा के साथ आनेवाली सुख की तरंगों पर झूल रहा है। और लगता है कि डूबते हुए सूरज की ये आरक्त किरणें कामोद्दीपिनी चाँदनी से मुझे नहला रही है। और सखी, तुम कोई दूती हो, जो प्रियतम से मिलन के लिये उत्सुक मुझ अभिसारिका को उनके विलास-गृह तक पहुँचाने के लिये खड़ी हो। सच कहूँ सैरन्ध्री, इस महल का प्रत्येक द्वार देखकर मुझे लगता है कि जैसे मैं उनके रंगमहल के द्वार पर ही पहुँच गई हूँ। किसी भी पुरुष पर दृष्टि पड़ने पर मुझे उन्हीं का भ्रम होता है। दो-तीन बार तो साथ ही आये हुए इस वल्लभ महाराज को महाराजा कीचक समझकर मैं ऐसी लजाई कि क्या बताऊँ।

वल्लभ

अरी सौदामिनी, हम सचमुच महाराजा कीचक के महल के सामने पहुँच गये हैं। मदिरा-पात्र लेकर तू भीतर प्रवेश कर और उनसे निवेदन कर कि सैरन्ध्री के बदले तू ही आज मदिरा-पात्र-वाहिनी है और रात्रि-विलासिनी है।

[सैरन्ध्री सौदामिनी को मदिरा-पात्र देती है]

सौदामिनी

सैरन्ध्री, पूर्व निश्चयानुसार तू महाराजाधिराज विराट के दरबार में जाकर अपना निवेदन प्रस्तुत कर। मैं यहाँ महाराजा कीचक को रिझाने का पूर्ण प्रयत्न करती हूँ। और यदि ईश्वर ने मुझे विजयश्री दी, तो तेरा भी कार्य हो गया समझ।

अपनी सुन्दरता पर मुझे पूरा भरोसा है। महाराजा कीचक की ओर से अब तू निश्चिन्त हो जा। तो अब तू वल्लभ के साथ प्रस्थान कर। मैं भी महल में प्रवेश करती हूँ।

[सौदामिनी जाती है]

वल्लभ

द्रौपदी ! यह संकट तो जैसे-तैसे काट दिया। यदि महारानी सुदेष्णा ने मदिरा-पात्र लेकर जाने का आदेश इस समय न दिया होता, तो इस क्षुद्र दासी की युक्ति स्वीकार करने की कोई आवश्यकता न थी। एक ओर महाराजाधिराज विराट ने धर्मराज को यह वचन दिया था कि वे आज संध्या समय तेरी प्रार्थना पर विचार करेंगे और दूसरी ओर महारानी का इसी समय यह आदेश हुआ।

सैरन्ध्री

महारानी को बड़ा सन्तोष था कि मैं मदिरा-पात्र लेकर जा रही हूँ और अब वे मुझे दरबार में देखेंगी, तो अवश्य क्रोधित होंगी।

वल्लभ

पर, दादा तो कहते हैं कि महाराजाधिराज अपना निर्णय तेरे ही पक्ष में देंगे। और तब तो ये सारी पिछली झंझट अपने आप ही मिट जायेगी।

सैरन्ध्री

यदि यह उन्हीं की आज्ञा है, तो ठीक है; मैं बेचारी विनती तो कर ही लूँगी। यदि महाराजाधिराज विराट, महारानी सुदेष्णा और रानी रत्नप्रभा साथ ही साथ मेरी बात ध्यान से सुनेंगे, तो इसमें सन्देह नहीं कि वे अवश्य न्याय करेंगे। मुझे भय तो यह है कि कहीं वह दुष्ट कीचक राक्षस के समान बीच में ही आकर हमारी राह न रोक ले। आजकल कीचक और अनुकीचक इतने प्रबल हो गये हैं कि उनके कार्य महाराजाधिराज विराट को अन्यायपूर्ण भी लगें, तो भी उनके दुराग्रह के सामने उन्हें झुकना ही पड़ता है। इस मदोन्मत्त कीचक की संसार में उपस्थिति कदाचित्

सर्वशक्तिशाली ईश्वर की अनुपस्थिति की सूचना दे रही है। मुझे लगता है कि परमेश्वर के अपमान के पापपूर्ण कृत्य को देखकर ही साधु-सन्तों को वन-कन्दराओं में छिपकर बैठना आवश्यक प्रतीत होने लगा है। मेरी विनती का कोई उपयोग होगा, इसका मुझे भरोसा नहीं है। मेरे मत में, पैरों में चुभनेवाले इस कण्टक को निकालने के लिये किसी अन्य पर निर्भर न रहकर हमें स्वयं ही ... ...

वल्लभ

भले ही कुछ उपयोग न हो, पर कम से कम दादा को तो सन्तोष होगा।

सैरन्ध्री

बस, इसीलिये तो मैंने भी प्रार्थना करने का निश्चय कर लिया है। सोचती हूँ कि जिस प्रकार कोई नादान बालक कहीं से कृपाण प्राप्त कर ले और बिना सोचे जिस-तिस पर चलावे, तो बड़ों का यह कर्त्तव्य है कि उसके हाथ से उसके ही हित में उसकी कृपाण छीन लें। इसी प्रकार जब यह मदान्ध कीचक असहाय लोगों को कष्ट देता है और विचारवानों के समझाने पर भी उनकी अवहेलना करता है, तब क्या प्रत्येक धर्मवान व्यक्ति का यह पावन कर्त्तव्य नहीं है कि वह उस शरीर को ही नष्ट कर दे कि जिसके द्वारा ये पाप-कृत्य किये जाते हैं ?

वल्लभ

इसीलिये तो मैं कह रहा हूँ कि दरबार में उपस्थित होकर अपनी बात प्रस्तुत करना ही चाहिये। यदि धर्मराज की हो समझ में सारी बात आ गई, तो कम से कम वे कीचक का वध करने की सम्मति तो दे देंगे। इस तरह संध्या के दो घण्टे बीत जायेंगे और स्वाभाविक रूप से रात्रि आ जावेगी, जो कि कीचक के वध करने में सहायक होगी। चलो सैरन्ध्री, जल्दी पैर बढ़ाओ; नहीं तो जैसा तू कहती है, कहीं वह दुरात्मा हमें राह में ही न मिल जाये और मेरे हाथों कुछ ऐसा न बन पड़े कि हमें फिर से बारह वर्ष का वनवास भुगतना पड़े।

[सैरन्ध्री तथा वल्लभ जाते हैं। दूसरी ओर से कीचक सौदामिनी को धक्के मारता हुआ आता है]

कीचक

निर्लज्जा, दुष्टा, छिनाल कहीं की ! लात मारकर तेरी कमर तोड़ देता हूँ ।

सौदामिनी

मैं तो आपके प्रेम में अंधी होकर यहाँ चली आई !

कीचक

तो अब तुझे अंधी करके ही यहाँ से भेजे देता हूँ । इन नीचों को तनिक हलकी-सी गालियाँ दो, तो ये बराबरी से हमारी ओर देखने लगते हैं ! पैर की जूती पैर में ही शोभा देती है । हूँ ! तो इसे सुदेष्णा ने भेजा था मेरे पास मदिरा-पात्र लेकर ! ये लोग मुझे इतना नादान समझते हैं कि मेरा शौक किसी बाजारू वेश्या से पूरा हो जायगा ! विराट और सुदेष्णा को यह अभिमान हो गया है कदाचित, कि मेरे बिना अब उनका काम चल जायगा ! छिनाल कहीं की !

[सौदामिनी पर फिर पाद-प्रहार करता है]

पहले तेरी हड्डी-पसली ठीक कर दूँ, फिर तेरी स्वामिनी की ....

सौदामिनी

नहीं-नहीं महाराजा, उन्होंने मुझे नहीं भेजा । मैं तो यहाँ सैरन्ध्री के साथ आई ।

कीचक

तो फिर कहाँ है वह सैरन्ध्री ?

सौदामिनी

वह तो आपको गालियाँ दे रही थी महाराजा ! ऐसी दुष्टा से आपको सुख न

मिलेगा, यही सोचकर मैं अपना स्नेह समर्पित करने इस महल में चली आई। सैरन्ध्री दरबार की ओर गई है उपालम्भ देने।

कीचक

अच्छा, तो यह बात है! तेरी इस मूर्खता पर मैं तेरे कान पकड़कर तब तक खींचता चलता हूँ, जब तक कि सैरन्ध्री न मिल जावे। आज रात मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी किये बिना न रहूंगा। चाहे वह विराट हो और चाहे सुदेष्णा हो, कोई मेरा विरोध करके देख ले। मैं उन्हें पैरों तले रौंद दूंगा। कीचक के शब्द के विरोध में बोलने का ब्रह्मा का भी साहस नहीं है! सारे मत्स्य देश के समक्ष आज रात्रि को मैं यही करके दिखला दूंगा।

[सौदामिनी को कान पकड़े हुए ले जाता है]

दृश्य तीसरा

[विराट का दरबार। विराट सिंहासनासीन हैं। सुदेष्णा और रत्नप्रभा एक ओर बैठी हैं; गुरु, पुरोहित दूसरी ओर। दास-दासी चंवर फेर रहे है। मन्दहासिनी रत्नप्रभा और सुदेष्णा के पीछे खड़ी है और चँवर डुला रही है। गुरु और पुरोहितों के पीछे कंकभट्ट स्थित है]

विराट

आप लोगों ने कंकभट्ट का निवेदन सुन लिया। इस सम्बन्ध में धर्म की क्या आज्ञा है ?

गुरु

महाराजाधिराज ! इस सम्बन्ध में धर्म की आज्ञा स्पष्ट है। धर्म कभी यह नहीं कह सकता कि कोई किसी पर अत्याचार करे।

पुरोहित

किसी स्त्री पर बलात्कार करने के सम्बन्ध में यह विधान है कि अपराधी अग्नि-भक्षण कर प्रायश्चित करे। परन्तु, यह आपद्धर्म की स्थिति में.........

गुरु

राजा का यह कर्त्तव्य है कि प्रायश्चित का अवसर ही न आने दे। आपद्धर्म की स्थिति ही उत्पन्न न हो।

सुदेष्णा

पर, अब इस विवाद का अर्थ ही कुछ नहीं है। सैरन्ध्री तो मदिरा-पात्र लेकर कीचक के महल में गई है। अतएव, हम अधिक से अधिक यह सोच सकते हैं कि उसकी समझदारी से उसका संकट टल गया होगा।

कंकभट्ट

सैरन्ध्री तो मदिरा-पात्र लेकर इसलिये गई है महारानीजी, कि आप उस पर क्रोधित न हों। उसे ज्ञात है कि दरबार में निवेदन पर विचार होगा। अतएव, मदिरा-पात्र किसी दूसरी दासी को सौंपकर वह यहाँ उपस्थित होती ही होगी।

रत्नप्रभा

मैं जानती थी कि सैरन्ध्री स्वयं होकर रंगमहल में नहीं जावेगी। वह ठीक ही कहती है कि यक्ष और किन्नर उसके सहायक हैं। इसलिये, मुझे यही चिन्ता बनी रहती है कि किस प्रकार उनका मन इस पाप-कर्म से विरत हो जाये। महाराजाधिराज के सामने मेरा निवेदन है कि यदि वे उनके महल तक चलने की कृपा करें और उन्हें समझायें, तो वे आपके वचनों का आदर अवश्य करेंगे।

विराट

कुछ समझ में नहीं आता कि इस अवसर पर क्या करूँ। दुविधा में पड़ा हुआ हूँ। इस समय पाप और पुण्य मुझे एक-से ही भयंकर प्रतीत होते हैं। सुनो कंकभट्ट, यह दस-बारह वर्ष पहले की बात है। अरे हाँ, कौरवों और पाण्डवों के दरबार में तुम भी रह चुके हो, तो मैं जो बात कहनेवाला हूँ, वह तुम्हें ज्ञात ही है। जब पाण्डव वन में चले गये, तो धृतराष्ट्र की सभा में व्यास आदि महर्षि आये। उन्होंने महाराजा धृतराष्ट्र के समक्ष सुयोधन के कार्यों की भर्त्सना की और स्पष्ट रूप से कहा कि पाण्डवों को वनवास भेजने के पाप से यदि मुक्त होना है, तो दुर्योधन से सम्बन्ध-विच्छेद करना ही होगा। तब महाराजा धृतराष्ट्र ने क्या कहा, यह आप सब लोगों के मनन करने योग्य है। हे गुरुदेव, पाँच वर्ष पहले हिमाचल यात्रा से लौटते समय जो आपने हस्तिनापुर में सुना था, वह आप ही ने तो मुझसे कहा था न?

गुरु

मैं तो भूल ही गया था। महाराजाधिराज की स्मरण-शक्ति बड़ी तीव्र है।

पुरोहित

इसमें क्या सन्देह है। तो फिर महाराजा धृतराष्ट्र ने क्या उत्तर दिया?

विराट

उन्होंने महर्षियों से कहा कि लोग सुयोधन को दुर्योधन कहने लगें, पर है तो वह मेरा बेटा। मेरी यह इच्छा है कि वह सदाचारी बने। पुण्य-मार्ग का अनुसरण करे और स्वर्ग में अपना स्थान बनावे। मैं उसे इस प्रकार समझाता भी हूं। और मैं यह जानता भी हूँ कि वह पापाचरण करता है। परन्तु, फिर भी वह मेरा बेटा ही तो है। स्वयं होकर मैं उसका त्याग नहीं कर सकता। समझ लीजिये कि मैं प्रेमान्ध हूँ या कह लीजिये कि जिस स्वार्थ में सारा संसार रत है, उसका प्रभाव मुझ पर भी है। मैं अपने सुयोधन को नहीं छोड़ सकता। वह चाहे आप महर्षियों के उपदेश से सन्मार्ग पर आवे, या पाप-पंथ पर ठोकरें खाने से, जैसे भी हो, मैं सोचता हूँ कि वह जब सँभल जायेगा, तब मेरी बात अवश्य मानेगा। मैं तो अपने बेटे सुयोधन को अपने हृदय में ही समेटे रहूँगा।

सुदेष्णा

तब फिर महर्षियों ने क्या उत्तर दिया ?

विराट

वे तो राजा को शाप ही देने लगे। वे यह कहने ही जा रहे थे कि हे राजा, तेरे संपूर्ण कुल का नाश सन्निकट है कि उसी समय ज्ञानवृद्ध धृतराष्ट्र ने उनके समक्ष द्रौपदी चीर-हरण का प्रसंग छेड़ा और बताया कि किस प्रकार द्रौपदी को वरदान देकर दुर्योधन को पाप-कर्म से परावृत्त किया। उन्होंने महर्षियों से यह भी निवेदन किया कि वे ही समझा-बुझाकर दुर्योधन को सुयोधन बनावें।

रत्नप्रभा

फिर क्या हुआ ?

विराट

यह तो ज्ञात ही है कि दुर्योधन ने महाराजा कीचक को द्रौपदी-पति कहकर हस्तिनापुर में सम्मानित किया। तब क्या यह कहने की आवश्यकता रह जाती है कि दुर्योधन के मन पर ऋषि-मुनियों के उपदेश का क्या परिणाम हुआ ? गुरुदेव,

महाराजा धृतराष्ट्र के मन की उस समय जो अवस्था थी, ठीक वही मेरे मन की स्थिति है। एक ओर कीचक मुझे भाई के समान प्रिय है, दूसरी ओर उसका सैरन्ध्री पर अत्याचार करना मैं पाप-कर्म समझता हूं। मैं बड़े असमंजस में पड़ा हूँ, किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहा हूं। स्नेह और स्वार्थ के चक्र के बाहर निकलना असम्भव प्रतीत होता है। इसीलिये, जब मैंने सुना कि सैरन्ध्री महाराजा कीचक के महल की ओर गई, तो मुझे ऐसा लगा कि मानों संकट कट गया।

कंकभट्ट

क्षमा करें महाराजाधिराज कि मैं बीच में ही बोल रहा हूँ। राजा इसलिये अभिषिक्त किया जाता है कि यदि राज्य में कहीं पापाचरण हो रहा हो, तो वह जाँच-पड़ताल कर उसका उपचार करे। महाराजाधिराज को विदित है कि रामराज्य में किसी एक व्यक्ति की अकाल मृत्यु का दोष ऋषियों ने राजा रामचन्द्र के माथे मढ़ा था। प्रजा यदि अत्याचार सहने और निराशामय जीवन व्यतीन करने को बाध्य होती है, तो अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करनेवाले राजा के सिंहासन की नींव धँस जाती है और देखते-देखते ही वह डगमगाने लगता है। महाराजाधिराज से मेरा निवेदन है कि उनका यह पावन कर्त्तव्य है कि वे दासियों को अपने पातिव्रत की रक्षा करने के लिये उत्साहित करें। किसी राजा की प्रजा, यदि इस लोक में दुःखी हो, तो वह राजा परलोक में क्या मुंह दिखायेगा! उस परमपिता के दरबार में कर्त्तव्यच्युत राज्याधिकारी प्रायश्चित करने पर भी मुक्ति नहीं पा सकेगा।

विराट

कंकभट्ट, यह धर्म मेरी समझ में तो आता है, पर कार्यान्वित नहीं होता। धर्म बुद्धि के साथ-साथ मनुष्य में स्वार्थ-बुद्धि भी तो होती है। और मैं राजा होने पर आखिर मनुष्य ही तो हूँ इसलिये सैरन्ध्री यदि चुपचाप अपने आप अत्याचार के सामने झुक जाती है, तो महाराजा कीचक की विलासिता की ओर ध्यान देना मै अनावश्यक समझता हूँ। परन्तु, जिस प्रकार आज दोपहर के समय वसंतोद्यान में कीचक ने सैरन्ध्री का आँचल खींचने का प्रयास किया... ....

[नेपथ्य में "पापी, चाण्डाल, मेरा आँचल छोड़......महाराजाधिराज विराट के दरबार में मेरी लाज......" "देखें कौन बचाता है ?"]

विराट

यह किसकी आवाज है ?

[सैरन्ध्री का प्रवेश, उसका आंचल पकड़े हुए कीचक आता है]

सैरन्ध्री

धर्मावतार, गरीब गाय की दुष्ट भेड़िये से रक्षा कीजिये।

कीचक

देखता हूँ, कौन इस दासी की लाज बचाने आता है।

विराट

मेरे दरबार में मेरे सामने यह बर्ताव नहीं हो सकेगा।

गुरु और पुरोहित

[एक स्वर से]

कैसा अमानुषिक कार्य है !

सुदेष्णा और रत्नप्रभा

[एक स्वर से]

कैसी निम्न पशुता है !

कीचक

[सैरन्ध्री से खींचतान करते हुए]

चाहे यह अमानुषिक हो, चाहे पाशविक हो; महाराजाधिराज विराट ! चाहे यह तुम्हारे ही समक्ष किया जानेवाला तुम्हारा अपमान हो, यह कीचक इस भरे दरबार

में राजा, गुरु, पुरोहित, सबके समक्ष, इन महारानीजी की विस्फारित आँखों के सामने, सूर्यास्त के पहले दिवस की समस्त सृष्टि के नियंत्रक देवताओं के पृथ्वी पर पड़नेवाले अन्तिम दृष्टिक्षेपों के आगे, रात्रि-देवताओं के प्रकृति को प्रभावित करनेवाले प्रारंभिक दृष्टिपातों के सम्मुख, इस सैरन्ध्री का अंचल अस्त-व्यस्त कर सूचित कर देना चाहता है कि यह दासी आज रात मेरे रंगमहल की विलास-सामग्री बनकर रहेगी।

सैरन्ध्री

दुष्ट, चांडाल ! ज्ञात होता है कि तेरा समय आ गया है कि तू अनुभव करे कि पतिव्रता की शक्ति क्या है।

कीचक

पाँच पतियों की पत्नी वह द्रौपदी ! और उसकी तू दासी ! उस पर पातिव्रत का इतना घमंड !

सैरन्ध्री

महाराजाधिराज ! आपको इस राक्षस के पंजे से मुझ गाय को छुड़ाना ही होगा ! नहीं तो .. .. .

कीचक

नहीं तो क्या ? आप चुप रहिये महाराजा। मैं इसे पातिव्रत का खेल खिलाये देता हूँ ! नहीं तो क्या करेगी ? बोलती क्यों नहीं ?

कंकभट्ट

महाराजा कीचक ! सीता, मंदोदरी और सावित्री सरीखी पतिव्रताओं के आदर्श का तनिक स्मरण तो करो !

कीचक

अरे, चल ! मैं ऐसी अनेक पतिव्रताओं का नाम जानता हूँ। सुदेष्णा, रत्नप्रभा,

मंदोदरी, सावित्री और सीता ! इन पाँच पतिव्रताओं में मेरी यह वेश्या भी पतिव्रता ! इन धमकियों पर ध्यान देनेवाला नहीं है यह कीचक ! सैरन्ध्री, सृष्टि के प्रथम दिन से आज तक हुई सभी पतिव्रताओं का स्मरण कर ले। आज से सृष्टि के अन्तिम दिन तक सभी आगे होनेवाली पतिव्रताओं का आह्वान कर डाल ! भूत और भविष्य की सभी पतिव्रताओं का पुण्य पैरों तले कुचलकर तुझे भ्रष्ट करने का सामर्थ्य रखता है कीचक। तेरे आँचल को हटाकर तुझे इस प्रकार........

["यह क्या है ! यह क्या है !" कहते हुए पुरुष वर्ग कीचक के आसपास आ जाता है। स्त्री वर्ग "इसे छोड़ देने की हम भीख माँगती हैं" कहता हुआ बिलखता है। सैरन्ध्री चीखती-पुकारती है......"सैरन्ध्री की लाज बचानेवाले यक्षो, किन्नरो, गन्धर्वो, दौड़ो ! इस राक्षस से मेरी रक्षा करो !"]

कीचक

आने दे ! यक्ष और गंधर्व नाम से पुकारे जानेवाले जितने भी तेरे चाहनेवाले हैं, उन्हें आने दे ! दमकते दिन में तुझे नंगी देखने की तेरे प्रेमियों की अभिलाषा यदि किसीने पूरी न की हो, तो कीचक का यह बायाँ हाथ ही उनकी पिपासा शान्त करने को पर्याप्त है !

सैरन्ध्री

[कीचक से हाथ छुड़ाकर]

महाराजाधिराज ! यदि आप इसी समय इस चांडाल को नियंत्रित नहीं कर पाते, तो मेरी रक्षा करनेवाले यक्ष अभी इस स्थान पर प्रकट होंगे और आपका यह सिंहासन कीचक के रक्त से लथपथ हो जायगा।

कंकभट्ट

महाराजा, यदि आप नहीं चाहते कि सर्वनाश हो, तो इस कीचक को सँभालिये। नहीं तो, अधर्म सभीको जड़ से उखाड़ फेंकेगा।

[ऊपर के कोष्ठक में हुई ध्वनियों की द्विरुक्ति]

रत्नप्रभा

[कीचक के समक्ष घुटने टेककर और पैरों पड़कर]

मेरे राजा ! तनिक अपनी इस विवाहिता पत्नी की ओर तो देखिये ! आप यह कुल-विनाशक, अमानुषिक कृत्य न कीजिये ! राजा मेरे, भले ही आपकी श्रद्धा बीती हुई या होनेवाली पतिव्रताओं पर न हो, पर इस अपनी दासी रत्नप्रभा के लिये तो आपके विशाल हृदय में प्रेम ही प्रेम है; कम से कम घृणा तो रंच मात्र भी नहीं है। मेरे महाराजा, स्मरण तो कीजिये उन दिवसों को, जो आपने स्नेहपूर्वक मेरे साथ बिताए हैं; इस दासी की चाकरी को, जो उसने अनुदिन समर्पित की है और फिर उस अपनी अर्धांगिनी को उसके ही पातिव्रत धर्म के अर्थ यह भीख दीजिये कि आप किसी परायी स्त्री की मर्यादा.........

कीचक

जा, सैरन्ध्री, जा......इस समय मैं तुझे छोड़े देता हूँ। उठ, रत्नप्रभा, उठ ! तेरी यह विजय सौतिया डाह के कारण है, फिर भी......उठ, चल, उठ !

रत्नप्रभा

नहीं महाराजा, कदापि नहीं ! जब तक आप मुझे यह आश्वासन नहीं देते कि फिर कभी आप सैरन्ध्री के पीछे न पड़ेंगे, तब तक मैं नहीं उठ सकती !

कीचक

रत्नप्रभे, मैं तुझसे कितनी बार कह चुका ! पर, फिर भी तेरे मन में सौतिया डाह है ! मैं कहता हूँ, यह मेरी आनबान का प्रश्न है। अपनी मर्यादा रखने के लिये, अपना कहा सही कर दिखाने के लिये मैं जो चाहूँगा, सो करूँगा। उठ, चुपचाप उठ खड़ी हो ! आज इस सैरन्ध्री को मेरी निशा-विलासिनी बनना ही होगा !

रत्नप्रभा

मेरे महाराजा, यह हठधर्मी छोड़ दीजिये !

कीचक

उठ, चुपचाप उठ ! नहीं ? नहीं उठेगी ? अच्छा तो सैरन्ध्री, तू भूत और भविष्य की पतिव्रताओं की तो बात छोड़, अब वर्तमान पतिव्रताएँ भी तेरी रक्षा न कर सकेंगी। मेरे पैरों में पड़ी इस विवाह की शृङ्खला को इस प्रकार जड़ से तोड़कर सैरन्ध्री को अपकर्षित करने की शक्ति कीचक के इस बलिष्ठ शरीर में है !

[रत्नप्रभा को धक्के देकर कीचक सैरन्ध्री की ओर झपटता है। पुरुष वर्ग "यह कैसा अविचार, कैसा अत्याचार" कहकर उसे रोकता है। सुदेष्णा रत्नप्रभा को उठाती है। दोनों गिड़गिड़ाती है ....."यह पाप न कीजिये महाराजा"]

सैरन्ध्री

[सिंहासन के पीछे खड़ी होकर]

महाराजाजी, मैं आपके धर्म के सिंहासन की शरणागत हूँ। जैसी इस सिंहासन की मर्यादा है, वैसी ही मेरी भी है। आप दोनों की रक्षा करने में समर्थ हैं।

कीचक

राजा विराट, आपसे मुझे एक ही बात पूछना है। यदि आप चाहते हैं कि मेरे आपके सम्बन्ध बने रहें, तो इस सैरन्ध्री को आप मुझे इसी क्षण सौंप दें। यदि आप ऐसा नहीं करते, तो मैं यह मान लूंगा कि आपसे मेरे कोई सम्बन्ध नहीं रह गये। और तब सुनिये कि मैं आज की अर्धरात्रि अनुकीचकों को एकत्रित कर आपके सिंहासन को ध्वस्त करने में व्यतीत करूँगा। तथा इसी रात्रि के द्वितीयार्ध में सैरन्ध्री का पातिव्रत नष्ट करूँगा। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि जो सिंहासन मेरे बाहुबल पर स्थिर हुआ है, उसे उलट-पलट देने में मुझे तनिक देर न लगेगी ? मैं ठहरा हूँ कि सुनूं, आप क्या कहते हैं।

सैरन्ध्री

सोच-विचारकर उत्तर दीजिये, महाराजाधिराज ! यदि आप मुझे इस चाण्डाल

के हाथ सौंपते हैं, तो ध्यान रखें कि इस दुष्ट के शरीर के साथ ही साथ यह सिंहासन भी टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। मेरे सहायक यक्ष और गन्धर्व कीचक और अनुकीचकों के साथ ही उन सभीका संहार करेंगे कि जो इस पाप-कृत्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होंगे।

विराट

गुरुदेव, अरे पुरोहितजी! मैं सोचता हूँ कि इस पेंचदार स्थिति में मुझे धृतराष्ट्र का अनुकरण करना चाहिये।

गुरु और पुरोहित

[एक स्वर से]

इस समय वही करना ठीक होगा।

विराट

महाराजा कीचक, पाण्डवों के वन-गमन के पहले द्रौपदी-चीरहरण के प्रसंग पर महाराजा धृतराष्ट्र ने जो आदेश दिये थे, सो मै दे रहा हूँ। आशा है, सब लोग स्वीकार करेंगे।

कीचक

यदि आदेश उचित होंगे, तो पालन किया जायेगा।

विराट

जिस प्रकार धृतराष्ट्र ने कहा था कि द्रौपदी का चीरहरण भरे दरबार में न हो, वही हम कहते हैं कि सैरन्ध्री इस भरे दरबार में अनावृत न की जाये। जिस प्रकार धृतराष्ट्र को सुयोधन अत्यन्त प्रिय था, उसी प्रकार हमें कीचक प्रिय है। अतएव, हमारी इच्छा है कि हमारे सामने इस पाप-कर्म की ओर महाराजा कीचक प्रवृत्त न हों। फिर भी, हम यह नहीं चाहते कि एक साधारण दासी को लेकर हमारे और महाराजा कीचक के बीच में शत्रुता उत्पन्न हो जाये। इसलिये, हम सैरन्ध्री को नगर से

निष्कासित करते हैं। हमारे दूत जाकर इसे देवी के वन में स्थित भैरव मन्दिर में छोड़ आवेंगे। सैरन्ध्री, सुन, इस दरबार में मैंने तेरी मर्यादा रख ली, परन्तु समझ ले कि तेरी सरीखी दासी के अर्थ महाराजा कीचक से शत्रुता बिसाहना राजनीति की दृष्टि से अनुचित है। अतएव, वनवास में अब तू मुझ पर निर्भर नहीं रहना, वहाँ तू अपने यक्षों को पुकार लेना।

[पटाक्षेप]

चतुर्थांक समाप्त

पंचम अंक

दृश्य पहला

[वन का एक भाग। कंकभट्ट और वल्लभ का प्रवेश]

कंकभट्ट

अच्छा भीम, मैं लाचार होकर कीचक के वध की अनुमति अवश्य देता हूँ, परन्तु.........

वल्लभ

अब यह किन्तु-परन्तु क्यों ? मैं कीचक का काम तमाम कर आऊँगा, तो भी कदाचित आपका यह 'परन्तु' रहा ही आवेगा। मुझे कितनी प्रसन्नता है दादा कि कीचक को अकेले में समाप्त करने का अवसर मिल रहा है, और आप अब भी उदास हैं, उद्विग्न हैं !

कंकभट्ट

हाँ, हैं तो। क्या होगा ? कैसे होगा ? हमसे कोई पाप तो नहीं बन पड़ रहा है ? ज्ञानी ऋषियों द्वारा प्रदर्शित मार्ग से हम विचलित तो नहीं हो रहे हैं ? यही सोचकर मेरा चित्त उद्वेलित होता जा रहा है। इन सांसारिक उलझनों के बीच सोचता हूँ कि दुर्योधन ने द्यूत के परिणामस्वरूप मुझे आजन्म वनवास क्यों न दे दिया ?

वल्लभ

इस वसुन्धरा को दुर्बुद्धि दुर्योधन को सौंपकर वनवास में जीवन बिताने की भीरुता यदि आपके मन में है, तो कीचक को निर्जन में समाप्त करने की क्या आवश्यकता ?

फिर तो मैं सबके बीच किसी चौराहे पर ही उससे निपट लेता हूँ। इस प्रकार हम प्रकट हो जावेंगे और फिर वन में जा सकेंगे!

कंकभट्ट

इस प्रकार अपनी मूर्खता प्रदर्शित करते हुए हमें वन में नहीं जाना है भीम! मैं इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन पर इसलिये बैठना चाहता हूँ कि जो हम पाण्डवों में अपने वनवास-काल में धर्म-भावना जागृत हुई, उसीका आदर्श प्रजाजन के समक्ष उपस्थित कर सकूँ। यह सात्विक महत्वाकांक्षा केवल एक व्रत के साधने से सफल हो सकती है।

वल्लभ

कौन-से व्रत से?

कंकभट्ट

व्रत यही कि लोभ या क्रोध के वशीभूत होकर अधर्म की ओर प्रवृत्त न होना चाहिये।

वल्लभ

सायंकाल जो दरबार में नंगा नाच हुआ, उसे अपनी आँखों देखने के पश्चात् भी आप कीचक-वध को अधर्म मानते हैं? क्या आप अभी भी ऐसा सोच रहे हैं कि रत्नप्रभा की प्रार्थना सुदेष्णा का अनुनय, या विराट का भय कीचक को पापाकर्म से परावृत्त कर सकेगा? कीचक विराट से डरता है या विराट कीचक से भय खाता है, इस सम्बन्ध में क्या आपके मन में सन्देह ही बना हुआ है?

कंकभट्ट

जहाँ तक कीचक का सम्बन्ध है, मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि कीचक-वध अधर्म है। परन्तु.........

वल्लभ

फिर आ गया यह परन्तु! परन्तु......परन्तु......परन्तु!

कंकभट्ट

परन्तु भीम, बात यह है कि हम कई महीनों से राजा विराट के आश्रय में रह रहे हैं। कीचक के वध से मत्स्य देश की शक्ति यदि क्षीण हुई, तो हमने अपने आश्रय-दाता का क्या उपकार किया ?

वल्लभ

हमारी जो शक्ति कीचक को समाप्त करेगी, क्या वही राजा विराट और उसके मत्स्य देश की सहायक न होगी ? यह ठीक है कि यदि आज रात मैंने कीचक को मार डाला, तो त्रिगर्तों को मत्स्य देश का कोई भय न रह जायगा। हो सकता है, फिर त्रिगर्त और कौरव मिलकर मत्स्य देश पर चढ़ाई करें। उस समय उन्हें हम पाण्डव ही तो परास्त करेंगे। इस प्रकार हमसे उपकृत होकर राजा विराट कीचक को तो भूल ही जायगा।

कंकभट्ट

हाँ, ऐसा भी हो सकता है; परन्तु भीम, कीचक को बिना मारे ही यदि हम विराट का स्नेह सम्पादित कर सकें, तो अधिक अच्छा हो। यह कीचक कार्य-कुशल तो है ही, उद्धत भी है। ऐसे लोगों को ठीक करने का एक ही उपाय है। अधिकतर शक्ति का प्रदर्शन उनके समक्ष कर दिया जावे, तो यदि वे धर्म-भीरु हों, तो मार्ग पर आ जाते हैं। इसलिये, भीम, एक बार तुम अपनी प्रचण्ड शक्ति का परिचय उसे दे दो और पाण्डवों के पक्ष में सम्मिलित करने का प्रयत्न करो।

वल्लभ

मैं वह सब करूँगा, आप मुझे अब जाने दें। इस विवाद में पड़े रहने से भैरव के मन्दिर पहुँचने में देर हो जायगी।

कंकभट्ट

जाओ ! समस्त देवगण अपनी शक्ति तुम्हें प्रदान करें......परन्तु भीम, इस शक्ति के उपयोग से कीचक ठीक मार्ग पर आता हो, तो उसे मारना नहीं भैया।

वल्लभ

नहीं दादा, मैं अधर्म नहीं करूँगा।

[जाता है]

कंकभट्ट

हे ईश्वर ! कुछ ऐसा कर कि मल्ल-युद्ध में पराजित कर जब भीम प्राण-हरण करने के लिये कीचक के वक्ष पर स्थित हो, उस समय कीचक की मान-अपमान की भावना दूर हो जाय और वह पाण्डवों का पक्ष स्वीकार कर ले। इससे हमारा यह अज्ञात-वास हमें सुखकर और राजा विराट के लिये कीर्तिकर बन जावे।

[जाता है]

दृश्य दूसरा

[कीचक के महल का सामनेवाला आंगन। कीचक, चंचला और चपला का प्रवेश]

कीचक

चपला ! मेरा यह धनुष भीतर रख आ और यह तूणीर भी।

चपला

तो क्या, गदा ला दूं महाराज ?

कीचक

नहीं, उसकी भी आवश्यकता नहीं। और यह महाशंख भी नहीं चाहिये। इसे भी ले जा !

चपला

अस्त्र-शस्त्र नहीं, तो क्या कवच-कुण्डल ले आऊं ?

कीचक

नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये; तू जा !

[चपला जाती है]

चंचला ! यह कृपाण भी रख दे। मैं इसे भी नहीं ले जाऊंगा। तनिक पता तो लगा कि अभी तक सारथी रथ लेकर क्यों नहीं आया ? मैं कब से प्रतीक्षा कर रहा हूं।

[चंचला जाने लगती है]

चंचला ! तनिक सुन । प्रहरियों से पहले यह पता तो लगा कि सैरन्ध्री भैरव के मन्दिर में पहुँचा दी गई कि नहीं ?

चंचला

जब आप महल में थे, तभी तो प्रहरी ने सैरन्ध्री को वन में पहुँचा देने का समाचार दिया था और तभी तो महाराजा ने सारथी को रथ ले आने का आदेश दिया था।

कीचक

अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया था। मैं सोच रहा था कि भैरव के मन्दिर में सैरन्ध्री को अपने आलिंगन में कब बाँध पाता हूँ और बस भूल गया ! तो फिर, अब तू रथ का पता लगा।

[चंचला जाने लगती है]

और चंचला, तनिक सुन, पर्यंक पर दो हार रखे होंगे, एक मेरे लिये एक और तेरी स्वामिनी के लिये, सो लेती आना।

चंचला

जो आज्ञा।

[कुछ दूर जाकर और फिर लौटकर]

परन्तु, इसी बीच यदि वहाँ महारानी आ गईं, तो महाराजा ? और यदि उन्होंने मुझे हार ले जाने से रोका, तो महाराजा ?

कीचक

तूने तबियत ही मनहूस पाई है, चंचला ! यदि ऐसा हुआ, तो कैसा होगा ? और वैसा हुआ, तो कैसा होगा; यही सोचती-रोती रहती है ! अरी जा, चुपचाप हार उठा ला।

[चंचला जाती है]

सैरन्ध्री से मिलने जा रहा हूं, तो पागल की भांति शस्त्रास्त्र बाँधकर क्या करूँगा ! यदि एकान्त की सुविधा हो, तो सैरन्ध्री सरीखी मानिनी नायिका का मेरे समान प्रतापवान् पुरुष के साथ फूलों के बन्धनों में बँधना ही शोभा देता है।

[चंचला लौटती है]

क्यों, अधबीच से ही लौट आई न ? बड़ी असगुनी है। कोई भी काम दो, बिना मुँह बनाए या बिना मीन-मेख निकाले यह छोकरी रह ही नहीं सकती ! अब क्या रोना लेकर आई है ? बोल !

चंचला

मेरी शंका व्यर्थ नहीं थी महाराजा ! वह देखिये, रानी रत्नप्रभा यहीं आ रही हैं। तब मैं हार कैसे लाती ?

कीचक

मनहूस, सो मनहूस ! इसके मन में उत्साह नामक वस्तु तो तनिक भी नहीं है ! चंचला, यदि वह इधर आ रही है, तो तेरा काम और सहज हो गया ! जा और हार उठाकर सीधे रथ में रख आ ! समझी ? जा, अब मुंह मत बना !

चंचला

पर वे आपको कहीं जाने कैसे देंगी ?

कीचक

मुझे इस सबसे क्या करना है ? तू एकदम जा ! बड़ी असगुनी है यह छोकरी !

[चंचला का प्रस्थान और रत्नप्रभा का आगमन]

रत्नप्रभा

आप जिस काम के लिये जा रहे हैं, मैं कैसे कहूँ कि वह बुरा है ! मुझमें इतनी योग्यता नहीं कि महाराजा के दोष बताऊँ ! परन्तु ....

[कीचक से लिपटकर]

राजा मेरे, आपके पूर्वज सर्व सद्‌गुण-सम्पन्न और सब प्रकार से धर्मवान् थे। उनके यश की ध्वजाएँ मत्स्य देश में फहरा रही हैं। यदि यह दासी उनकी धवल कीर्ति का स्मरण आपको करावे, तो आपको कोई कष्ट तो नहीं होगा? स्वयं प्राणनाथ का चरित्र आज तक कैसा निष्कलंक है! प्रार्थना है कि आप अपनी पापपूर्ण हठधर्मी को पकड़े रहकर कीचकानुकीचकों के कुल को कलंकित न कीजिये और अपने विख्यात वंश के सर्वनाश की ओर प्रवृत्त न हूजिये!

कीचक

[अपने आपको छुड़ाकर]

यह मेरा दुर्भाग्य है कि तू यह नहीं सोच पाती कि तेरे पति की मानापमान की क्या कल्पना है! स्त्रियों के लिये केवल यह पर्याप्त नहीं है कि वे सुन्दरी और स्नेहमयी हों। उनमें यह बुद्धि होना चाहिये कि वे पति की दृष्टि से सारी समस्याएँ समझ सकें। यदि उनमें यह बुद्धि न रहे, तो प्रतापी और महत्वाकांक्षी पुरुषों की गृहस्थियाँ दुःखपूर्ण हो जाती हैं। विद्वानों द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धान्त रत्नप्रभा अपने वर्तन से सिद्ध कर रही है।

रत्नप्रभा

मैं बुद्धिशून्य ही सही महाराजा! पर आपकी संगति में पावन हो गई। इसलिये, श्रीचरणों में विनती कर रही हूँ। अपनी भुजाओं से कैलाश पर्वत को कम्पित करनेवाला, अपने पराक्रम से असंख्य देवताओं को बन्धन में डाल उनसे झाड़-बुहार का काम लेनेवाला, चौदह भुवनों का वह महाराजाधिराजा रावण अन्त में अपने गौरव और सम्मान की झूठी कल्पनाओं का शिकार हुआ। जिसे वह क्षुद्र मानव समझता था, उसकी स्त्री का उसने हरण किया। मन्दोदरी की अपेक्षा क्या उसे सीता अधिक सुन्दरी लगी थी? यह बात नहीं है। सीता को लंका में लाकर भी रावण का प्रेम पतिव्रता मन्दोदरी के प्रति कम नहीं हुआ था। परन्तु, सीता को बन्दिनी बनाने में एक प्रकार के गौरव का अनुभव होता था उसे। तो, उसने सीता को न छोड़ा। और इसी हठधर्मी के कारण उसने श्रीराम से युद्ध किया। मैं ज्ञान-विहीन हूँ, महाराजा। मुझमें यह योग्यता भी नहीं कि इन चरणों

में अपनी विनती कर सकूं। फिर भी, आपके निष्कपट प्रेम के कारण ही यह साहस कर रही हूँ। अभी-अभी मैं राम-कथा का वह प्रसंग पढ़ रही थी कि जब युद्ध के मैदान में जाने के पूर्व मन्दोदरी ने रावण से सीता को मुक्त करने की प्रार्थना की थी। आप कुछ देर यहीं खड़े रहें, पोथी लाकर मैं वह विनती आपको पढ़कर सुनाऊँगी। यदि आप उसे सुनेंगे, तो मुझे भरोसा है कि प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।

कीचक

अच्छा जा, जितनी पोथी-पुस्तकें हों, वे सब ले आ। उनके पन्ने पलटकर मैं सिद्ध कर दूंगा कि कीचक रावण से कुछ अधिक ही है और यह सैरन्ध्री भी सीता के चरण की धूलि की बराबरी भी नहीं कर सकती। जा! सब पोथी ले आ। एक भी न छोड़ना। कम से कम इससे एक ही बार में सारी भुन-भुन समाप्त तो हो जायगी।

[रत्नप्रभा जाती है]

पगली रत्नप्रभा। मन्दोदरी के जिस उपदेश का प्रभाव उस रावण तक पर नहीं हुआ कि जो प्रतिक्षण अपने विचार बदलता था, निश्चय पलटता था, और इसलिये लोग दशमुख कहकर जिसे चिढ़ाते थे, तब उस उपदेश से यह दृढ़ निश्चयी कीचक कैसे प्रभावित हो सकेगा? पगली, सचमुच बिलकुल पगली। आकाश में स्थित देवतागण मनुष्य के दोषों पर बैठे-बैठे हँसा करते हैं। उनके ये लोचन, चमचमाने वाले तारे, रत्नप्रभा के पागलपन का कैसा उपहास कर रहे है।

[चंचला का प्रवेश]

चंचला

हार रथ में रख दिये हैं, महाराजा। सारथी ने रथ भी तैयार कर लिया है।

कीचक

उस समय तूने मेरे काम में असगुन किया था, परन्तु इस बार रत्नप्रभा के काम ने। ले, ये उपहार ले ले।

[हार देता है]

तेरी स्वामिनी के आने के पूर्व ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा। जब वह यहाँ आवे, तो उससे कह देना कि पोथी-पुस्तकों में उलझकर कोई बात सिद्ध करने की अपेक्षा मैं अपनी कृति से ही उसे सिद्ध करना अच्छा समझता हूं। पहर-दोपहर में मैं ही सैरन्ध्री-हरण करके आता हूँ। चल, मुझे रथ तक ले चल।

चंचला

इस ओर से आइये महाराजा।

[जाते है]

दृश्य तीसरा

[देवी के मन्दिर में भैरव का मन्दिर । सैरन्ध्री मूर्छित पड़ी है]

सैरन्ध्री

[होश में आकर]

मुझे यहाँ अकेली छोड़कर कदाचित् चले गये सारे चांडाल। पता नहीं, मैं कितनी देर बेसुध रही। भैरव के सिवाय इस मन्दिर में और तो कोई नहीं है । इन्द्रप्रस्थ की रानी द्रौपदी की यह क्या दशा है ! कौरवों के दरबार में दुष्ट दु:शासन ने मेरी मर्यादा भंग करने का प्रयत्न किया। महाराजाधिराज धृतराष्ट्र ने उस समय जब मुझे वनवास दिया था, तब मैं अकेली न थी। आज महाराजा विराट ने मेरे अंचल को खींचनेवाले कीचक को रोक तो लिया, परन्तु मुझे वन में अकेली छोड़ दिया और जैसे कीचक के शिकार खेलने का प्रबन्ध ही कर दिया। जब विराट के दूत मुझे वन की ओर ला रहे थे, तब मैंने चीख-पुकार इसलिये नहीं की कि मन में यह भरोसा था कि जरासंध, बकासुर आदि दानवों की जीवन-लीला समाप्त करनेवाले भीम इस वन में आये बिना नहीं रहेंगे। अरे, यह किसके पैरों की आहट पास आती जा रही है! कहीं वह चाण्डाल कीचक तो नहीं है !

[उठकर सुनती है]

उँहूँ, उस चाण्डाल के पैरों की ऐसी धमक नहीं हो सकती। पृथ्वी को कम्पित करनेवाला यह चरणपात मेरे प्राणनाथ का ही है, जो कि वीर रस की साक्षात् मूर्ति हैं। अरे ! आहट कुछ उस ओर जा रही है। कहीं मार्ग न भूल जावें। पुकारना चाहिये। प्राणनाथ, संसार के सभी योद्धाओं में श्रेष्ठ, गदाधारियों में सिरमौर, वीरों के वीर, युद्ध के प्रांगण में साक्षात भैरव, मेरे प्रियतम.........

[गले में माला पहने हुए कीचक प्रवेश करता है]

कीचक

[माला पहनाता हुआ]

स्नेह का यह उपहार.........

सैरन्ध्री

[माला फेंककर]

राक्षस, तू अभी तक जहाँ छिपा बैठा था, वहीं जा बैठ ! तुझे उन चरणों की आहट नहीं सुनाई देती ? उन्हींकी तो है, जो तुझ सरीखे पापियों का संहार करने के लिये अवतरित हुए हैं, मेरे प्राणनाथ !

कीचक

इस वीर के सिवाय अब दूसरा कौन है प्राणनाथ ? स्त्रियों के बीच यक्षों और गंधर्वों की कथाएँ गढ़कर तूने सुदेष्णा और रत्नप्रभा को भयभीत कर दिया। उस समय तेरी सूझ काम कर गई। परन्तु, अब भैरव को साक्षी बनाकर... और साक्षी ही क्यों......एक साधारण सेवक समझकर जैसे कि ताम्बूल-वाहक या शय्या-साधक.........

सैरन्ध्री

देवगणों की ऐसी भर्त्सना करता है दुष्ट !

कीचक

मुझसे श्रेष्ठ और कौन है इस संसार में ? पहले मैं बाद में कोई देव या भैरव। क्योंकि देवों का देव, भैरवों का भैरव और राजाओं का राजा मैं ही तो हूँ। संसार की समस्त सुन्दरियाँ मेरी विलास-सामग्रियाँ हैं। अतएव, मेरे वक्ष पर झूलती हुई यह जयमाल; आदेश दे कि मैं तुझे पहना दूं।

[हार उतारकर पहनाने लगता है]

सैरन्ध्री

[झटका देकर]

दूर हट चाण्डाल ! तेरा समय क्या निकट आन पहुँचा ? क्यों काल के गाल में टपक पड़ना चाहता है !

कीचक

[उसका हाथ पकड़कर]

अब तेरी नहीं चलेगी। तू चाहे न चाहे, मैं अब तुझे उठाकर रथ में रखे लेता हूं, और लिये चलता हूँ अपने विलास-मन्दिर की ओर।

[खींचता है]

सैरन्ध्री

प्राणनाथ ! आइये, दौड़िये, यह नीच कीचक द्रौपदी की मर्यादा को........

[अपने आपको छुड़ाती है]

कीचक

अरे, क्या तू द्रौपदी है ? चलो अच्छा ही है। जो बात सुयोधन नहीं कर पाया, मैं पूरा किये देता हूँ। कौरव-पाण्डव के युद्ध के बाद तो तू मेरे रंगमहल की विलासिनी होनेवाली थी, सो अभी हुई जाती है। वही तो मैं कहूँ कि इसे कुलवती होना चहिए; क्योंकि धनुर्धारी कीचक का मन किसी साधारण सैरन्ध्री पर आकर्षित ही कैसे होता !

सैरन्ध्री

प्राणनाथ, अभी तक नहीं आये !

कीचक

अब मैं समझा कि कौन हैं ये तेरे यक्ष और गन्धर्व। और तेरे केश मुक्त क्यों लहराते रहते हैं। अब यह भूल जा द्रौपदी, कि कभी भीम तेरी वेणी को दुःशासन

के रक्त से रँगे हुए हाथों से गूँथ पावेगा। अब मुझे गूँथने दे ये तेरे केश, मेरी विलासिनी !

सैरन्ध्री

दौड़िये, महाराजा भीम, दौड़िये।

कीचक

विधाता ने मेरे ललाटपट्ट पर और तेरे भाल पर यह स्पष्ट अंकित किया है कि तू मेरी विलासिनी बन कर रहेगी। प्रसन्नतापूर्वक मेरी प्रेयसी हो जा और फिर मेरा पराक्रम देख ! तेरे स्वयंवर में अनुपस्थित रहने की भूल सुधारने के लिये मैं सबेरे ही मत्स्य देश में छिपकर रहनेवाले पाँचों पाण्डवों के मस्तक अपनी प्रेयसी के चरणों में अर्पित करूँगा।

सैरन्ध्री

राक्षस, सुन ! यह द्रौपदी इस मन्दिर से अब तभी बाहर जायगी, जबकि वह तेरा मस्तक भैरव के चरणों में चढ़ा देख लेगी।

[भैरव के पास जाकर]

भैरव देव ! इस पापी का बलिदान लेकर इस दीन गाय की रक्षा कीजिये !

कीचक

इस भैरव में क्या शक्ति है द्रौपदी, कि वह तेरी रक्षा कर सके ! मेरा पराक्रम देखना ही है प्रेयसी, तो आदेश दो...... मैं बाएँ हाथ से इसकी चोटी पकड़कर, दाहिने हाथ से ऐसा मुष्टिका-प्रहार करता हूँ कि धड़ चूर-चूर हो जावे और भैरव का निराधार मस्तक तेरे चरणों में लोट जावे !

सैरन्ध्री

नराधम, नीच, पापी चाण्डाल ......

कीचक

ये गालियाँ किसे दे रही है ? मुँह सँभालकर बातें कर, नहीं तो.........

सैरन्ध्री

[भैरव के पार्श्व में खड़ी होकर]

नहीं तो क्या रे ? यदि इस स्थान पर कोई न आवे, तो भी मैं तुझे दण्ड दे सकूंगी।

कीचक

[भैरव की मूर्ति के दूसरी ओर आकर]

सीधे-सीधे मेरा कहना मान ले द्रौपदी !

सैरन्ध्री

दौड़िये प्राणनाथ, दौड़िये !

कीचक

पुकार, जी भरकर पुकार। अर्जुन को पुकार, भीम को पुकार। अब वह समय आ गया है कि पाण्डवों के अभिमान के साथ तेरा पातिव्रत का पाखण्ड समाप्त हो जावेगा।

सैरन्ध्री

दौड़िये महाराजा भीम, दौड़िये।

कीचक

द्रौपदी, सुन ! यदि इस समय वह अर्जुन, जिसने मत्स्यभेद किया और तप करके भगवान् शंकर से अस्त्र-विद्या सीखी, वह सव्यसाची भी इस क्षण उपस्थित हो जाय, तो मैं अपने चरण-प्रहार से उसके प्राण हर लूंगा और उसके तूणीर को विलास-शैया

का उपधान बना डालूंगा। सहस्र नागों की शक्ति समेटकर चलनेवाला, वह तेरा प्यारा भीम यदि यहाँ उपस्थित हो जाय, तो उस घमण्डी के रक्त से भींजे हुए अपने हाथों से तेरी चोली के बन्धन शिथिल करूंगा। अपनी उद्दाम शक्ति का परिचय कराने के लिये, देख, मैं एक ही घूंसे से इस पाषाण को चूर-चूर किये देता हूँ।

[कीचक अपना घूंसा भैरव के वक्ष के पास तानता है। उसी समय भैरव एक हाथ से कीचक की कलाई और दूसरे हाथ से उसकी गर्दन पकड़कर उसे आगे खींचता हुआ लाता है]

भीम

क्षुद्र कीचक ! साहस हो तो इस ओर देख ! जिसे वल्लभ कहकर पुकारते हैं, वह मैं ही हूँ और जिसे भीम कहते हैं, वह भी मैं ही हूँ। तेरे गले की हड्डियों का कचूमर बनाने के लिए मैं तैयार हूँ। फिर से तो बोल ! वे तेरी कौन-कौन-सी प्रतिज्ञाएँ हैं ? एक शब्द तेरे मुँह से निकला कि मैंने तुझे यमराज के घर भेजा।

कीचक

[अपने आपको छुड़ाकर]

चाहे तू भैरव हो ! चाहे भीम ! मैं तुझसे मल्लयुद्ध करने के लिये कटिबद्ध हूँ। यदि तू भीम है, तो मल्लयुद्ध में मैं तुझे पराजित करूंगा और पद-प्रहार से तेरे वक्ष पर आघात करूंगा। उस समय जब रक्त का निर्झर फूट पड़ेगा, तब मैं अपने रंजित हाथों से द्रौपदी के केश गूथूंगा और लोचनों के मार्ग से बहिर्गत होनेवाले तेरे प्राणों को बाध्य करूंगा कि वे तेरी प्रतिज्ञा को इस प्रकार पूरी करनेवाले कीचक की ओर अन्तिम बार निहारें।

[भीम कीचक का हाथ खींचकर उसे नीचे गिराता है और उसकी छाती पर बैठ जाता है]

भीम

क्षुद्र रासभ ! क्या तू मेरी बराबरी का है, जो तुझसे युद्ध करूँ। एक ठूंसा जमाता हूँ तेरी छाती पर और फेंके देता हूँ तुझे गीधों के सामने। एक बात सुन ले। महाराजाधिराज विराट और तेरी पत्नी रत्नप्रभा का संकोच पालने के लिए, धर्मराज

ने मुझे आज्ञा दी है कि यदि तूहमारी ये बातें मान जाव, ता तुझे प्राणदान दे दूं। वनवास के समय नीच जयद्रथ ने द्रौपदी के साथ बलात्कार करने का प्रयत्न किया था, उस समय उसका सिर मुंड़वाकर, गधे पर बैठाकर और उसके मुंह से "द्रौपदी का दास हूं" कहलवाकर उसे छोड़ा गया था। यदि तू महाराजा विराट के दरबार में यह कहने को तैयार है कि द्रौपदी के सहायक यक्षों और गन्धर्वों ने तेरी यह दशा की और यदि पाण्डवों के अज्ञात-वास की बात गुप्त रखना तुझे स्वीकार है, तो विराट के नाम पर और रत्नप्रभा के नाम पर धर्मराज के आदेश से मैं तुझे जीवन-दान दे सकता हूं।

द्रौपदी

कीचक, तू लज्जित न हो कि तेरे प्राणों की रक्षा तेरी पत्नी के सद्गुणों के कारण हो रही है। रत्नप्रभा के अर्थ तुझे जीवन-दान देने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं है।

कीचक

द्रौपदी का दास होकर जीवन बिताने की अपेक्षा युद्ध श्रेयस्कर है। युद्ध के पश्चात् जीवित रहा तो द्रौपदी को अपने विलास महल में रख पाऊँगा।

भीम

अब आपका विलास महल गीधों की बस्ती में।

कीचक

सच्चा क्षत्रिय हो, तो गदा युद्ध.........

भीम

अब गदायुद्ध ? कैसा गदायुद्ध ! जिस मच्छर के प्राण चुटकी बजाकर समाप्त किए जा सकें, उसके लिए कौन अब गदा ढूंढ़कर लावे। जीवन का मोह मरने पर ही छूटता है। अच्छा द्रौपदी, कीचक-बध के सिवाय पाण्डवों के हित में अन्य साधन शेष नहीं। अतएव, मैं अब इसे यमलोक पठाता हूं।

[छाती पर घूंसे मारता है। कीचक की मृत्यु]

चलो द्रौपदी नगर की ओर। वहाँ धर्मराज के दर्शन करें और आगे की योजना निश्चित करें।

द्रौपदी

परन्तु प्राणनाथ, आप यहाँ कब आये ? यह तो बताइये।

भीम

धर्मराज की अन्तिम आज्ञा सुनकर मैं वन की ओर चला आया। मैंने वन में भैरव का रूप इसलिये धारण कर लिया कि यदि कोई भूल से मुझे देख भी ले, तो उसे यही प्रतीत हो कि कीचक का संहार दैवी शक्ति द्वारा हुआ। इसी बीच रथ पर किरीटादि रखकर कीचक को रीते हाथ वन में प्रवेश करते देखा। तुम उस समय मन्दिर में बेसुध पड़ी थीं। मैं आया, भैरव की मूर्ति को उठाकर मैंने भीतर रख दिया और देवमूर्ति के स्थान पर मैं निस्पन्द खड़ा रहा। सुनता रहा कीचक की बातें और कसता रहा कसौटी पर कि यह पात्र प्राण-दान के योग्य है कि प्राण-हरण के ?

[भैरव की मूर्ति पुनः स्थापित करता है]

भैरव देव को प्रणाम करो द्रौपदी, यह विभूति मस्तक पर धारण करो।

[दोनों यही करते हैं]

चलो, अब धर्मराज को सब समाचार सुनावें।

स मा प्त